सुप्रभात
रांची, मंगलवार
18.06.2024
* * नगर संस्करण । पेज : 12

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

रांची और धनबाद से एक साथ प्रकाशित   सबकी बात सबके साथ

khabarmantra.net जेष्ठ, शुक्ल पक्ष, द्वादशी, संवत् 2081   मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 11 । अंक : 334

12 कई लोगों को मुझसे शिकायत हैं : स्वरा भास्कर

न्यूज डायरी

बोकारो में झड़पः पुलिस ने स्थिति को संभाला

बोकारो। एक हादसे में दो मवेशी की मौत के बाद अलग-अलग पक्षों से जुड़े लोग आमने-सामने हो गये और फिर पथराव होने लगी। झड़प और पथराव में एक दर्जन से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। पत्थरबाजी में कई पुलिस वाले भी चोटिल हुए हैं। स्थिति को नियंत्रण में करने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले दागने पड़े। स्थिति अब पूरी तरह नियंत्रण में है। जानकारी के अनुसार अवैध बिजली कनेक्शन को काट कर बिजली की तार में फंसी भैंसों को निकालने की कोशिश की जा रही थी। इसी बीच हंगामा शुरू हो गया। आपसी विवाद और बहस के बाद पथराव हुए और दोनों ओर से जमकर पत्थरबाजी की गयी। भर्रा बस्ती और सेक्टर वन को पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया गया है।

रियासी आंतकवादी हमले की जांच एनआइए करेगी

जम्मू। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू कश्मीर में पिछले सप्ताह रियासी जिले में आतंकवादियों के हमले की जांच का दायित्व राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) को दिया है। गत नौ जून को जम्मू क्षेत्र के रियासी जिले में आतंकवादियों ने तीर्थयात्रियों की एक बस पर हमला किया था जिससे बस गहरे खड्ड में पलट गयी थी। इस घटना में 10 लोग मारे गए तथा 30 से अधिक लोग घायल हो गये थे।

ईदगाहों, मस्जिदों में अदा की गयी नमाज

रांची। रांची में ईद उल अजहा (बकरीद) के अवसर पर सोमवार को ईदगाहों, मस्जिदों में नमाज अदा की गयी। नमाज अदा कर देश और राज्य की खुशहाली, समृद्धि और अमन-चैन के लिए अल्लाह से दुआ की गयी। नमाज अदा करने के बाद सभी ने एक दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। बकरीद को देखते हुए रांची पुलिस भी पूरी तरह से सतर्क थी।

मोदी आज से यूपी और बिहार के दौरे पर

नयी दिल्ली। पीएम मोदी मंगलवार और बुधवार को उत्तर प्रदेश तथा बिहार के दो दिवसीय दौरे पर होंगे। यह जानकारी प्रधानमंत्री कार्यालय की सोमवार को जारी एक विज्ञप्ति में दी।

रांची से देवघर तक बनेगा हॉली टूरिस्ट कॉरिडोर

गिरिडीह। धार्मिक स्थलों को जोड़ने वाले रांची से देवघर हॉली टूरिस्ट कॉरिडोर को सैद्धांतिक सहमति मिल गयी है। रांची से ओरमांझी, गोला, रजरप्पा, लुगुबुरू पहाड़ी, डुमरी, मधुबन मोड़, बुढ़ई होते हुए देवघर तक 201 किमी का यह कॉरिडोर बनेगा। इस कॉरिडोर में रजरप्पा, लुगुबुरू, पारसनाथ व देवघर जैसे धार्मिक स्थल जुड़ सकेंगे। 201 किलोमीटर में करीब 31 किमी की सड़क बनी हुई है। शेष 170 किमी की सीएम ने हरी झंडी दिखा दी है। सोमवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए विधायक सुदिव्य कुमार सोनू ने ने यह 1020 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है।

गहना आभूषण

सोना (बिक्री)	67600 रु./10 ग्राम
चांदी	95000 रु./प्रति किलो

बंगाल में बड़ा ट्रेन हादसा, 15 की मौत

कंचनजंगा को मालगाड़ी ने मारी टक्कर 60 से अधिक घायल

रेल मंत्री घटनास्थल पर पीड़ितों से मिले मुआवजे की घोषणा

एजेंसी

सिलीगुड़ी। पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में सोमवार की सुबह 8.45 बजे एक बड़े ट्रेन हादसे में 15 से अधिक यात्रियों की मौत हो गयी। 60 से अधिक लोग घायल है। सिलिगुड़ी के फांसीदेवा ब्लॉक के घोषपुकुर इलाके में कोलकाता जा रही अगरतला-सियालदह कंचनजंघा एक्सप्रेस को एक मालगाड़ी ने उसी पटरी पर आ कर पीछे से टक्कर मार दी। अभी तक की जानकारी के मुताबिक 15 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 60 से अधिक घायल हैं। हताहतों की संख्या में इजाफा की आशंका है। प्राथमिक सूचना के अनुसार मालगाड़ी के ड्राइवर ने सिग्नल की अनदेखी की। मृतकों में मालगाड़ी के चालक, उपचालक और ट्रेन का गार्ड भी शामिल है। पूरे देश में हादसे पर शोक है। कुछ यात्रियों के अनुसार तीन-चार टक्करों की आवाजें सुनीं।

टक्कर इतना जोरदार था कि कंचनजंगा एक्सप्रेस ट्रेन का वैगन हवा में लटक गया। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घटना स्थल पर पहुंच कर घायलों और मृतकों के परिजनों से भेंट की। उन्होंने कहा कि रेस्क्यू ऑपरेशन ऑपरेशन पूरा हो चुका है। वहीं बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने इस हादसे के लिए केंद्र सरकार को जिम्मेदार ठहराया है।

अनुग्रह राशि की घोषणा : पीएम मोदी, राहुल गांधी समेत तमाम नेताओं ने इस हादसे पर शोक जताया है। रेल मंत्री ने घटनास्थल पर ही हादसे में मारे गये लोगों के परिजनों को 10-10 लाख रुपये, गंभीर रूप से घायल लोगों को ढाई-ढाई लाख रुपये और मामूली रूप से घायल लोगों को 50-50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है।

उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा, पीड़ितों को बढ़ी हुई अनुग्रह राशि प्रदान की जायेगी। वहीं पीएम मोदी ने प्रत्येक मृतक के परिजनों को पीएमएनआरएफ से 2 लाख रुपये और प्रत्येक घायल को 50,000 रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है।

दो चालक और एक गार्ड की भी मौत

रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष एवं सीइओ जया वर्मा सिन्हा ने कहा कि मालगाड़ी के चालक और सहायक चालक तथा कंचनजंगा एक्सप्रेस ट्रेन के गार्ड की इस दुर्घटना में मौत हो गयी। वहीं कटिहार मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) कटिहार के अनुसार 15 लोगों के हताहत होने की खबर है, जबकि दर्जनों के घायल होने की खबर है। घटनास्थल पर लगातार बारिश के कारण राहत कार्य कुछ धीमा रहा। घायलों को सिलीगुड़ी के नॉर्थ बंगाल मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल ले जाया गया है।

बाइक से पहुंचे रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव

जिस जगह ट्रेन हादसा हुआ, वहां तक पहुंचने के लिए रेल मंत्री को बाइक का सहारा लेना पड़ा। दरअसल, घटनास्थल तक जाने के लिए संकरे रास्ते से गुजरना पड़ा। कुछ लोगों ने उन्हें सलाह दी कि वह किसी दूसरे रास्ते से जा सकते हैं, लेकिन उसमें अधिक समय लगेगा, लेकिन रेल मंत्री नहीं माने। अश्विनी वैष्णव ने कहा कि वह बाइक से ही घटना स्थल पर पहुंचेंगे। इसके बाद वह एक बाइक सवार के पीछे हो चले, तब जाकर वह घटना स्थल तक पहुंच सके। उन्होंने कहा कि वह खुद घायलों से मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह घटना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।

चुनावी मोड में भाजपाः चार चुनावी राज्यों के प्रभारी नियुक्त

झारखंड का जिम्मा शिवराज व हिमंता को

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा केंद्रीय नेतृत्व ने तैयारी शुरू कर दी है। इसी क्रम में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने आगामी चार राज्यों झारखंड, महाराष्ट्र, हरियाणा और जम्मू कश्मीर में होने वाले विधानसभा चुनाव को देखते हुए प्रदेश चुनाव प्रभारी और सह प्रभारियों की नियुक्ति की है। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान को झारखंड प्रदेश चुनाव प्रभारी बनाया गया है। वहीं असम के मुख्यमंत्री हिमंता विश्व सरमा को सह प्रभारी बनाया गया है। इस बाबत पार्टी ने पत्र जारी कर दिया है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने इसका स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि शिवराज सिंह चौहान एवं हेमंत विश्व शरमा जी के कुशल मार्गदर्शन में प्रदेश में बनेगी मजबूत डबल इंजन सरकार।

भूपेंद्र यादव महाराष्ट्र के प्रभारी : केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव को महाराष्ट्र का चुनाव प्रभारी और अश्विनी वैष्णव को सह प्रभारी बनाया गया है। हरियाणा का चुनाव प्रभारी केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को बनाया है, जबकि सह प्रभारी सांसद और पूर्व मुख्यमंक्षी बिप्लब कुमार देव होंगे। जम्मू कश्मीर का चुनाव प्रभारी केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी को बनाय गया है। इन चारों राज्यों में इस साल के अंत में चुनाव होने हैं। फिलहाल दो राज्यों में भाजपा की सरकार है। पिछले चुनाव में झारखंड में भाजपा को हार मिली थी।

(शेष पेज 11 पर)

कोल्हान में नक्सलियों से मुठभेड़ में पुलिस को बड़ी सफलता

10 व 5 लाख के दो नक्सली समेत पांच ढेर

- दो गिरफ्तार, सुरक्षाबलों को कोई क्षति नहीं
- कई नक्सलियों के जखमी होने की भी खबर

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची, चाईबासा। कोल्हान के जंगलों में नक्सलियों के खिलाफ सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता मिली है। गुवा थाना क्षेत्र के जंगल में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच सोमवार सुबह से शुरू हुई मुठभेड़ में सुरक्षा बलों ने 10 लाख के इनामी जोनल कमांडर सिंगराई उर्फ मनोज, पांच लाख के सबजोनल कमांडर कांडे होनहागा उर्फ दिरशुम और 2 लाख के इनामी एरिया कमांडर सूर्या उर्फ मुंडा देवगम तथा महिला नक्सली कैडर जुनगा पुर्ति उर्फ मारला समेत पांच को ` मार गिराया। एसपी आशुतोष शेखर को मिली एक गुप्त सूचना पर नक्सलियों के साथ सुरक्षा बलों की ये मुठभेड़ गुवा थाना क्षेत्र के लिपुंगा में हुई। एसपी ने घटना की पुष्टि की है। मुठभेड़ स्थल से नक्सलियों के शवों के पास से हथियार और अन्य नक्सली सामग्री बरामद हुई है। कुछ अन्य नक्सलियों को गोली लगने की भी सूचना है। सुरक्षाबलों को किसी प्रकार का नुकसान नहीं हुआ है।

ऐसे हुई मुठभेड़ : जानकारी के मुताबिक गुप्त सूचना के बाद इलाके में सुरक्षा बल सर्च ऑपरेशन चला रहे थे। आपरेशन में सीआरपीएफ, झारखंड पुलिस और झारखंड जगुआर के जवान शामिल थे। सुरक्षाबलों को देखते ही नक्सलियों ने फायरिंग शुरू कर दी। सुरक्षाबलों ने भी जवाबी कार्रवाई में फायरिंग की। दोनों तरफ से हुई गोलीबारी में पांच नक्सली मारे गये।

(शेष पेज 11 पर)

हथियार डालें, या मरने को तैयार रहें

वहीं आइजी ऑपरेशन एवी होमकर ने कहा कि नक्सली सरेंडर करें नहीं तो वे मारे जायेगें। उन्होंने कहा है कि जिले के गुवा थाना क्षेत्र स्थित जंगल में सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच सोमवार की सुबह-सुबह मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ में नक्सलियों को भारी नुकसान हुआ है। उन्होंने बताया कि सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में 4 नक्सलियों को मार गिराया है।

नयी लोकसभा की पहली बैठक 24 से, 26 को अध्यक्ष का चयन

स्पीकर पद खुद रखेगी भाजपा, डिप्टी स्पीकर सहयोगियों को

एजेंसी

नयी दिल्ली। अठारहवीं लोकसभा की पहली बैठक 24 जून से होगी और सत्र तीन जुलाई को समाप्त होगा। 26 जून को होगा लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव होगा। सत्र के पहले दो दिन नवनिर्वाचित सदस्यों का शपथ ग्रहण होगा। इसके बाद 27 को राष्ट्रपति लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करेंगी। केंद्र में सरकार बनाने के बाद एनडीए में स्पीकर पद को लेकर खींचतान है। जदयू और टीडीपी स्पीकर पद की रेस में हैं। तीसरी बार सत्ता संभालने के बाद बाद भाजपा ने साफ कर दिया है कि लोकसभा में स्पीकर भाजपा का ही होगा। वहीं डिप्टी स्पीकर पद एनडीए के सहयोगियों को देने को राजी है। भाजपा ने साफ कर दिया है इस मामले में वो समझौता नहीं करेगी। पार्टी ने वरिष्ठ नेता और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को विपक्ष समेत सभी दलों से बात कर आम सहमति बनाने की जिम्मेदारी सौंपी है। किसी भी दल को बहुमत नहीं मिलने से एनडीए की सरकार बनी है। वहीं किंगमेकर जदयू और टीडीपी में लोकसभा मध्यक्ष पद को लेकर तकरार है।

26 को होगा लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव : 18वीं लोकसभा चुनाव में एनडीए ने जीत हासिल की है, लेकिन लोकसभा के अध्यक्ष पद को लेकर एनडीए में पेंच फंस रहा है। सहयोगी टीडीपी और जेडीयू भी स्पीकर पद चाह रही है। वहीं, लोकसभा में 26 जून को नये अध्यक्ष का चुनाव होगा। सदन के सदस्य उम्मीदवारों के समर्थन में प्रस्ताव के लिए एक दिन पहले दोपहर 12 बजे तक नोटिस दे सकते हैं। 17वीं लोकसभा में ओम बिरला को लोकसभा का अध्यक्ष बनाया गया था।

(शेष पेज 11 पर)

राजनाथ सिंह ने की बैठक

लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए जारी खींचतान के बीच रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के आवास पर एनडीए की अहम बैठक की। बैठक में लोकसभा अध्यक्ष पद को लेकर गहन चर्चा की गई. बैठक में बीजेपी अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, किरेन रिजिजू, अश्विनी वैष्णव, ललन सिंह, चिराग पासवान समेत कई और नेता शामिल थे।

झारखंड में बदला मौसम, तेज हवा- वज्रपात का अलर्ट

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। हल्की बारिश से झारखंड के कई जिलों में मौसम ने करवट ली है। सोमवार को राजधानी रांची में पूरे दिन हल्के बादल छाये रहे। इससे मौसम में गरमाहट रही। शाम के बाद रांची में ठंडी हवाओं से लोगों को गर्मी से राहत मिली। मौसम विभाग ने तेज हवाओं के साथ वज्रपात की आशंका को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। सोमवार को रामगढ़, गुमला, लातेहार, लोहरदगा, बोकारो में कहीं-कहीं हल्की बारिश से मौसम ने थोड़ी राहत दी। गुमला के बिशुनपुर में आंधी-तूफान के साथ बारिश से कई घरों की छतें उड़ गयीं। कई पेड़ टूट गये। वहीं गढ़वा, पलामू और रामगढ़ जिले में सीवियर हीट वेव रहा। राज्य में सबसे गर्म 46.0 डिग्री से. के साथ डाल्टेनगंज रहा। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, मंगलवार से 23 जून तक गरज के साथ हल्की बारिश संभव है। इससे अधिकतम तापमान में 3 से 4 डिग्री की गिरावट हो सकती है।

तेज हवा और वज्रपात की आशंका : मौसम विभाग के अनुसार, झारखंड में 18 जून को गढ़वा, पलामू, चतरा और लातेहार में 30 से 40 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है, जिसे लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है। वहीं बाकी जिलों में 40-50 किलोमीटर प्रति घंटे हवाओं के साथ वज्रपात की आशंका है। इस दौरान कुछ स्थानों पर गर्जन के साथ हल्के से मध्यम दर्जे की वर्षा होने की संभावना है। वहीं 19 से 23 तक राज्य के सभी जिलों में गरज और तेज हवा के झोंके के साथ वज्रपात की आशंका है। विभाग ने ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

(शेष पेज 11 पर)

कई जिलों में हीटवेव जारी

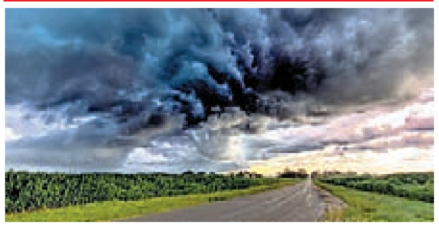

पीएम आज किसानों के खातों में ट्रांसफर करेंगे 20 हजार करोड़

झारखंड के 35 लाख से अधिक किसान होंगे लाभान्वित

खबर मन्त्र ब्यूरो

वाराणसी, रांची। पीएम मोदी मंगलवार को दो दिवसीय दौरे पर वाराणसी पहुंचेंगे। लगातार तीसरी बार वाराणसी से जीत कर प्रधानमंत्री के पद पर पहुंचे मोदी जनता का आभार करेंगे। साथ ही किसानों की जनसभा को संबोधित करने के साथ ही डीबीटी के माध्यम से देश भर के 9.26 करोड़ लाभार्थी किसानों के खाते में लगभग 20 हजार करोड़ की किसान सम्मान निधि ट्रांसफर करेंगे। पीएम मोदी की पीएम स्वयं सहायता समूह की 30 हजार महिलाओं को प्रमाण पत्र भी देंगे। किसान सम्मेलन में 50 हजार किसानों के पहुंचने की उम्मीद है। 19 की सुबह वाराणसी से मोदी दिल्ली लौट जायेंगे।

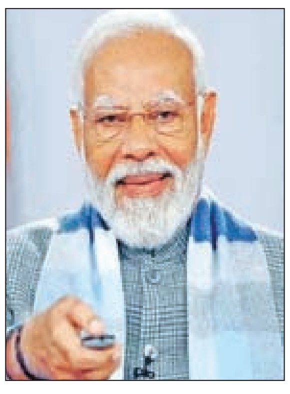

इस सौगात से झारखंड के 30 लाख से अधिक किसान लाभान्वित होंगे।

30 हजार कृषि सखियों को प्रमाणपत्र देंगे : तीसरी बार पीएम पद की शपथ लेने के बाद पीएम नरेंद्र मोदी ने सबसे पहले पीएम किसान निधि की 17 वीं किस्त जारी करने की मंजूरी दी थी। किसान सम्मान निधि के तहत लगभग अब तक 11 करोड़ से अधिक पात्र किसान परिवारों को 3.04 लाख करोड़ रुपये का लाभ मिल चुका है।

(शेष पेज 11 पर)

झारखंड में सीधा प्रसारण

मंगलवार को वाराणसी से जारी किये जा रहे पीएम किसान सम्मान निधि की 17 वीं किस्त से झारखंड के 35 लाख से अधिक किसानों को फायदा मिलेगा। वाराणसी में आयोजित किसान सम्मेलन का रांची में भी सीधा प्रसारण होगा। कार्यक्रम पीएम के संसदीय क्षेत्र में होगा और इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण सभी 734 कृषि विज्ञान केन्द्रों में किया जायेगा। रांची के दिव्यायन कृषि विज्ञान केन्द्र में भी शाम 4 से 7 बजे तक इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण होगा। इसमें झारखंड के कुल 200 कृषि सखी एवं 100 किसान भाग लेंगे। पीएम इस दौरान 30 हजार से अधिक स्वयं सहायता समूहों को कृषक सखियों के रूप में प्रमाण पत्र प्रदान देंगे।

राहुल छोड़ेंगे वायनाड प्रिंयका लड़ेंगी उपचुनाव

एजेंसी

नयी दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी वायनाड सीट से इस्तीफा देंगे। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के आवास में लंबी बैठक के बाद इसपर फैसला किया गया। वहीं बैठक में फैसला किया गया है कि वायनाड सीट से प्रियंका गांधी चुनाव लड़ेंगी। कांग्रेस अध्यक्ष ने सोमवार को मीडिया से बातचीत करते हुए बताया कि राहुल गांधी रायबरेली से सांसद बने रहेंगे। वहीं राहुल गांधी ने कहा कि वो भले ही वायनाड सीट छोड़ रहे हैं लेकिन वहां से उनका नाता खत्म नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि वायनाड में उनका आना जाना लगा रहेगा। पार्टी अध्यक्ष के आवास पर सोमवार को कांग्रेस नेताओं की बैठक में कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी, पार्टी सांसद राहुल गांधी, महासचिव प्रियंका गांधी और पार्टी महासचिव केसी वेणुगोपाल शामिल थे। बैठक में कई मुद्दों पर चर्चा हुई। इस दौरान यह भी साफ हुआ कि वायनाड से राहुल गांधी इस्तीफा देंगे और प्रियंका गांधी उपचुनाव लड़ेंगे। खड़गे ने कहा कि इस सीट से प्रियंका के होने से लोगों को भी राहत रहेगी।

उद्योग विभाग के निर्देश पर तैयारी में जुटा जियाडा

राज्य के सभी चार औद्योगिक क्षेत्रों में लगायी जायेगी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। राज्य के चार जिलों में औद्योगिक क्षेत्रों के विस्तार पर काम चल रहा है। उद्योग विभाग के निर्देश पर झारखंड इंडस्ट्रियल एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी (जियाडा) इस पर काम कर रहा है। जियाडा के अनुसार इन जिलों में औद्योगिक क्षेत्रों में अतिरिक्त क्षेत्र की उपलब्धता पर काम शुरू कर दिया गया है। रांची के साथ ही रामगढ के गोला क्षेत्र, चतरा और खूंटी में अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र की उपलब्धता के लिए जिला प्रशासन के साथ मिलकर काम शुरू कर दिया गया है। जियाडा के अनुसार राज्य के सभी जिलों में 100 एकड़ का औद्योगिक क्षेत्र आवंटित करने की योजना है। यही कारण है कि जिला प्रशासन से क्षेत्र की उपलब्धता के संबध में जानकारी मांगी गयी ह। इसके बाद उद्योगों के अनुरूप क्षेत्र और संसाधनों को ध्यान में रखते हुए इस पर काम किया जायेगा। उद्योग विभाग का लक्ष्य है कि इन क्षेत्रों में 5 से 20 हजार स्कवॉयर फीट तक के भूखंड छोटे-छोटे उद्योगों को आवंटित करने की भी योजना बनायी जा रही है। इसका मुख्य उद्देश्य उद्योगों को प्रोत्साहित करने के साथ ही रोजगार उपलब्ध कराना है। इसमें स्थायनीय लोगों को अधिक से अधिक रोजगार मिल सके।

मैन्युफैक्चरिंग यूनिट लगाने पर जोर

इन जिलों में विभाग की ओर से मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट लगाने की दिशा में काम किया जा रहा है। विशेषकर रांची में तुपूदाना, कोकर, टाटीसिलवे, इरबा के साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी उद्योगों के स्थापना की दिशा में कार्य की जा रही है। इन प्रोजेक्ट्स में मुख्यत: सीमेंट प्लांट, होटल एण्ड रेस्तरां, फर्नीचर मैन्युफैक्चरिंग, हैंडीक्राफ्ट टेंपल, हेवी एंड लाइट व्हिकल बॉडी बिल्डिंग, वेयर हाउसिंग एंड लॉजिस्टिक, फैब्रिकेशन वर्क्स, प्लास्टिक वाटर टैंक, पेट्रोल पंप, वॉल पुट्टी एंड रस्टिक मैन्युफैक्चरिंग के उद्योग स्थापित होंगे। जियाडा की ओर से प्रोजेक्ट्स के लिए जमीन आवंटित की जायेगी। इसके लिये औद्योगिक और व्यापारिक संगठनों के साथ बैठक कर सहमति बनायी जायेगी।

प्रेस वार्ता : लोकसभा और विधानसभा चुनाव में लोगों का होता है अलग मिजाज

विधानसभा चुनाव के लिए आजसू का रोड मैप तैयार
एनडीए फोल्डर में रहकर लड़ेंगे विस चुनाव : सुदेश

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो ने सोमवार को पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि लोकसभा और विधानसभा चुनाव में लोगों का अलग मिजाज होता है। पंचायत, विधानसभा, लोकसभा सबों में देखने की दृष्टि अलग-अलग होती है। विपक्ष ने एनडीए की जीत पर संविधान बदलने, आरक्षण खत्म करने का झूठ फैलाया, जबकि इसके बड़े नेता ने झारखंड की इसी धरती पर कहा कि जब तक उनकी सांस है, कोई संविधान नहीं बदल सकता। सुदेश महतो ने आगामी विधानसभा चुनाव एनडीए फोल्डर में रहते ही चुनाव लड़ने की बात कही। प्रेस कांफ्रेस में पार्टी के प्रवक्ता डॉ देवशरण भगत, आजसू बुद्धिजीवी मंच के अध्यक्ष डोमन सिंह मुंडा, महासचिव डॉ मुकुंद चंद्र मेहता शामिल थे।

22 जून को पार्टी का स्थापना दिवस

22 जून को पार्टी के स्थापना दिवस के मौके पर राज्य भर में बलिदान दिवस के रूप में मनाया जाएगा। सभी विधानसभा क्षेत्रों में वीडियो चित्रण का प्रदर्शन किया जाएगा। राज्य के हर युवाओं के जेहन में यह रहना चाहिए कि झारखंड गठन की वेदना, कल्पना और इतिहास रहना चाहिए। इसी दिन हर विधानसभा में 100 पौधे लगाये जाएंगे।

19, 20 और 23 जून को आभार यात्रा

उन्होंने कहा कि गिरिडीह की सम्मानित जनता ने फिर एक बार हमें राष्ट्रीय पटल पर नेतृत्व करने का मौका दिया है। गिरिडीह संसदीय सीट से चंद्रप्रकाश चौधरी जी की जीत को लेकर जनता के प्रति आभार प्रकट करने के लिए वे आभार यात्रा करेंगे। यह आभार यात्रा 19 जून को टुंडी तथा बाघमारा विधानसभा, 20 जून को डुमरी एवं गिरिडीह विधानसभा और 23 जून को गोमिया एवं बेरमो विधानसभा क्षेत्र में होगी।

26 जून से चूल्हा प्रमुखों का शपथ : पार्टी ने तय किया है कि हर विधानसभा क्षेत्र में पार्टी की सबसे निचली इकाई चूल्हा प्रमुख और ग्राम प्रभारी का संयुक्त शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया जाएगा।

30 जून को हूल दिवस : 30 जून को सभी विधानसभा क्षेत्रों में पार्टी ने हूल दिवस मनाने का निर्णय लिया है। हूल के महानायकों को श्रद्धांजलि देने के साथ उनके सपने साकार करने के संकल्प लिए जाएंगे।

8 अगस्त को युवा महाजुटान : झारखंड आंदोलन के प्रणेता और आजसू की परिकल्पना करने वाले धरती पुत्र शहीद निर्मल महतो के शाहदत दिवस पर रांची में राज्य भर के लाखों नौजवान का जुटान होगा। इस महाजुटान में मिशन 2024 को सफल बनाने के लिए संकल्प लिए जाएंगे।

9 अगस्त आदिवासी अखड़ा : पार्टी ने विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर राज्य के सभी विधानसभा क्षेत्रों में आदिवासी अखड़ा कार्यक्रम का निर्णय लिया है। आदिवासी अखड़ा के जरिए झारखंड की भाषा, अस्मिता, संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए संकल्प लिए जाएंगे। साथ ही भाषा, कला और संस्कृति के क्षेत्र में बेहतर काम करने वालों को सम्मानित किया जाएगा।

16 अगस्त से निर्माण यात्रा : 16 अगस्त से पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो पूरे राज्य में निर्माण यात्रा पर निकलेंगे। यह यात्रा दो अक्तूबर तक चलेगी। इस कार्यक्रम के तहत राज्य के सभी विधानसभा क्षेत्रों में निर्माण पद यात्रा निकाली जाएगी।

चंपई सरकार की विदाई का वर्ष

सुदेश ने कहा कि इस सरकार का यह विदाई वर्ष है। उसके कमिटमेंट और दावे खोखले साबित हो चुके हैं। जाते-जाते सरकार फिर से मजाक करने में लगी है। नियोजन नीति, विस्थापन को लेकर वह केवल राजनीति करती रही है। ओबीसी के लिए आरक्षण का प्रस्ताव लेकर आने की बात हुई। अब इससे संबंधित आयोग ने 27 फीसदी आरक्षण का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा है। यह सब बिना किसी आंकड़े के हो रहा है। आरक्षण, सरना धर्म कोड और अन्य विषयों पर हम सरकार के साथ खड़े रहे, पर सरकार गुमराह ही करती रही। जिसकी जितनी आबादी, उतनी भागीदारी हो। इस सरकार में एक मंत्री के लिए एक भी एससी नहीं मिल रहा।

राज्य सरकार ने बताया कि डीआरडीए कर्मियों के जिप में विलय से अस्थायी कर्मियों की नहीं जायेगी नौकरी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। डीआरडीए के विघटन के बाद इसमें कार्यरत 380 संविदा कर्मियों का विलय जिला परिषद में किया जायेगा। 24 जिला परिषद में विलयन की प्रक्रिया जल्द शुरू होगी। साथ ही इसमें कार्यरत स्थायी कर्मचारी जिनकी प्रतिनियुक्ति दूसरे विभागों से डीआरडीए में की गयी थी वे स्वतः अपने पैतृक विभाग में वापस लौट जायेंगे। डीआरडीए अंतर्गत संविदा आधारित नियुक्त कर्मी द्वारा धारित सृजित पद के लिए जिला परिषद अंतर्गत एक कोषांग का गठन किया जायेगा और कर्मचारी यहीं योगदान देंगे।

हालांकि, विलयन के प्रभाव के रूप में कर्मचारी की अधिकता अगर जिला परिषद में हो जाती है तो इसे आधार मानकर जिला परिषद में कार्यरत किसी नियमित कर्मी या अस्थायी कर्मी जैसे आउट सोर्स, संविदा, दैनिक मजदूरी, अंशकालीन की सेवा समाप्त नहीं की जायेगी। परंतु जिप में पूर्व से प्रतिनियुक्त कर्मी की सेवा वापस करने पर डीडीसी सहित सक्षम प्राधिकार निर्णय ले सकेंगे। कोषांग में विशेषज्ञ एवं तकनीकी कर्मी, पदाधिकारी उपलब्ध रहने की स्थिति में उनके स्तर के कार्य निष्पादन के लिए अन्य विभागों से पंचायती राज विभाग की पूर्वानमुति लेनी जरूरी रखी गयी है।

ग्रामीण विकास विभाग ने सारे मसले पर स्थिति स्पष्ट की है। विलयन के पूर्व संबंधित कर्मचारी ग्रामीण विकास विभाग से संबंधित अभिलेख एवं सामाग्रियों की इनवेंटरी तैयार करेगी। इसके बाद ऐसे कर्मियों के कोषांग में विलयन के लिए मुक्त की जा सकेगी। डीडीसी तैयार अभिलेख को नवगठित होने वाले जिला ग्रामीण विकास शाखा को दिया जायेगा।

क्या बीआरपी-सीआरपी के हाथ फिर रह जायेंगे खाली

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। क्या इस कैबिनेट में बीआरपी सीआरपी की सेवा शर्त नियमावली का प्रस्ताव आयेगा? या फिर से एक बार बीआरपी छले जायेंगे। ऐसा कहना है कि बीआरपी-सीआरपी संघ के सदस्यों का। सोमवार को एक प्रेस बयान जारी कर संघ के केंद्रीय अध्यक्ष कृष्णा प्रसाद ने कहा कि उनकी सेवा शर्त नियमाली एक अबूझ पहेली बन गयी है। इसी पहेली को सुलझाने का प्रयास कर रहे हैं परंतु अधिकारियों के लेट-लतीफी के कारण उनके हाथ खाली रह जा रहे हैं। संघ के सदस्यों का कहना है कि कि 19 साल की सेवा के उपरांत भी बीआरपी सीआरपी को बुनियादी सुविधा यथा भविष्य निधि कटौती, ग्रुप बीमा से वंचित रखा गया है। परियोजना में बीआरपी सीआरपी अनुश्रवणकर्ता के रूप में कार्यरत है। विभाग के प्रत्येक कार्य के साथ जनगणना, चुनाव कार्य जैसे महत्वपूर्ण कार्य में अपनी महती भूमिका निभाने वाले बीआरपी सीआरपी को 19 साल की सेवा अवधि के बाद भी मानदेय 19 हजार नहीं मिल रहा है और नहीं विभाग के किसी रिक्त पद पर आरक्षण।

जीएसटी के अधिकारियों को कार्यालय अवधि के बाद बयान देने के लिए नहीं करना चाहिए बाध्य : हाईकोट

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड हाईकोर्ट ने अपने एक आदेश में कहा कि किसी व्यक्ति को जीएसटी अधिकारियों को कार्यालय अवधि के बाद बयान देने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए या उन पर दबाव नहीं डालना चाहिए। हाईकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस एस चंद्रशेखर और जस्टिस नवनीत कुमार की खंडपीठ ने इस बात पर जोर दिया कि जीएसटी के नियमों के तहत सक्षम अधिकारी को कार्यालय समय के बाद बयान देने के लिए किसी व्यक्ति को बाध्य नहीं करना चाहिए। याचिकर्ता के अधिवक्ता ने अपनी बहस के दौरान यह दलील दी कि किसी भी अधिकारी का बयान कार्यालय अवधि के दौरान ही दर्ज किया जाना चाहिए।

प्रार्थी ने कार्यालय अवधि के दौरान पूछताछ के लिए बुलाने की मांग की थी : दरअसल जीएसटी के अधिकारियों ने जमशेदपुर के शिव कुमार देवड़ा को बयान दर्ज करने के लिए बुलाया था। उनसे एक बार पूछताछ भी हो चुकी थी, जिसमें काफी समय लगा था। प्रार्थी के मुताबिक, उनसे देर रात तक पूछताछ की गयी और दोबारा पूछताछ के लिए बुलाया गया। जिसके बाद उन्होंने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर यह मांग की कि कार्यालय अवधि के दौरान ही उन्हें पूछताछ के लिए बुलाया जाये।

मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने जीएसटी अधिकारियों को यह निर्देश दिया कि जीएसटी कमिश्नर के निर्देशों का पालन करते हुए और कानून में निहित प्रावधानों के तहत ही किसी व्यक्ति को पूछताछ के लिए बुलाया जाये।

सीसीएल के क्वार्टरों में जल संकट से कर्मी त्रस्त, नगर प्रशासन विभाग कम पानी खर्च करने की दे रहा सलाह

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। कोल इंडिया की सहायक और मिनी रत्न कंपनी सीसीएल हर साल सीएसआर पर करोड़ों रुपये खर्च कर रहा है जबकि कंपनी के क्वार्टर में रहने वाले कर्मियों को पानी नसीब नहीं हो रहा है। पानी के संकट से कर्मी त्रस्त हैं। नगर प्रशासन विभाग पानी कम खर्च करने की सलाह दे रहा है।

सीसीएल के नगर प्रशासन विभाग ने एक सूचना जारी की है। इसमें कर्मियों से कहा गया है कि जवाहर नगर कॉलोनी, राजेंद्र नगर, गांधी नगर कॉलोनी और अस्पताल, दरभंगा हाउस कॉम्प्लेक्स में बोरिंग फेल हो गया है। रांची नगर निगम से पानी की आपूर्ति नहीं हो रही है। इसके कारण पानी की भारी कमी है। अनुरोध है कि कृपया कम पानी का उपयोग करें। पानी की बबार्दी नहीं करें।

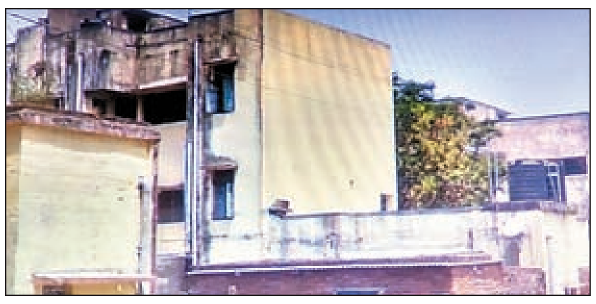

इस संबंध में नगर प्रशासन विभाग द्वारा सभी प्रयास किये जा रहे हैं। मालूम हो कि उपरोक्त सभी कॉलोनियां कंपनी मुख्यालय में स्थित हैं। जवाहर नगर कॉलोनी में सीएमडी, निदेशक जैसे उच्चाधिकारियों के आवास हैं। दरभंगा हाउस कॉम्प्लेक्स में तो सारे कार्यालय ही हैं। मुख्यालय और उच्चाधिकारियों के आवास होने के कारण आमतौर पर यहां नगर प्रशासन विभाग की खास नजर रहती थी। इसके बाद भी यहां पानी की किल्लत हो गई है। कर्मियों के मुताबिक गांधीनगर कॉलोनी में पानी का संकट काफी दिनों से है। यहां लगाया गया बोरिंग फेल हुए एक साल से अधिक हो चुका है। बोरिंग के फेल होने की स्थिति आने से पहले ही कॉलोनीवासियों की ओर से सीएमडी और निदेशकों को कई बार ज्ञापन सौंपा गया। बावजूद इसके इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। राजेंद्र नगर कॉलोनी में पानी संकट का स्थायी समाधान कभी हुआ ही नहीं। कर्मियों का कहना है कि कंपनी करोड़ों लाभ में है। केंद्र और राज्य सरकारों को करोड़ों रुपये टैक्स के तौर पर देती है। सीएसआर पर हर साल करोड़ों रुपये खर्च करती है लेकिन कर्मियों को पनी तक नसीब नहीं हो रहा है। सीएसआर के तहत पैसा खर्च करने पर उन्हें कोई एतराज नहीं है, लेकिन कर्मियों की समस्याओं का निराकरण होना चाहिए।

कर्मियों का यह भी कहना है कि कंपनी हर साल अच्छी चीजों को तोड़कर बनाने की नीति पर भी करोड़ों रुपये खर्च कर रही है। अच्छी कंडीशन में मौजूद चीजों को तोड़कर फिर से बनाया जाता है। इसपर करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाया जा रहा है। जबकि कर्मियों की जनसुविधा का ख्याल नहीं रखा जा रहा है। इससे सभी परेशान हैं।

रेल हादसे पर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष ने जतायी चिंता

रांची। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में हुए कंचनजंगा एक्सप्रेस रेल हादसे में मृत यात्रियों के प्रति प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने शोक व्यक्त कर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को मृत व्यक्तियों के परिवारों तथा घायलों को उचित मुआवजे तथा उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधा सरकार के स्तर पर उपलब्ध कराना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस रेल हादसे की नैतिक की जिम्मेवारी रेल मंत्री को लेनी चाहिए। उनके कार्यकाल में देश में कई रेल हादसों में सैकड़ों लोगों की मौत हुई है। हजारों परिवार उजड़ गए लेकिन रेल मंत्रालय की कार्यप्रणाली में सुधार देखने को नहीं मिला। उन्होंने कहा कि रेलवे के सुरक्षा मानकों में गुणात्मक सुधार जरूरी है लेकिन अन्य देशों की तुलना में विगत एक दशक में सुरक्षात्मक उपाय में वृद्धि न के बराबर हुई है।

मुठभेड़ के बाद सर्च ऑपरेशन में एक और नक्सली सपनी हांसदा का शव बरामद

खबर मन्त्र ब्यूरो

गिरफ्तार एरिया कमांडर पांडू हांसदा की है पत्नी

रांची। पश्चिमी सिंहभूम जिले के नक्सल प्रभावित गुवा थाना क्षेत्र स्थित लिपुंगा जंगल में सोमवार की तड़के सुरक्षाबलों की मुठभेड़ के बाद पुलिस का सर्च ऑपरेशन में एक और महिला नक्सली का शव बरामद हुआ है, जो पकड़े गए जिंदा नक्सली दो लाख इनामी एरिया कमांडर टाइगर उर्फ पांडू हांसदा की पत्नी सपनी हांसदा हैं। जो नक्सली दस्ते की सदस्य थी। बताया जाता है कि पुलिस नक्सली मुठभेड़ में महिला नक्सली सपनी हांसदा को गोली लगी थी। जो बाद में नक्सली उसको अपने साथ ले जा रहे थे, लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। इसके बाद नक्सलियों ने उसे वहीं छोड़कर चले गए। बता दें कि सोमवार सुबह सुरक्षाबलों के साथ नक्सलियों का की मुठभेड़ में एक महिला समेत चार भाकपा नक्सली ढेर हो गये। पुलिस नक्सली मुठभेड़ में मारे गये हैं, नक्सलियों में दस लाख इनामी जोनल कमिटी मेंबर सिंगराई, पांच लाख इनामी सब जोनल कमिटी मेंबर कांडे होनहागा के अलावा दो लाख इनामी एरिया कमांडर सूर्या उर्फ मुंडा देवगम और एक महिला नक्सली जुंगा पुर्टी उर्फ मारला शामिल हैं। जबकि मुठभेड़ स्थल से सुरक्षाबलों ने एक महिला नक्सली सहित दो जिंदा हिरासत में ले लिया है। पकड़े गए जिंदा नक्सली दो लाख इनामी एरिया कमांडर टाइगर उर्फ पांडू हांसदा और एक महिला नक्सली बत्री देवगम शामिल हैं। मुठभेड़ के बाद सुरक्षा बलों ने बड़े पैमाने में सर्च ऑपरेशन चलाया है। सर्च ऑपरेशन के दौरान सुरक्षा बल ने एक और सपनी हांसदा महिला नक्सली का शव बरामद किया।

स्पीकर ने ट्रेन दुर्घटना पर दु:ख जताया

रांची। स्पीकर रबींद्रनाथ महतो ने सिलीगुड़ी से कोलकाता के बीच चलने वाली कंचनजंगा एक्सप्रेस के दुर्घटनाग्रस्त होने पर दुख प्रकट किया है। दुर्घटना में मारे जाने वाले लोगों एवं घायलों के परिवार जनों के प्रति अपनी शोक संवेदनायें व्यक्त की हैं। उन्होंने कहा कि यह ट्रेन अपने प्रस्थान और गन्तव्य की दूरी तय करने के बीच झारखंड के संथाल से जुड़े इलाकों से होकर भी गुजरती है। दुर्घटना में मृतकों के परिवारों एवं दुर्घटनाग्रस्त लोगों के लिए ये बहुत ही दुखद क्षण है।

मैं दुर्घटना में मारे गये सभी लोगों के आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुये उनके परिवार जनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रकट करता हूं। साथ ही, इस ट्रेन दुर्घटना में घायल हुये लोगों की जल्द से जल्द स्वस्थ लाभ प्राप्त होने की ईश्वर से कामना करता हूं।

रेल मंत्रालय हो रही रेल दुर्घटनाओं की रिपोर्ट को सार्वजनिक करे : सीपीएम

जलपाईगुड़ी रेल हादसा चिंताजनक

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी डिविजन में हुआ भीषण रेल हादसा चिंता का विषय है। इस संबंध में सीपीएम राज्य सचिव की ओर से शोक व्यक्त किया गया। बयान जारी करते हुए सीपीएम राज्य सचिव प्रकाश विप्लव ने कहा है कि मीडिया रिपोर्ट के अनुसार इस दुघर्टना में अबतक 15 लोगों की मौत हुई है और 60 से ज्यादा यात्रियों के बुरी तरह घायल होने की बात कही जा रही है। अंदेशा है कि इस दुर्घटना में मौत का शिकार होनेवाले यात्रियों की संख्या बढ़ सकती है। हर रेल दुघर्टना के बाद रेलवे द्वारा दुघर्टना के कारणों की रुटीन जांच रेलवे के सुरक्षा आयुक्त से करायी जाती है लेकिन जांच रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं होती है। पिछले दिनों उड़ीसा में हुई भयानक रेल दुर्घटना के संबंध में रेल मंत्रालय द्वारा इसकी जांच रिपोर्ट आज तक सार्वजनिक नहीं की गई है। उन्होंने कहा है कि जलपाईगुड़ी के रांगापानी में हुई रेल दुर्घटना में एक बात प्रमुखता से सामने आयी है कि मालगाड़ी का लोको पायलट लगातार ड्यूटी कर रहा था और चार रातों से ठीक से नींद पूरी नहीं कर पाया था।

प्रकाश विप्लव ने कहा है कि रेलवे के लोको पायलटों के संगठन ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन पिछले कई वर्षों से यह मुद्दा उठा रहे हैं कि रेलवे इंजन के क्रू मेंबरों से 8 घंटे से ज्यादा काम नहीं लिया जाये। इसके बावजूद रेल मंत्रालय और रेल प्रबंधन के बड़े अधिकारी लोको पायलटों के इस मुद्दे पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। रेल मंत्रालय और रेलवे बोर्ड की यह उदासीनता एक अपराधिक काम है।

प्रकाश विप्लव ने कहा है कि सीपीआईएम इस भीषण रेल दुर्घटना के लिए जिम्मेदार बड़े अधिकारियों पर अपराधिक मुकदमा दर्ज करने और मौत के शिकार हुए यात्रियों को पर्याप्त मुआवजा देने और घायलों को बड़े अस्पताल में सरकारी खर्च से समुचित इलाज कराने की मांग करता है। सीपीएम दुघर्टना में मारे गए यात्रियों और उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

छत्तीसगढ़ और ओड़िशा के बाद अब झारखंड पर भाजपा की नजर

भाजपा ने अपना इरादा जाहिर किया, शिवराज सिंह और हिमंता के कंधों पर होगा विधानसभा का चुनाव

उदय चौहान

रांची। जल्द ही झारखंड में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज जायेगा। यह चुनाव सत्तारूढ़ झामुमो-कांग्रेस के लिए तो महत्वपूर्ण है ही, विपक्षी दल भाजपा के लिए भी अग्नि परीक्षा से कम नहीं। यही वजह भी है कि केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को भाजपा ने झारखंड का चुनाव प्रभारी बनाया है। उनके संग असम के सीएम हिमंता विश्व सरमा को भी सहयोगी की भूमिका दी है। दोनों को चुनाव प्रभारी बना कर भाजपा ने अपना इरादा जाहिर करते हुए संदेश दे दिया है। विधानसभा चुनाव से करीब 5 माह पूर्व प्रभारी की नियुक्ति किये जाने से दोनों प्रभारियों को झारखंड की जमीनी हकीकत समझने के लिए खूब समय भी मिलेगा। दोनों दिग्गज नेता अपने-अपने काम और व्यवहार को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर जाने जाते हैं। दोनों अलग-अलग स्वभाव के नेता हैं। काफी अनुभवी भी हैं। मध्य प्रदेश में वर्तमान लोकसभा चुनाव से लेकर दो दशकों से भी अधिक समय तक कांग्रेस को सत्ता से बाहर रखने में शिवराज सिंह चौहान का जादू दिखता रहा है। असम के सीएम हिमंता सरमा भी अपने राज्य ही नहीं, देशभर में खास छवि रखते रहे हैं। अब दोनों का सियासी जादू कितना प्रभावी है, यह तो विस चुनाव में ही पता चल सकेगा।

उल्लेखनीय है कि लोकसभा चुनाव में झारखंड में आदिवासी बहुल 5 सीटों पर भाजपा हार गयी। इससे पार्टी अलर्ट मोड में आ गई है। नई रणनीति पर तत्काल काम करना शुरू कर दिया है। आदिवासियों का विश्वास जीतने के लिये एक बार फिर से पहल की जा रही है। इस कड़ी में पड़ोसी राज्य छत्तीसगढ़ के बाद ओडिशा में आदिवासी समाज से आनेवाले मोहन चरण मांझी को मुख्यमंत्री बनाया गया। अब इसके तुरंत बाद शिवराज सिंह चौहान को झारखंड का चुनाव प्रभारी और हिमंता विश्व सरमा को सह प्रभारी नियुक्त किया है। इन दोनों राज्यों में आदिवासियों की अच्छी खासी संख्या है। वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव के समय से ही झारखंड के आदिवासी जिसमें ईसाइयों की संख्या अधिक है, ये भाजपा के खिलाफ दिखते रहे हैं। इस कारण लोकसभा के 5 सीटों पर हार मिली। झारखंड में फिर से सत्ता में आने के लिए भाजपा गंभीर है। हार से सबक लेते हुए पार्टी फूंक-फूंक कर कदम रख रही है। वह कोई जोखिम लेना नहीं चाहती है।

अब कहा जा रहा कि शिवराज सिंह चौहान और हिमंता विश्व सरमा की नियुक्ति इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। दोनों नेताओं का कद बहुत बड़ा है और राजनीतिक अनुभव भी है। शिवराज सिंह चौहान राजनीति के चतुर और माहिर खिलाड़ी हैं। इस बार के लोकसभा चुनाव में मध्य प्रदेश में भाजपा ने कांग्रेस का सूपड़ा साफ कर दिया। शिवराज सिंह चौहान और हिमंता भाजपा में जीत की नई रणनीति बनायेंगे। दोनों नेताओं के अनुभव का लाभ झारखंड भाजपा को मिलेगा।

रांची पुलिस ने पांच बोरी डोडा किया जब्त, एक गिरफ्तार

रांची। रांची पुलिस ने पांच बोरी डोडा जब्त किया है। वहीं इस मामले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है. ।गिरफ्तार व्यक्ति का नाम सुलेमान है और एक व्यक्ति फरार हो गया है। वहीं, फरार व्यक्ति का नाम दयाल है। यह गिरफ्तारी नगड़ी थाना इलाके से की गयी है। एसएसपी ने बताया कि नगड़ी इलाके में दो मोटरसाईकिल के पीछे बोरी में बांध कर दो व्यक्ति डोडा लेकर जा रहे थे। मामले की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने चेकिंग अभियान चलाया और एक व्यक्ति की गिरफ्तारी की गई। दोनों मोटरसाईकिल को पुलिस बल के सहयोग से रोकने का ईशारा करने पर एक मोटरसाईकिल सवार व्यक्ति अपनी मोटरसाईकिल को बोरी सहित छोड़ कर भाग गया। दूसरे व्यक्ति को पुलिस बल तथा ग्रामिणों के सहयोग से पकड़ा गया। दोनों मोटरसाईकिल पर कुल पांच बोरी डोडा लदा हुआ था।

सीएमपीडीआई ने किया जूट बैग का वितरण

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सीएमपीडीआई के सीएमडी मनोज कुमार, निदेशक शंकर नागाचारी, अजय कुमार, सतीश झा के नेतृत्व में संस्थान के मुख्यालय परिसर में दिनांक 16 से 30 जून तक चलने वाले स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत सोमवार को स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त, सीएमपीडीआई द्वारा अपने मुख्य द्वार पर नजदीकी बाजार में खरीददारी करने आए आसपास के निवासियों के बीच जूट बैग का वितरण किया गया, ताकि प्लास्टिक बैग का उपयोग पर रोक लग सके। क्षेत्रीय संस्थान-3- रांची के क्षेत्रीय निदेशक जयंत चक्रवर्ती, महाप्रबंधक (टीएस/पीआर) संजय कुमार दुबे सहित महाप्रबंधक व विभागाध्यक्ष, वरीय अधिकारी एवं कर्मचारियों ने इस अभियान में भाग लिया। ज्ञात हो कि स्वच्छता पखवाड़ा-2023 के दौरान सीएमपीडीआई द्वारा की गयी गतिविधियों, शामिल नवीन विचारों, अधिकतम सार्वजनिक भागीदारी और आयोजित जागरूकता कार्यक्रम के आधार पर सीएमपीडीआई को कोयला मंत्रालय द्वारा द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ईद-उल-अजहा के अवसर पर राजधानी के ईदगाहों व मस्जिदों में अदा की गयी नमाज

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। ईद उल अजहा के अवसर पर राजधानी के ईदगाहों, मस्जिदों में नमाज अदा की गयी। नमाज अदा कर देश और राज्य की खुशहाली, समृद्धि और अमन-चैन के लिए अल्लाह पाक से दुआ की गयी। नमाज अदा करने के बाद सभी ने एक दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। इसके बाद अपने अपने घरों में कुबार्नी दी गयी। बकरीद के अवसर पर एक दूसरे से मिलने का सिलसिला दिन भर चलता रहा। उधर, बकरीद को देखते हुए रांची पुलिस भी पूरी तरह से सतर्क रही। सुबह से मौसम का मिजाज साथ रहा। हल्की धूप में ईदगाहों में नमाज अदा की गई। हरमू ईदगाह में मौलाना डॉक्टर असगर मिस्बाही ने नमाज पढाई तो डोरंडा ईदगाह में मौलाना सैयद शाह अलकमा शिबली ने नमाज पढ़ाई। हववारी मस्जिद में शहर काजी मुफ्ती कमर आलम कासमी ने नमाज पढ़ाई तो मस्जिद जाफरिया में मौलाना सैयद तहजीबुल हसन रिजवी ने नमाज पढ़ाई।

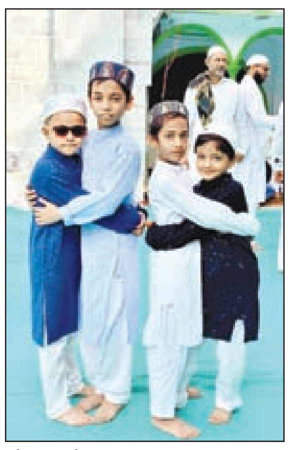

कर्बला चौक में बच्चो के लिए लगा झूला : ईद और बकराईद पर हर वर्ष कर्बला चौक पर बच्चो के लिए झूला लगता आया है। इस वर्ष भी लगा है। जहां बच्चो का उत्साह देखते बनता है। बड़ो से ईदी लेकर घूमने जाना और झूला पर बैठना बच्चो को बहुत पसंद है।

दो हजार पुलिस जवान तैनात : दो हजार जवान बकरीद को देखते हुए राजधानी के सभी संवेदनशील इलाकों में पुलिस बल के साथ-साथ ड्रोन की टीम को भी तैनात किया गया है। सभी थाना प्रभारी नमाज के वक्त अपने अपने इलाकों में भ्रमणशील रहे। बकरीद को लेकर राजधानी रांची में दो हजार पुलिस बलों की तैनाती की गई थी। खासकर वैसे ही इलाके जहां बकरीद के समय पूर्व में सामाजिक सौहार्द बिगड़ा था। वहां विशेष निगरानी रखी जा रही थी।

मंत्री रामेश्वर उरांव जगन्नाथ मंदिर पहुंचे, पूजा अर्चना की

रथ मेला की तैयारी का लिया जायजा

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। वित्त सह खाद्य आपूर्ति मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव ने राजधानी रांची के धुर्वा स्थित भगवान जगन्नाथ मंदिर में सोमवार को पूजा अर्चना की। इस दौरान आगामी रथ मेला की तैयारियों की समीक्षा भी की। मौके पर मंत्री डॉ रामेश्वर उराँव ने कहा कि उन्होंने भगवान जगन्नाथ से अच्छी बारिश के लिए भी प्रार्थना की है ताकि किसानों सहित आम जन जीवन को भी राहत मिल सके। श्री उरांव ने कहा कि इस बार भी रथ मेला पुरानी परंपरा और भव्यता के साथ आयोजन हो रहा है। इसे लेकर सरकार की ओर से सभी आवश्यक सहयोग किया जाएगा। रथ यात्रा का धार्मिक महत्व के साथ- साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व भी है। रामेश्वर उरांव ने कहा कि 7 जुलाई को आयोजित रथ यात्रा सह मेला में राज्य के कोने-कोने से एवं दूसरे प्रदेशों से भी लाखों की संख्या में श्रद्धालु आयेंगे। मंत्री ने रथ मेला की तैयारियों को लेकर हो रहे कार्यों का भी जायजा लिया।

ठोस साक्ष्य के अभाव में आरोपी हुआ बरी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। कॉपीराइट अधिनियम उल्लंघन मामले में ट्रायल फेस कर रहा आरोपी लालपुर थाना क्षेत्र निवासी संजीव कुमार गुप्ता को न्यायिक दंडाधिकारी अमित गुप्ता ने साक्ष्य के अभाव में पांच साल बाद बरी कर दिया है। मामले में गवाही के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से एक भी गवाह अदालत के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया जा सका। मामले के जांच अधिकारी अरशद खान, सूचक दिल्ली निवासी भूपालजी समेत अन्य पांच गवाह अदालत के कई समन के बाद केस को साबित करने नहीं पहुंचा। अदालत लगभग 30 महीने तक गवाहों के आने का इंतजार किया। अदालत ने अपने फैसले में लिखा कि अभियोजन पक्ष केस को साबित करने में पूरी तरह से विफल रहा। अदालत के द्वारा गवाहों को बुलाने के लिए कई प्रोसेस निर्गत किया गया, लेकिन अभियोजन पक्ष एक भी गवाह प्रस्तुत करने में विफल रहा। ऐसी स्थिति में ट्रायल फेस कर रहा आरोपी संजीव कुमार गुप्ता को सभी आरोपों से बरी किया जाता है।

क्या है मामला : कैनन कंपनी के आपरेशन मैनेजर नई दिल्ली निवासी भूपालजी ने 8 अगस्त 2019 को लालपुर थाना में कैनन कंपनी का नकली सामान बेचने से संबंधित एक लिखित आवेदन दिया। इस पर लालपुर थाना तत्काल कार्रवाई करते हुये संजीव कुमार गुप्ता को पकड़ा।

श्री श्याम संघ का 16वां स्थापना दिवस सह निर्जला एकादशी संपन्न

रांची। धार्मिक संस्था श्री श्याम संघ का 16वां स्थापना दिवस सोमवार को स्थानीय श्री राधा वल्लभ मंदिर अपर बाजार में 7:00 बजे गणेश पूजन के साथ शुरू हुआ। मुख्य यजमान राजेश कटारुका सह परिवार ने सर्वप्रथम बाबा श्याम के अखंड ज्योत को प्रज्वलित किया इसके बाद गणेश वंदना के साथ भजनों के कार्यक्रम को शुरू किया गया। निर्जला एकादशी सह स्थापना दिवस के अवसर पर बाबा श्याम का भव्य श्रृंगार, नयनाभिराम झांकी, अखंड ज्योत एवं प्रसाद का आयोजन किया गया। संयोजक सुमित अग्रवाल ने निर्जला एकादशी व्रत की गणना के बारे में बताया की यह व्रत कठिन होती है। इस दिन 24 घंटे के लिए बिना भोजन और जल ग्रहण किए इस व्रत का पालन किया जाता है।

खबर एक नजर में

निगम ने हटाए गए कर्मियों को वापस बुलाया

रांची। रांची नगर निगम ने वाटर बोर्ड से हटाए गये कर्मियों को दोबारा काम पर बुला लिया है। कर्मियों का आरोप था कि उन्हें बिना किसी सूचना के काम से निकाल दिया गया था। इस पर निगम के अधिकारियों का तर्क था कि कर्मचारियों के अनुबंध विस्तार के लिए मूल्यांकन का कार्य किया जा रहा है। जबकि, निगम ने इन कर्मियों को स्पष्ट रूप से काम पर आने से मना कर दिया था। निगम ने 30 कर्मियों का अनुबंध विस्तार अगले छह माह तक किया है।

पिठोरिया से चार जुआरी गिरफ्तार, पूछताछ जारी

रांची। रांची के पिठोरिया इलाके में पुलिस ने चार जुआरियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार जुआरी से पुलिस पूछताछ कर रही है। पुलिस को जानकारी मिली थी कि पिठौरिया इलाके में बड़े पैमाने पर जुआ खेला जा रहा है जिसके बाद जुआ अड्डा पर एसएसपी की क्यूआरटी और पिठोरिया पुलिस ने छापेमारी की है। पुलिस ने एक दर्जन से ज्यादा बाइक, जुआ खेलाने का समान और नकदी बरामद किया गया है। कई जुआरी भागने में कामयाब हो गए।

छात्र प्रतिभा सम्मान 2 जुलाई को

रांची। पासवा द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह 2 जुलाई को खेलगांव में किया जाएगा। पासवा के अध्यक्ष आलोक कुमार दूबे ने बताया कि मैट्रिक तथा इंटर (सीबीएसई/जैक/आईसीएससी) में 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। वित्त मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव, युवा एवं खेलकूद मंत्री हफीजुल हसन मौजूद रहेंगे। ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए 9431109538,7903714760 एवं मेल आईडी जारी किया है।

मारवाड़ी युवा मंच रांची समर्पण शाखा ने की गौ सेवा

रांची। मारवाड़ी युवा मंच रांची समर्पण शाखा ने शाखा अध्यक्ष विनीता सिंघानिया की अध्यक्षता में हर एकादशी गौ सेवा करने की योजना बनाई है। सोमवार को निर्जला ग्यारस पर यह सेवा की गई। शाखा की मीडिया प्रभारी सरिता बथवाल और सदस्य मंजु अग्रवाल ने यह कराई। गौ सेवा प्रभारी आशा संथोलिया एवं संयोजिका डॉली बंसल ने गौ सेवा की तैयारी की। बढ़ती गर्मी को देखते हुए गौ माता को खीरा, लौकी और करीब 25 किलो हरी सब्जियां खिलायी गई। इसके अलावा निर्जला ग्यारस के शुभ अवसर पर तुलादान भी कराया गया। ममता बिवानिया एवं माया बोड़ा ने तुलादान कराया। कार्यक्रम में अध्यक्ष विनीता सिंघानिया, आशा संथोलिया, सरिता बथवाल, कोमल पोद्दार, डॉली बंसल, रितु पोद्दार, मंजु अग्रवाल, सोनल, नेहा अग्रवाल, दीपिका मोतिका, स्मिता अग्रवाल मौजूद थीं।

मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा खेल परिसर संघ के अध्यक्ष बने दीपक

रांची। जयपाल सिंह मुंडा खेल संघ एवं खेल प्रेमियों की एक बैठक सोमवार को रखी गई। इनमें किक बॉक्सिंग, कराटे, चॉकबॉल, कॉर्फबॉल, टेनिस वॉलीबॉल, ताइक्वांडो, बास्केटबाल, वुडबॉल, नेटबॉल, थ्रो बॉल, मिक्सड नेटबॉल, फुटबॉल, योग आदि के खेल संघ के पदाधिकारी एवं खेल प्रेमी उपस्थित हुये। इसमें सभी खेलों का प्रशिक्षण सुचारू रूप से मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा खेल परिसर, कोर्ट रोड में पहले की भांति शुरूआत करने का निर्णय लिया गया। कुछ खेल का प्रशिक्षण चल भी रहा है। इसके लिए सभी की अनुमति से मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा खेल परिसर खेल संघ की एक समिती का गठन किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से संरक्षक आशुतोष द्विवेदी, अरूण कुमार, राजेंद्र प्रसाद, गोविंद झा, मिथलेश कुमार सिंह, अजय वर्मा, रिंकू वर्मा के अलावा अध्यक्ष–दीपक वर्मा को बनाया गया। उपाध्यक्ष–गौतम सिंह, गणेश कुमार गुप्ता, नीरज वर्मा, संतु कुमार, आचार्य प्रहलाद, ऋषि केश लाल महासचिव–ब्रजेश गुप्ता सह सचिव–अमरजीत कुमार, अनंत नाग चंदन, चंदन कुमार, पंकज जोसेफ, कार्यालय सचिव–अंश वर्मा सह कार्यलय प्रभारी –सचिन लोहार कोषाध्यक्ष रेशमा टोप्पो को बनाया गया।

पानी के लिए पानी-पानी हो रही रांची की जनता

निगम की गाड़ियों से भी नहीं बुझ रही लोगों का प्यास

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। भीषण गर्मी के दौरान रांची की जनता पानी के लिए पानी-पानी हो रही है। नगर निगम भी राजधानी के लोगों की प्यास बुझाने में फेल हो गयी है। नल और टैंकर से मुहल्ले-मुहल्ले पानी की आपूर्ति तो की जा रही है। परंतु पानी इतना गंदा जा रहा है कि लोग उस पानी को कपड़ा से छानकर भी यूज नहीं कर पा रहे हैं। वहीं, राजधानी के अलग-अलग हिस्सों में लगे एचवाईडीटी (टैंक के साथ बोरिंग) भी शोभा की बस्तु बनकर रह गयी है। अधिकांश मुहल्लों में लगाये गये एचवाईडीटी से सालों से पानी नहीं निकल रहा है। नतीजा निगम की ओर से मशीन तो लगा दी गयी, लेकिन बिजली नहीं दी जा रही है। बिजली की आपूर्ति पूर्व निगम की ओर से की गयी थी। परंतु बिल का भुगतान नहीं होने से विभाग ने बिजली काट दी। तब से टैंकर से बाहर पानी नहीं निकलता है। हां, कुछ लोग हाथ धोने को नल जरूर खोलते हैं। परंतु उनके हाथों की गंदगी हाथ में लगी होती है।

चैम्बर में कार्यशाला का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। फेड्रेशन ऑफ झारखण्ड चैम्बर ऑफ कॉमर्स की स्किल डेवलपमेंट उप समिति द्वारा आईटी उपसमिति के सहयोग से अध्यक्ष किशोर मंत्री की अध्यक्षता में कार्यशाला का आयोजन हुआ। उन्होंने कहा कि एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर मार्ग ईआरपी, टैली ईआरपी में व्यापारियों को हो रही परेशानी को दूर करने एवं अपने व्यापार को और अधिक सुगम बनाने के उद्देश्य से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है।

बैठक में व्यवसायिक संगठनों एवं उनके प्रतिनिधियों ने अपनी जिज्ञासा को पैनल के सामने रखा जिसका समाधान विशेषज्ञों ने किया। कार्यकारिणी के सदस्य रोहित पोद्दार ने यह सुझाव दिया कि अगली बैठक में ऑनलाइन जुड़ने की भी सुविधा हो जिससे झारखण्ड के लोग भाग लेकर अपनी समस्या एवं जिज्ञासा का समाधान पा सकें। आईटी उप समिति के चेयरमैन मनोज कुमार मिश्रा ने कहा कि अगली बैठक में सभी कंपनी के एकाउंटेंट्स को बुलाया जायें ताकि सॉफ्टवेयर में हो रही परेशानी को सुलझाया जा सके। यह भी कहा गया कि एक डेमो सेशन इन सॉफ्टवेयर का भी होना चाहिए। इस उप समिति चेयरमैन संतोष अग्रवाल ने यह जानकारी दी कि जल्द ही एक वृहद् कार्यशाला के आयोजन की रूप रेखा तैयार की जाएगी जिसमें व्यपारियों द्वारा इस्तेमाल किये जा रहे किसी भी तरह के एकाउंटिंग सॉफ्टवेयर के प्रशिक्षण एवं नवीनतम फीचर्स एवं अपडेट पर विस्तृत जानकारी दी जाएगी, जिससे कि ज्यादा से ज्यादा व्यावसायिक संगठनों को इसका लाभ प्राप्त हो सके। बैठक में चैम्बर अध्यक्ष किशोर मंत्री, कार्यकारिणी सदस्य रोहित पोद्दार, उप समिति के चेयरमैन संतोष अग्रवाल, आईटी उप समिति के चेयरमैन मनोज कुमार मिश्रा, राजीव प्रकाश चौधरी, राजू कुमार (टैली ईआरपी),अनुव्रत चटर्जी(मार्ग ईआरपी), सुरजीत सिंह, अभिजित कुमार, इन्द्रजीत सिंह, अभय कुमार, पूजा मुंडा, सुमन कुमार, दीप अग्रवाल, सौरभ कुमार, सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

बकाया वेतन की मांग को लेकर एचईसी कर्मियों ने डायरेक्टर कार्यालय घेरा

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। बकाया वेतन की मांग को लेकर एचईसी के कर्मचारियों ने सोमवार को कर्मचारियों ने एक बार फिर गेस्ट हाउस स्थित कार्यालय में डायरेक्टर ऑफ पर्सनल और डायरेक्टर ऑफ प्रोडक्शन का घेराव किया। ज्ञात हो कि एचईसी के कर्मचारी बकाया वेतन की मांग को लेकर पिछले कई महीनों से आंदोलनरत हैं। करीब डेढ़ साल से एचईसी कर्मचारियों और पदाधिकारियों का वेतन बकाया है लेकिन वेतन के भुगतान को लेकर प्रबंधन की ओर से कोई पहल नहीं की जा रही है। बता दें कि पिछले दिनों भी एचईसी के कर्मचारियों ने आक्रोश जाहिर करते हुए एचईसी हेडक्वार्टर के गेट के सामने विरोध-प्रदर्शन किया था। इस दौरान कर्मचारियों ने अधिकारी को कार्यालय से बाहर निकाल दिया था और उन्हें ऑफिस में बैठने पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके बाद अधिकारी एचईसी के अधिकारी गेस्ट हाउस में बैठकर काम कर रहे थे।

सैकड़ों कर्मचारियों ने गेस्ट हाउस स्थित कार्यालय का किया घेराव

जैसे ही एचईसी कर्मचारियों को यह पता चला कि अधिकारी गेस्ट हाउस में बैठकर काम कर रहे हैं और उनके बकाया वेतन को लेकर कोई संज्ञान नहीं ले रहे हैं तो सोमवार को सभी कर्मचारी और पदाधिकारी डायरेक्टर पर्सनल, डायरेक्टर ऑफ प्रोडक्शन का घेराव करने के लिए गेस्ट हाउस पहुंच गए। आक्रोशित एचईसी कर्मचारी सोमवार सुबह से गेस्ट हाउस स्थित कार्यालय को घेर कर बैठ गये जो शाम तक जारी रहा।

कर्मचारियों ने एचईसी अधिकारियों को ऑफिस में किया बंद : फिलहाल सभी कर्मचारी डायरेक्टर के पर्सनल मनोज लकड़ा और डायरेक्टर ऑफ प्रोडक्शन बीएस गर्ग को ऑफिस से बाहर नहीं निकलने पर रोक लगा दी है। इस दौरान एचईसी कर्मचारी बकाया वेतन के भुगतान के लिए एक निश्चित तारीख तय करने की बात पर अड़े हुए हैं। दोनों पक्षों की ओर से समस्या के समाधान को लेकर वर्तालाप जारी है।

बकाया वेतन भुगतान की तारीख तय करने की मांग पर अड़े कर्मचारी

इस दौरान एचईसी कर्मचारियों ने बताया कि हेडक्वार्टर का घेराव करने के बाद जब अधिकारियों ने उनकी नहीं सुनी तो मजबूरन उन लोगों को गेस्ट हाउस का घेराव करना पड़ा। पिछले एक साल से बकाया वेतन को लेकर लगातार कर्मचारी विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन प्रबंधन की तरफ से बकाया वेतन भुगतान को लेकर कोई संज्ञान नहीं लिया जा रहा है। एचईसी गेस्ट हाउस का घेराव करने पहुंचे कर्मचारियों ने कहा कि जब तक उनके बकाए वेतन के भुगतान करने की तारीख निर्धारित नहीं की जाएगी, तब तक कर्मचारी प्रदर्शन जारी रखेंगे।

ब्रदर्स ऐकेडमी ने नंबर वन संस्थान के रूप में खुद को किया स्थापित

आईआईटी और नीट अचीवर्स 2024 कार्यक्रम का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। ब्रदर्स ऐकेडमी ने अपनी विशिष्ट कार्यशैली और अथक परिश्रम से राँची शहर में नंबर वन संस्थान के रूप में खुद को स्थापित किया है और इस प्रतिष्ठा के अनुरूप सतत रूप से शिक्षण करता रहा है। ब्रदर्स एकेडमी ने विगत 12 वर्षों से शहर में आईआईटी जी और नीट के परिणामों में नए मानक गढ़ कर शहर को प्रतिष्ठित किया है। रविवार को आईआईटी और नीट अचीवर्स 2024 कार्यक्रम के तहत संस्थान की सफलता पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में आईआईटी परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करने वाले ब्रदर्स ऐकेडमी के छात्र- रोहन, तान्या, श्रेयश संजय, यश राज गुप्ता, तुषार धानुका, सिद्धांत, हर्षित आनंद, प्रियम राज, देव प्रकाश, आकाश कुमार, हर्षल राज एवं नीट 2024 की परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करने वाले छात्र-आयुष, तनिष्क राज, हर्षवर्द्धन, जान्या एवम अन्य ने भाग लिया।

सफल छात्रों ने परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों को सफलता के मूल मंत्र दिये : छात्रों ने अपने आगामी वर्ष के आईआईटी जी के अभ्यर्थियों को विषय के फंडामेंटल कॉन्सेप्ट को अच्छी तरह से समझने की सलाह के साथ प्रतिदिन कम से कम 6-7 घंटे के स्वाध्याय के रूटीन के बारे में बताया साथ ही उन्होने कहा कि परीक्षा के दिनों में कम से कम 12-14 घंटे का अभ्यास उन्होंने किया। छात्रों ने कहा कि शिक्षकों द्वारा सुझाए मार्ग पर सघन स्वाध्याय ही लक्ष्य पाने का एकमात्र सरल और सुगम सूत्र है।

स्पीड न्यूज

अकीदत के साथ मनायी गयी बकरीद

लोगों ने दी शुभकामनाएं

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। प्रखंड में सोमवार को ईद उल अजहा अकीदत के साथ मनाया गया। विभिन्न ईदगाह और मस्जिदों में नमाज अदा कर नमाजियों ने देश में अमन-चैन की दुआ मांगी। क्षेत्र में पुलिस मुस्तैद रही। लोगों ने इस्लाम धर्मावलंबियों को बकरीद की शुभकामनाएं दीं। इसमें पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत, राजकुमारी माधुरी मंजरी, कांग्रेस के प्रदेश महासचिव अजय नाथ शाहदेव, पार्टी नेत्री यशस्विनी सहाय, सीओ रवि कुमार, डीएसपी अरविंद कुमार, थानेदार शशिभूषण चौधरी, झामुमो नेता पृथ्वीनाथ शाहदेव, टीएसएम के प्रदेश अध्यक्ष महेश महतो, कांग्रेस नेता आलोक कुमार दुबे, विनय सिन्हा दीपू, सुनील सहाय, प्रमुख संगीता तिर्की, उप प्रमुख रियाजुल अंसारी, अभाविप परिषद के राष्ट्रीय महासचिव डॉ एल उरांव, जिप अध्यक्ष निर्मला भगत, आजसू नेता भरत कांसी, भाजपा के कामेश्वर महतो, एफएसएसीएस के चेयरमैन संजीव तिवारी व सांसद प्रतिनिधि बिमल उरांव शामिल हैं।

रातू ईदगाह में नमाज कर देश में अमन-चैन की दुआ मांगते नमाजी।

कमेटी ने जताया आभार

त्योहार के दौरान क्षेत्र में पूरे दिन शांति बनी रही। इस पर अंजुमन कमेटी ने संतोष व्यक्त किया है। अध्यक्ष अताउल्लाह अंसारी ने पुलिस,प्रशासन और विभिन्न समुदाय के प्रबुद्ध जनों के प्रति आभार जताया है। उन्होंने पर्व-त्योहार को मिलजुल कर मनाने और एक-दूसरे के धर्म का सम्मान किये जाने की वकालत की है।

अकीदत के साथ मना त्याग और बलिदान का त्योहार बकरीद

इटकी। त्याग व बलिदान का त्योहार बकरीद सोमवार को इटकी व आसपास के गांव में अकीदत के साथ मनाया गया। इटकी ईदगाह में कारी इनामुलहक की इमामत में सैकड़ों लोगों ने बकरीद की विशेष नमाज अदा की। खुतबा के बाद देश की एकता, अखंडता, भाईचारे, तरक्की, बुराई की खात्मे व विश्व शांति की सामूहिक दुआ की गयी। इसके बाद लोग एक दूसरे से गले मिलकर त्यौहार की मुबारकबाद दी और अपने घरों में कुर्बानी दी। तीन दिनों तक कुर्बानियों का सिलसिला जारी रहेगा। विधि व्यवस्था बनाये रखने के लिये इटकी थाना प्रभारी अभिषेक कुमार पुलिस बल के साथ मुस्तैद थे। इटकी ईदगाह के अलावा इटकी जामा मस्जिद, मदीना मस्जिद, मस्जिद ए जफर, मस्जिद ए सैयदा, मस्जिद ए जामेराशीद, मस्जिद ए आयशा, मस्जिद ए जोहरा सहित गड़गांव, कुरगी, कुंदी, रानिखटंगा में बकरीद की विशेष नमाज अदा की गयी। इसके सभी लोग एक-दूसरे को बकरीद की बधाई देते हुए आपस में गले मिले।

नगड़ी में हर्षोल्लास से मनी बकरीद

खबर मन्त्र संवाददाता

पिस्कानगड़ी। त्याग व बलिदान का त्योहार बकरीद सोमवार को नगड़ी सहित पूरे प्रखंड में अकीदत के साथ मनाया गया। मौके पर नगड़ी जमा मस्जिद में मौलाना अबु ओबैद, मदीना मस्जिद हाई स्कूल में मौलाना सज्जाद, बेलाल मस्जिद में मौलाना जेयाउर रहमान, एडचोरो जमा मस्जिद मौलाना नेयाज हैदर, साहेर जमा मस्जिद में मौलाना नेसार अहमदए बसील जमा मस्जिद में मौलाना मो मुस्तफा, न्यासराय जामा मस्जिद में मौलाना इमरान, जगरनाथपुर जामिया ईदगाह में हाफिज रिजवान, मटटोली ईदगाह में हाफिज सफीउल्लाह की इमामत में सैकड़ों लोगों ने बकरीद की विशेष नमाज अदा की। खुतबा के बाद देश की एकता, अखण्डता, भाईचारे, तरक्की व विश्व शांति की सामूहिक दुआ की गयी। इसके बाद लोग एक-दूसरे से गले मिलकर त्योहार की मुबारक बाद दीए और अपने घरों में कुर्बानी दी गयी।

नगड़ी में एक-दूसरे को बकरीद की बधाई देते लोग।

सिकिदिरी ईदगाह में पढ़ी गई ईद-उल-अजहा की नमाज

सिकिदिरी। त्याग, बलिदान और प्रेम का पवित्र पर्व ईद-उल-अजहा के अवसर पर सोमवार को सिकिदिरी, कुटे, महेशपुर, हेसाल भर गांवों के सैकड़ों मुस्लिम धर्मावलंबियों ने साढ़े सात बजे एक साथ ईद-उल-अजहा की विशेष नमाज पढ़ी। नमाज जामा मस्जिद कुटे के खतीब व इमाम कारी असलम फैजी ने पढ़ाई। नमाज अदा करने के बाद नमाजियों ने सामूहिक रूप से दिवंगत आत्माओं के साथ-साथ देश की खुशहाली और अमन व शांति के लिए दुआ मांगी। इस के बाद लोग एक-दूसरे के गले मिल कर पर्व की बधाई दी। तहरीक-ए-नौजवान ईदगाह कमेटी के संरक्षक सह पंचायत समिति सदस्य अमीर हमजा अंसारी, अध्यक्ष इब्राहिम खान, सचिव इसराफिल अंसारी, नूरहसन अंसारी, आमिर रजा, जुबैर अंसारी, शेख अनवर, ख्वाजा अलताफ, खुर्शीद अंसारी, खालिक खान, कांग्रेस नेता फारुक खान, अनवर अंसारी, शेख साजुद्दीन, तौसिफ आलम, मुस्लिम फैजी ने पर्व की बधाई दी।

रातू : सिमलिया में युवक पर छुरे से हमला, घायल

रातू। सिमलिया निवासी मंगल उरांव पिता धुरगुइ उरांव ने गांव के ही सरफराज अंसारी उर्फ सोनू पिता स्व सोबराती अंसारी तथा उसके अज्ञात दोस्त के विरुद्ध मारपीट कर घायल करने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है। जानकारी के अनुसार मंगल उरांव 16 जून की रात घर में सोया हुआ था। रात के 2 बजे कुछ तोड़ने की आहट सुनाई दी। वह अपने परिवार के साथ जब बाहर निकला तो देखा आरोपित सरफराज अपने दोस्तों के साथ उसकी चहारदीवारी को तोड़ रहा है। इसका विरोध करने पर आरोपितों ने छुरा से वार कर उसे घायल कर दिया और भाग निकले। पुलिस इसकी छानबीन कर रही है। घटना के बाद से सभी आरोपी फरार बताये जा रहे हैं।

नर्सिंग होम की दो छात्राएं स्कूटी से गिरकर घायल

मांडर। एन एच 39 मुख्य पथ पर स्थित मांडर बाजार टांड़ के निकट एक कुत्ते को बचाने के क्रम में स्कूटी पर सवार नर्सिंग की दो छात्राएं व एक छात्र सड़क पर गिरकर घायल हो गये। घटना सोमवार सुबह सात बजे की है। बताया जाता है कि प्रभात नगर हेसमी का आईडन जूलियन के 22 वर्ष मलती की रश्मि मेघा खलखो 23 वर्ष व करगे निवासी अलका खलखो 20 वर्ष एक ही स्कूटी में मांडर से कंदरी स्थित नर्सिंग कालेज जा रहे थे। इसी बीच उक्त स्थान के निकट अचानक सड़क पर उनके सामने एक कुत्ता आ गया जिसे बचाने के प्रयास में तीनों स्कूटी से गिरकर घायल हो गये। तीनों का उपचार रेफरल अस्पताल मांडर में कराया गया।

अगलगी से पीड़ित परिवार से मिलीं विधायक

चान्हो। आग लगी से पीड़ित परिवार से सोमवार को मिली विधायक शिल्पी नेहा तिर्की ने मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने आग लगने की घटना की पूरी जानकारी ली ग्रामीणों ने उन्हे बताया कि थाना क्षेत्र के रामदगा में रविवार दोपहर करीब एक बजे एक एक कर 9 घरों में आग लग गई थी जिससे लाखों का नुकसान हुआ है।मौके पर से ही विधायक ने रांची डीसी से फोन पर बात कर पीड़ित परिवारों को अविलंब उचित मुआवजा देने के लिए कारवाई शुरू करने का निर्देश दिया। गांव में अभी भी आग पूरी तरह नही बुझी थी इसलिए फिर से एक दमकल वाहन को बुलाकर आग पूरी तरह बुझाने का निर्देश भी दिया गया। इसके बाद विधायक ओपा गांव जाकर वहां पिछले दिनों हुए आगलगी के शिकार बिनोद साव के परिजनों से भी मुलाकात किया। मौके पर प्रमोद लालए प्रेम साहूए मन्ना उरांव आदि मौजूद थे। वहीं पूर्व डीसीसी डा परमेश्वर भगत भी रामदगा गांव पहुंच कर पीड़ित परिवार से मुलाकात किया और मुआवजा देने की मांग की। मौके पर विधायक ने कहा कि अगलगी से हुए नुकसान का मुआवजा पीड़ित परिवारों को दिलवाया जाएगा।

अनगड़ा में सौहार्दपूर्ण माहौल में मनी बकरीद

अनगड़ा। प्रखंड के विभिन्न इलाकों में त्याग और बलिदान का त्यौहार बकरीद शान्ति और सदभावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो गया। इस मौके पर मुस्लिम धर्मावलम्बियो ने विभिन्न मस्जिदों में अकिदतमन्दों ने ईदुल अजहा की नमाज अदा की और देश और दुनिया में अमन चैन और शांति की दु दुआएं मांगी। नमाज के बाद लोगों ने एक दूसरे से गले मिलकर उन्हें ईदुल अजहा की मोबारकबाद दिए।

मासूम बच्चों की अर्थी उठते ही नम हो गयी आंखें

परिजनों को सांत्वना देने पहुंचीं विधायक

खबर मन्त्र संवाददाता

इटकी। इटकी थाना क्षेत्र के सेमरा गांव में रविवार को तालाब मे डूबने से तीन बच्चे रविंद्र महली (09 वर्ष) प्रिंस तिग्गा (08 वर्ष) व हर्षित महली (06 वर्ष) की मौत हो गयी था। तीनो मृतकों का सोमवार को धर्मिक रीति रिवाज के साथ अंतिम संस्कार कर दिया गया। पोस्टमार्टम के बाद जैसे ही तीनो बच्चों का शव घर पहुंचा परिजन दहाड़ मार कर रोने लगे। जिससे गांव का वातावरण गमगीन हो गया। एक साथ तीन मासूम बच्चों का अर्थी उठने से लोगों के आंखें नम हो गई। बच्चों की मौत की खबर पाकर सोमवार को मांडर विधायक शिल्पी नेहा तिर्की मृतकों के परिजनों से मिलने सेमरा गांव पहुंची और अंतिम यात्रा में शामिल हुई। स्वजनों से मिलकर शोक संवेदना व्यक्त की और उनके माता पिता को ढांढस बंधाया। मौके पर इटकी सीओ विजय कुमार ने आपदा राहत कोष के तहत स्वजनों को सरकारी लाभ दिलाने का आश्वासन दिया। मौके पर महली जनजाति विमास मंच के अध्यक्ष हरिनारायण राम महली कोषाध्यक्ष हरि शंकर महली अनिरुद्ध लकड़ा रमेश महली दीप लकड़ा प्रदीप महली अशोक महली राजेश तिर्की सहित ग्रामीण मौजूद थे।

हर्षोल्लास से मना त्याग और बलिदान का पर्व बकरीद

सिकिदिरी ईदगाह में नमाज अदा करते मुस्लिम धर्मावलंबी।

सोनाहातू में 1.11 करोड़ की दो योजनाओं का शिलान्यास

खबर मन्त्र संवाददाता

सोनाहातू। विधायक सुदेश महतो ने सोमवार को सोनाहातू प्रखंड के जिलिंगसेरेंग पंचायत अंतर्गत जामडीह गांव में 1 करोड़ की लागत से डेढ़ किलोमीटर सड़क तथा कोकाडीह गांव 11 लाख की लागत से 700 फीट नाली निर्माण कार्य का शिलान्यास किये। शिलान्यास समारोह को संबोधित करते हुए विधायक सुदेश महतो ने कहा कि गांव में शिक्षा और स्वास्थ्य पर गुणात्मक सुधार किया जा रहा है। शिक्षा को लेकर हाई स्कूल और मिडिल स्कूल में स्मार्ट क्लासए स्टूडेंट्स बस सेवा, लाइब्रेरी आदि की सुविधा दिया जा रहा है। स्वास्थ्य को लेकर हर पंचायत में स्वास्थ्य उपकेंद्र को विकसित किया जा रहा है। हर घर में शुद्ध पेयजल पहुंचाने का काम किया जा रहा है। प्रखंड के सभी जर्जर सड़क का मरम्मत किया जायेगा। गांव में राजनीतिक जागरूकता लाने का काम किया गया है। योजनाओं के माध्यम से हम गांव में भरोसा देने का काम कर रहे है। हमारा लक्ष्य सकारात्मक सोच के साथ जनरेशन को विकसित करना है।

शिलान्यास के क्रम में मौजूद ग्रामीण

मौके पर इचागढ़ विधानसभा प्रभारी हेरलाल महतो, मुखिया अवनी सिंह मुंडा, सुनील सिंह, चितरंजन महतो, वीणा मुंडा रमेश मुड़ा, भरत दास, परमेश्वर महतो, शंभूनाथ महतो, अशोक महतो, बिरिंची पुराण, महकम महतो सहित विभाग के अधिकारी मौजूद थे।

चान्हो-मांडर में हर्षोल्लास से मना बकरीद का त्योहार

चान्हो/मांडर। क्षेत्र में बकरीद का त्योहार सोमवार को श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुस्लिम धर्मावलंबी ईदगाह एवं मस्जिदों में ईद उल अजहा की विशेष नमाज अदा की और राज्य और मुल्क के अमन चैन की दोवाएं मांगी गई। ज्ञात हो कि इस्लाम में मान्यता है कि हजरत इब्राहिम की अल्लाह के प्रति अपने बेटे इस्माइल की कुर्बानी की याद में बकरीद मनाई जाती है। बताया जाता है कि हजरत इब्राहिम अल्लाह में सबसे ज्यादा विश्वास रखते थे।

एक नजर में

भारती कॉलेज ऑफ एजुकेशन में स्पोकन इंग्लिश पर कार्यशाला

मांडर। कंदरी स्थित भारती कॉलेज ऑफ एजुकेशन में सोमवार को स्पोकन इंग्लिश एवं पर्सनालिटी डेवलपमेंट विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रांची स्पेनीन के निदेशक डॉ कुमार संजय मौजूद थे। कार्यशाला पर पीपीटी तथा व्याख्यान के माध्यम से विद्यार्थियों को जानकारी दी गयी। मुख्य अतिथि के रूप में यहां सचिव नितिन पराशर तथा शैक्षणिक सचिव सह प्राचार्या दीपाली पराशर उपस्थित थी। सचिव नितिन पराशर ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं के लिए स्पोकेन इंग्लिश एवं पर्सनालिटी डेवलपमेंट का कार्यशाला काफी मददगार साबित होगा और छात्रों में आत्मविश्वास के साथ-साथ अपने कैरियर तलाशने में भी काफी मदद मिलेगी। आवश्यकता इस बात की है कि लोग इसके बारे में जागरूक हों और अधिक से अधिक लाभ उठायें। कार्यशाला मे आये अतिथियों को महाविद्यालय की ओर से पौधा, बैग और शॉल देकर सम्मानित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन राकेश कुमार राय तथा मंच संचालन अनुपमा आइंद और प्रनीता कुमारी के द्वारा किया गया। मौके पर डीन उपेंद्र उपाध्याय, व्याख्याता मधुरंजन, विनीता चौधरी, विवेक राज जायसवाल, रिभा कुमारी, अमित कुमार, विनीत शर्मा, सुबोध शर्मा, सहाय सर, तुलसी दास, सुनील कुमार, इत्यादि उपस्थित थे।

मंत्री संजय सेठ का नागरिक अभिनंदन

राहे और सोनाहातू प्रखंड में भव्य स्वागत

खबर मन्त्र संवाददाता

सोनाहातू/राहे। रांची सांसद संजय सेठ को केंद्र सरकार में रक्षा राज्य मंत्री बनाए जाने का बाद राहे प्रखंड और सोनाहातू प्रखंड में नागरिक अभिनंदन किया गया। राज्य मंत्री राहे स्थित सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण किए। इस दौरान लोगों ने मंत्री को पुष्प गुच्छ और अंग वस्त्र देकर अभिनंदन किया गया। लोगों ने धोबी मोहल्ला में नाली निर्माण कराने की मांग रखी। राज्य मंत्री ने आश्वस्त किया कि आप सभी के आशीर्वाद से केंद्र में मोदी सरकार बना। लोगों के विश्वास और भरोसा को कायम रखने का प्रयास होगा। मौके पर डिप्टी मेयर संजीव विजयवर्गीय, वरिष्ठ नेता डॉ राजाराम महतो, ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष प्रताप कुशवाहा, जिला उपाध्यक्ष विनय महतो धीरज, नेत्री रेखा देवी, मंडल अध्यक्ष चितरंजन महतो, मनोज चटर्जी, कमलाकांत सिंह, सुरेंद्र प्रजापति, सुशांत सिंह, मेघनाथ महतो, ज्योति कोइरी सहित काफी संख्या में लोग मौजूद थे। इस दौरान राज्य मंत्री ने सोनाहातू प्रखंड के जामुदाग, बारूडीह, पारमडीह और बांकू गांव पहुंचे जहां लोगों ने पुष्प गुच्छ देकर अभिनंदन किए।

चान्हो के हर्रा गांव में हुई बैठक में सनातन क्षत्रिय महासभा का गठन

चान्हो। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा चान्हो-मांडर की इकाई से इतर सनातन क्षत्रिय महासभा का गठन सोमवार को हर्रा गांव में हुई बैठक में किया गया। इस बैठक में चान्हो, मांडर और गुमला जिले के भी कुछ गांव के समाज के लोग उपस्थित थे। बैठक के दौरान सर्वसम्मति से गिरधारी सिंह को इस महासभा का अध्यक्ष चुना गया। अध्यक्ष चुने जाने पर गिरधारी सिंह ने कहा कि आज क्षत्रिय समाज समय के साथ नहीं चल पा रहा है। समाज के युवाओं में शिक्षा का अभाव बेरोजगारी सहित कई बुराइयां देखने को मिल रही है। उनका सारा ध्यान समाज से इन बुराइयों को मिटाने पर रहेगा। समाज के युवा शिक्षित हों और समय के साथ उन्हें आगे बढ़ाने पर उनका पूरा ध्यान होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि केवल संगठन बना लेने से समाज का विकास नहीं हो सकता। समाज के लिए संगठन द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा भी नियमित अंतराल पर की जाएगी जिससे इस महासभा का फायदा समाज को जमीनी स्तर पर मिले। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद सदस्यों द्वारा गिरधारी को अध्यक्ष चुने जाने पर सम्मानित भी किया गया। मौके पर रामपाल सिंह गोपीनाथ सिंह शिवनारायण सिंह देवनारायण सिंह मौजूद थे।

अंग्रेज 11 ने जीता क्रिकेट टूर्नामेंट

खेल से दिया गया पर्यावरण बचाने का संदेश

बुढ़मू। पर्यावरण बचाने के संदेश के साथ आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता का फाइनल मैच रविवार रात्रि भगवान बिरसा मुंडा स्टेडियम में खेला गया। अनिता स्वीट्स और गोल्ड ब्रिक्स के सौजन्य से आयोजित बुढ़मू प्रीमियर लीग का फाइनल मैच रंजीत 11 और अंग्रेज 11 के बीच खेला गया। अंग्रेज 11 ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 8 ओवर में 61 रन बनायी। वहीं लक्ष्य का पीछा करते हुए रंजीत 11 की टीम 55 रन ही बना सकी। अंग्रेज 11 की टीम की ओर से फाइनल मैच में वारिश ने दो ओवर में 6 विकेट लेकर अंग्रेज 11 की टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई और मैन ऑफ द मैच बने।

विजेताओं के बीच पुरस्कार का वितरण

प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि जिप सदस्य रामजीत गंझू, उप प्रमुख हरदेव साहु, पूर्व मुखिया गोवर्धन लोहरा व अन्य अतिथियों ने विजेता टीम को नगद पचास हजार व शील्ड और उपविजेता टीम को तीस हजार नगद और शील्ड देकर पुरस्कृत किया। मैन ऑफ द मैच वारिश, बेस्ट बालर नदीम और बेस्ट बैट्समैन का पुरस्कार रंजीत को दिया गया। प्रतियोगिता के स्पांसर अनिता स्वीट्स और गोल्ड ब्रिक्स के कृष्ण कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में सिर्फ बुढ़मू पंचायत की 16 टीम ने भाग लिया और यह आयोजन स्थानीय प्रतिभा को निखारने और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए आयोजित किया गया था। फाइनल मैच में जितने रन बने बुढ़मू प्रीमियर लीग के माध्यम से उतना पौधरोपण किया जाएगा। इससे पहले अतिथियों का स्वागत पौधा देकर किया गया। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में कृष्ण, अमरेज, सूरज, रंजीत, पिंटू, साहिल, मुन्ना, किंटू, कलेश्वर, नदीम सहित अन्य का सराहनीय योगदान रहा।

बारिश के पानी से सड़क लबालब, विद्युत आपूर्ति बाधित

आफत की बारिश

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। एनएच-20 रामगढ़-रांची पथ शास्त्री चैक ओरमांझी के पास सड़क पर वर्षा का जल जमाव होने से तालाब जैसा दृष्य बन गया। जल जमाव के कारण वाहन चालकों के साथ आसपास के दुकान संचालकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। सोमवार शाम को हुई वर्षा से लोगों को तपती गर्मी से राहत मिली, वहीं खास कर बाइक सवारों को पानी भरे सड़क से गुजरने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। कई वाहन के तो स्टार्ट बंद हो जा रहे थें। वहीं कई लोगों अपनी बाइक को धक्का देकर पार कर रहे थें। वहीं महिलाएं को भी बाइक से उतर पैदल पार करना पड़ रहा था। अन्य वाहनों के गुजरने के दौरान सड़क के गंदे पानी की छिंटे से कपड़े भी गंदे हो रहे थें। इसके अलावे वर्षा के दौरान तेज हवा से आसपास क्षेत्र के कई पेड़ों की डली टुट कर गिर गए। वहीं शाम से विद्युत आपूर्ति भी बाधित रहा। वाहन चालकों को हो रही परेशानी को देखते हुए ओरमांझी थाना पुलिस को आना पड़ा, पुलिस को पानी जमाव के कारण सड़क पर बन रहे जाम की स्थिति से निपटना पड़ा। इधर दुकाने तो खुली थी पर सड़क में पानी भरे होने के कारण ग्राहक दुकान में पहुंच नही पा रहे। यह हालात एनएचएआई की लापरवाही के कारण हो रही है। ओवब्रिज निर्माण कार्य के दौरान पानी निकासी के ड्रेन बंद हो गए हैं, और वर्षा के पानी सड़क पर ही ठहर जा रहा है। ओवरब्रिज का निर्माण कार्य भी बंद है। वहीं ओवरब्रिज निर्माण जल्द नही होने व निर्माण कार्य पर रोक लगाने वालों के प्रति स्थानीय लोगों में नाराजगी देखी जा रही है।

ओरमांझी में बीच सड़क पर जल जमाव और गुजरते वाहन।

राजमहल उत्तर वाहिनी मां गंगा के तट पर भव्य महाआरती का किया गया आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

राजमहल। साहेबगंज जिले के अंतर्गत एकमात्र राजमहल प्रखंड क्षेत्र में उत्तर वाहिनी मां गंगा के तट पर परिवर्तन संस्था सोसाइटी रांची के द्वारा सूर्य देव छठ घाट परिसर में रविवार को संध्या भव्य महाआरती का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम सभी पदाधिकारी गण, अतिथि गण उत्तर वाहिनी मां गंगा तट पर उपस्थित होते ही तिलक लगाकर उन्हें भव्य स्वागत किया गया परिवर्तन संस्था रांची के कार्यक्रम प्रमुख आशी शर्मा द्वारा मिली जानकारी के अनुसार उन्होंने बताई कि कार्यक्रम संध्या 5:00 बजे शुरू हुई सर्वप्रथम कार्यक्रम राजमहल मुरली स्थित मॉडल कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर रंजीत कुमार सिंह के साथ आए हुए सभी छात्राओं द्वारा रंगोली एवं संस्कृति कार्यक्रम किया गया उसके बाद डी एफओ मनीष तिवारी पांडा के टीमों द्वारा मां गंगा की महाआरती की गई। इस दिन गंगा नदी में स्नान और पूजन करने का विशेष महत्व होता है वाराणसी, प्रयागराज, हरिद्वार, गढ़मुक्तेश्वर, मनीष तिवारी एवं अन्य पांडे आदि द्वारा बताया गया कि इस शुभ अवसर पर मां गंगा की विशेष पूजा-अर्चना के साथ आरती की जाती है। हिंदू धर्म में गंगा आरती का अपना अलग महत्व माना गया है। मां गंगा महा आरती के बाद लेजर शो, का कार्यक्रम किया जाएगा उसके बाद आखरी में प्रसाद वितरण कर कार्यक्रम का समापन किया जायेगा है। कार्यक्रम में उपस्थित परिवर्तन सोसाइटी के संस्था के अमित तिवारी, श्रेया तिवारी, डॉक्टर पूजा सिन्हा, आशी शर्मा, पूनम कुमारी, निशा कुमारी, अनिल कुमार, अमित कुमार, राजमहल व्यवहार न्यायालय के न्यायाधीश संजीव कुमार सिन्हा, ज्यूडिशरी मजिस्ट्रेट फर्स्ट श्रेणी मिस मानसी, डीडीसी सतीश चन्द्र, एसडीओ कपिल कुमार, एसडीपीओ विमलेश कुमार त्रिपाठी, सीओ अशोक कुमार सिन्हा, बीडीओ उदय कुमार सिन्हा, विधायक अनंत कुमार ओझा, बजरंगी प्रसाद यादव, राजमहल महिला थाना प्रभारी पूजा कुमारी एवं राजमहल विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

खास-ढ़ोरी मे दामोदर नदी पर गंगा दशहरा कार्यक्रम संपन्न

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो। रविवार की देर शाम फुसरो नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत खास-ढ़ोरी स्थित दामोदर नदी तट पर गंगा दशहरा नदी पूजन कार्यक्रम किया गया। पुजारी एस पी पांडेय ने सीसीएल कोलियरी कर्मचारी संघ के कार्यकारी अध्यक्ष सह संयुक्त सलाहकार संचालन समिति सदस्य एवं धनबाद एवं बोकारो विभाग प्रमुख रविंद्र कुमार मिश्रा को पूजा करा गंगा आरती कराया। लोगों ने नदी को प्रदूषण मुक्त करने का संकल्प लिया। बीएमएस नेता रविंद्र कुमार मिश्रा ने कहा कि क्षेत्र के लोगों को जागरूक कर दामोदर नदी को प्रदूषण से बचाना होगा। बीएमएस जिला मंत्री ललन मल्लाह ने कहा कि नदी पूजन, आरती, परिचर्चा, प्रसाद वितरण और संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अनीता देवी जानकी देवी सुमन देवी मोनी बाई राजा मल्लाह, रोहित कुमार, राखी देवी, रेखा देवी, सुनीता देवी, अनामिका कुमारी, मनीषा देवी, प्रीति कुमारी, दुलारी देवी, सुनीता देवी, रीता देवी, बसंती देवी, शांति देवी, गीता देवी, ज्योति देवी, पूजा व महिला-पुरुष उपस्थित थे।

एक नजर में

पाकुड़ में मनाया गया बकरीद का त्यौहार, नमाज अदा कर लोगों ने मांगी अमन-चैन की दुआ

पाकुड़। जिला मुख्यालय सहित सभी प्रखंडों में सोमवार को ईद-उल-अजहा बकरीद का पर्व परंपरागत तरीके से मनाया गया। त्याग और समर्पण के प्रतीक स्वरूप कुर्बानियां दी गई। बकरीद के नमाज अदा कर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अमन, शांति एवं खुशहाली की दुआएं मांगी। शहर के तांतीपाड़ा स्थित ईदगाह, बड़ी मस्जिद, मैदान-ए-खखाजा गरीब नवाज, हाटपाड़ा मस्जिद, छोटी मस्जिद समेत ग्रामीण इलाकों की ईदगाह व मस्जिदों में बकरीद की नमाज अकीदत के साथ अदा की गई। नमाज के बाद अमन शांति के लिए अल्लाह ताला से दुआएं मांगी और एक दूसरे को गले मिलकर बधाई दिया। जिले के हिरणपुर प्रखंड के हाथकाटि स्थित पहाड़ी ईदगाह में मौलाना हाफिज इकरामुल फैजी ने लोगो को ईद-उल-अजहा की नमाज अदा कराया। वहीं कमलघाटी स्थित जामिया सल्फिया मस्जिद में मौलाना इस्माइल मजाहिरी ने नमाज अदा कराई। जहां लोगों ने एक दूसरे को गले मिलकर बधाई दी। मौके पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। वही महेशपुर, लिट्टीपाड़ा, पाकुड़िया व आमरापाडा प्रखंड क्षेत्र में भी उत्साह के साथ बकरीद का त्यौहार मनाया गया। ईदगाह सहित चौक-चैराहो पर दंडाधिकारी के साथ पुलिस बल तैनाती की गई थी। अतिसंवेदनशील जगहों पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम थे।

साहिबगंज क्षेत्र के मुस्लिम समुदाय के लोगों ने शांतिपूर्वक मनाया बकरीद

बरहेट। सोमवार को मुस्लिम समुदाय के सबसे महत्वपूर्ण त्योहार ईद उल अजहा शांति पूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। जहां लोगों ने सुबह ईदगाह में ईद की नमाज अदा करने के बाद अपने नबी इब्राहिम अ व स के सुन्नत को अदा करने के लिए जानवर को कुबार्नी किया। वहीं क्षेत्र में विभिन्न ईदगाह बरहेट, पंचकठिया, फुलभन्गा, हड़वाडीह, गोपलाडीह, कदमा, भोगनाडीह, सन्मनी में इमामों द्वारा लोगों को कुबार्नी करने की तरीका व इससे जुड़ी प्रमुख बातों को लोगों को बताया। साथ ही सुरक्षा व्यवस्था को बरकरार रखने के लिए सभी ईदगाहों में पुलिस बल तैनात किए गए। वहीं लोगों ने ईद के नमाज के बाद लोगों ने एक दूसरे को ईद की बधाई एक दूसरे को गले मिलकर दिया।

फुसरो नप क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्रों में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया बकरीद का पर्व

बेरमो/फुसरो। बेरमो क्षेत्र में सोमवार को ईद-उल-अजहा (बकरीद) हर्षोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर फुसरो नप क्षेत्र सहित पिछरी, अंगवाली, चलकरी के सभी मस्जिदों व ईदगाहों में अकीदत के साथ सामूहिक रूप से नमाज अदा की गयी। नमाज अदा करने के लिए सुबह से ही लोगों का मस्जिद व ईदगाह की तरफ जाने का सिलसिला शुरू हो गया था। बिनोद बिहारी महतो फुटबॉल मैदान में हाफिज एहसानुल होदा व रहिमगंज स्थित जामा मस्जिद में इमाम इरफान कादरी नकवी ने नमाज अदा करायी। इसके बाद सभी ने एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। लोग समूह में रिश्तेदारों व दोस्तों के घर पहुंच गले मिल कर मुबारकबाद दे रहे थे। दूसरी और विधि व्यवस्था बनाये रखने के लिए प्रशासन की और से मस्जिदों व चौक-चौराहों के आसपास दंडाधिकारी व पुलिस बल को तैनात किया गया था।

जारंगडीह मे शांति और सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ बकरीद का पर्व

बेरमो/जारंगडीह। मुस्लिम समुदायों का दुसरा सबसे बड़ा त्योहार ईद उल अजहा यानी बकरीद का त्योहार सोमवार को जारंगडीह मे धुमधाम व हर्षोल्लास तथा शांति व सौहादपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। जारंगडीह ही नही बेरमो अनुमंडल के सभी क्षेत्रों में आज अहले सुबह से ही काफी चहल-पहल बढ़ गई थी। लोगों नये नये कपड़े पहन मस्जिद व ईदगाह की ओर निकल चुके थे जहां पहुच लोगो ने बकरीद की नमाज अदा की। वही शांति और व्यवस्था कायम रखने के लिए सुबह से ही पुलिस प्रशासन द्वारा सभी इबादतगाहो और ईदगाहों पर तथा चौक चौराहों बाजारो आदि मे भारी मात्रा में पुलिस बल की तैनाती की गई थी। बेरमो अनुमंडल के सभी क्षेत्रों में बकरीद का त्योहार शांति व सौहादपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो गया।

साहिबगंज जिले में हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है ईद उल अजहा (बकरीद) का पर्व

साहिबगंज। ऐसे तो ईद उल अजहा की तैयारी मुस्लिम समुदाय कई दिनों से चल रहा था पर सोमवार को वह सुबह आ ही गई जब मुस्लिम समुदाय के छोटे-छोटे मासूम बच्चे से लेकर बड़े बुजुर्ग सभी नहा-धोकर मस्जिदों में जाकर नमाज अदा किया एवं अपना ही नहीं पूरे भारतवर्ष के लिए अमन-चैन, सुख-समृद्धि के लिए दुआ मांगी। साहिबगंज बड़ी मस्जिद,राजमहल में अकबरी मस्जिद, बरहरवा में यतीमखाना ईदगाह, बरहेट में हरवाडीह ईदगाह में हजारो की संख्या में ईद का नमाज अदा किया। फिर बड़े-छोटे, गरीब-अमीर के भेद भाव मिटाकर एक दूसरे से गले मिलकर बकरीद का मुबारक बाद दिया।

हंसडीहा में शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ बकरीद

सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मी।

हंसडीहा। हंसडीहा थाना क्षेत्र में सोमवार को शांतिपूर्ण तरीके से बकरीद का त्योहार संपन्न हुआ। लोगों ने उल्लास के साथ त्योहार मनाया।साथ ही ईदगाह पर एक साथ नमाज अदा कर एक-दूसरे को गले लगाकर मुबारकबाद दी।थाना क्षेत्र अंतर्गत हंसडीहा, नोनीहाट, सिंहनी, बनियारा, भोड़िया, नवाडीह, रंगा, ठाड़ी, गंगवारा गांव में ईदगाह व मस्जिदों में ईद की नमाज अदा कर भाईचारा, तरक्की एवं शांति की दुआएं मांगी गई। सुबह छह बजे से ही थाना क्षेत्र अंतर्गत अलग-अलग गांवों में नमाज पढ़ने का सिलसिला शुरू हो गया था। इसके बाद कुबार्नी और दावत का दौर चला। इस दौरान शांति व्यवस्था कायम रख विधि व्यवस्था बनाए रखने के लिए संवेदनशील स्थान में दंडाधिकारी और पुलिस पदाधिकारी तैनात रहे। पुलिस प्रशासन अलर्ट मोड में रहे और क्षेत्र में भ्रमणशील रहकर विधि व्यवस्था पर नजर बनाए रहे। पुलिस की पेट्रोलिंग जीप क्षेत्र में घूमती रही। सोशल मीडिया पर नजर रखने के लिए भी पुलिस की विशेष टीम निगरानी करती रही। कोई अप्रिय घटना नहीं हो इसको लेकर हंसडीहा थाना प्रभारी संजय कुमार पुलिस बल के साथ स्वयं सक्रिय रहकर मानिटरिग कर सूचना लेते रहे।

बोकारो : ब्लड मैन हरबंस सिंह सलूजा ने 50 बार किया है रक्तदान

बोकारो। ह्यूमैनिटी सेवियर्स संस्था के संस्थापक अध्यक्ष स्व इंदर सिंह सलूजा व स्व सुरिन्दर कौर के पुत्र ब्लड मैन हरबंस सिंह सलूजा एवं उनकी टीम के सदस्य लगातार रक्तदान जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को रक्तदान से होने वाले फायदे के प्रति जागरूक करते हुए रक्तदान के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि जागरूकता के अभाव एवं कमजोर हो जाने की भ्रांतियों के कारण ही युवा रक्तदान से डरते हैं। जबकि नियमित रक्तदाता हर तीन माह पर रक्तदान कर गर्व महसूस करते हैं। रक्त की कमी से किसी की जान न जाने पाए यह हम सब की नैतिक जिम्मेदारी बनती है। सलूजा युवाओं को जागरूक कर प्रतिदिन दो से चार यूनिट रक्तदान करवा रहे हैं। ह्यूमैनिटी सेवियर्स के सदस्य साल में चार बार रक्तदान करते हुए लगातार सेवा कार्य में लगे हुए हैं। सलूजा की यह ख्वाहिश है कि वह मुख्यमंत्री से मिलकर अपने शहर में प्लाज्मा डोनेशन एवं प्लेटलेट्स डोनेशन की सुविधा उपलब्ध कराएंगे एवं ब्लड डोनेशन उपरांत रक्तदाता को ब्लड डोनर कार्ड भी दिलवाने की पूरी कोशिश करेंगे ताकि रक्तदाता को जरूरत पड़ने पर ब्लड बैंक से ब्लड उपलब्ध हो सके। श्री सलूजा पिछले 16 वर्षों से रक्तदान के क्षेत्र में अतुलनीय सेवा कार्य कर रहे हैं। इनके नेतृत्व में हजारों रक्तदान शिविरों के माध्यम से अभी तक 15000 यूनिट से भी अधिक रक्तदान कराया जा चुका है। इन्होंने खुद 50 बार रक्तदान किया है, इनके द्वारा किए गए सेवा कार्यों को देखते हुए इन्हें सैकड़ों राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं।

स्पीड न्यूज

बगदा निवासी सीधेश्वर प्रसाद वर्मा का निधन

बोकारो/कसमार। कसमार प्रखंड के बगदा निवासी 75 वर्षीय सीधेश्वर प्रसाद वर्मा का निधन ह्रदय गति रुकने से हो गया। उनके निधन की सूचना के बाद पूरे कसमार में शोक की लहर है। गोमिया विधायक डॉ लम्बोदर महतो जिप उपाध्यक्ष बबिता देवी व जिप के अमरदीप महाराज सहित अन्य ने शौक व्यक्त किया। विधायक ने कहा कि स्व वर्मा गाँव में अपने सरल स्वभाव से अलग पहचान बनाए हुए थे। गाँव व समाज के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मौके पर विभिन्न संगठन के लोगों ने दूरभाष से संपर्क कर उनके पुत्र गौतम वर्मा से बात कर ढाढस बंधाया। परिजनों ने बताया की आज सुबह वे उठ कर चाय पीकर करीब 8 बजे नहाने बाथरूम में घुसे जब काफी देर होने लगा तो घरवालों को किसी अनहोनी की आशंका हुई तो दरवाजा खटखटाया मगर जब कोई जवाब नहीं आया तब दरवाजा को तोड़ा गया। वे बाथरूम में बेसुध होकर गिरे हुए थे। आनन फानन में उन्हें नजदीकी अस्पताल ले जाया गया जहाँ डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

गोड्डा : बाइक व ऑटो में टक्कर, एक की मौत

गोड्डा। गोड्डा पत्थरगमा मार्ग के मध्य मालनी मोड़ के निकट एक ऑटो और बाइक में आमने-सामने की टक्कर हो गई। जिसमे एक व्यक्ति की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। एक गंभीर रूप से घायल हो गया।

साहिबगंज : टोटो और बाइक की भीड़ंत

कोटालपोखर। थाना अंतर्गत सिवलिडांगा में टर्निंग के पास मोटरसाइकिल और टोटो के बीच जोरदार टक्कर से मोटरसाइकिल चालक नारायण साहा पिता नेपाल साहा और नीलेश घोष पिता उत्तला घोष दोनो को पूरी तरह से घायल हो गया। जिसका घर अंगूठियां ग्राम बताया जा रहा है जो कोटालपोखर थाना अंतर्गत आता है। वही ग्रामीणों से पता चला कि मौके पर टोटो चालक फरार हो गया। वही घटना स्थल पर कोटालपोखर थाना के ए एस आई टिपन रविदास ने घायल व्यक्ति को प्राथमिक उपचार के लिए स्वास्थ्य केंद्र पाकुड़ भेज दिया है।

गिरिडीह सांसद की पहल पर लगा नया विधुत ट्रांसफार्मर

बेरमो। सोमवार को नावाडीह प्रखण्ड पंचायत के दहियारी ग्राम पुरानी दहयारी में स्थित ग्रामीण जलापूर्ति योजना मे लगे ट्रांसफर्मर विगत 15 दिनो से खराब रहने के कारण गांव मे जलापूर्ति बाधित था। पंचायत के जनप्रतिनिधि के द्वारा सांसद चन्द्र प्रकाश चौधरी को ट्रांसफर्मर खराब होने को लेकर अवगत कराया। माननीय सांसद महोदय ने समस्या को गंभीरता से लेते हुए बिजली विभाग एव जलापूर्ति विभाग के उच्च आधिकारियो से बात करके समस्या का निदान करवाया। नया ट्रांसफर्मर का उदघाटन सांसद प्रतिनिधि सुरेश महतो मुखिया धानेश्वरी देवी एवं जिला परिषद सदस्य महेन्द्र प्रसाद संयुक्त रूप से किया। मौके पर सुरेश महतो उप मुखिया पूजा नायक पं समिति सदस्य सरोजा देवी नितेश महतो ठाकुर महतो काली चरण साव घनश्याम पंडीत ईश्वर साव बासुदेव गोप कृष्णा नायक संतोष साव गंगा सागर तुरी उपिस्थित थे।

पाकुड़ पुलिस ने अवैध लॉटरी गिरोह का किया भंडाफोड़

खबर मन्त्र संवाददाता

पाकुड़। धीरे-धीरे और लॉटरी का गढ़ बनता जा रहा है। पहले तो केवल अवैध लॉटरी बेचे जाते थे। अब सहस देखिए कि जिला मुख्यालय में बिना किसी भय के नकली लॉटरी छपने और बिकने लगे हैं। पाकुड़ पुलिस ने इसकी भंडाफोड़ कर दिया है। इसकी जानकारी देते हुए इंसपेक्टर सह नगर थाना प्रभारी अनूप रोशन भंगेरा ने प्रेस वार्ता में बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिली थी की सिंधीपाड़ा के मकान में कुछ लोग अवैध रूप से लोटरी की छपाई कर रहे हैं। सूचना के आधार पर टीम गठित कर सूचना के सत्यापन हेतु बताए गए मकान में छापामारी की गई ।तो वहां से लगभग 3000 पीस नकली लॉटरी, पांच प्रिंटर एक कंप्यूटर सिस्टम, पेपर कटिंग मशीन, इनवर्टर, बैट्री, स्याही, टेबल लॉटरी छपाई हेतु कागज, टेबुल आदि बरामद किया गया। मौके से सभी आरोपी फरार हो गए। थाना प्रभारी ने बताया कि पश्चिम बंगाल के बीर ग्राम में रहने वाले राहुल मंडल नामक व्यक्ति ने अपने 6 से 7 साथियों के साथ मिलकर घटना को अंजाम दे रहा था। अपने को रेलवे स्टाफ बताकर एक मकान सिंधी पाड़ा में किराए पर लिया और पिछले 15 दिनों से नकली और अवैध लॉटरी की छपाई कर बेचने का काम करने लगे। कुछ लोगों को इसकी भनक लग गई थी। थाना प्रभारी ने बताया कि लॉटरी को जप्त कर अनुसंधान जारी कर दिया गया है । शीघ्र ही सभी लोग सलाखों के पीछे होंगे उन्होंने कहा कि पाकुड़ में अवैध लॉटरी गांजा आदि बेचना छोड़ दे। पुलिस को सूचना मिल रही अग्रसर कार्रवाई की जाएगी।

दुमका : गाड़ी रोककर बनाया बंधक, एक बाराती की मौत

खबर मन्त्र संवाददाता

गोपीकांदर। दुमका जिले के गोपीकांदर थाना क्षेत्र के कल्याणपुर-आमगाछी मार्ग पर सड़क किनारे एक खेत एक 32 वर्षीय युवक के शव को पुलिस ने सोमवार को जब्त किया है। मृतक की पहचान काठीकुंड थाना क्षेत्र के झिकरा गांव के संतोष राय (32) पिता चंद्रमोहन राय के रूप हुई है। मृतक के साथी राजकुमार राय और झिकरा गांव के लोगों ने बताया कि बीते रविवार की शाम काठीकुंड थाना क्षेत्र के झिकरा गांव से आमझारी-कल्याणपुर मार्ग होकर महेशपुर थाना क्षेत्र के बरकियारी गांव बरात गया था। सोमवार की सुबह सात बजे जब बरात वापस लौटा तो कल्याणपुर गांव के करीब 11 संख्या में युवकों ने बरात गाड़ी को रोककर 10 हजार रुपये का रंगदारी मांग किया। रविवार की शाम बरात जाने के क्रम में शामिल लोगों के द्वारा कल्याणपुर गांव पार करने के समय शोरगुल और हल्ला करके बरात पार हुआ था। करीब कई घण्टा गाड़ी रोकने से लोग चिलचिलाती धूप में भूख और प्यास से बराती तड़पते दिखे। बरातियों की गाजा-बाजा युवकों ने रख लिया और 10 हजार देने की बाद छोड़ने की बात कही। इसी बीच संतोष राय एक पेड़ के निचे सोया हुआ था। उनके साथी सत्यनारायण राय जब उसे उठाने गया तो देखा कि संतोष का मृत पड़ा हुआ है। काठीकुंड सर्किल इंस्पेक्टर श्यामानंद मंडल भी घटनास्थल पहुंचकर घटना की जानकारी ली।

बच्चा चोरी का आरोप लगाकर दामाद को पीटने वाले गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

शिकारीपाड़ा। दुमका जिला के शिकारीपाड़ा थाना क्षेत्र के जामबाद गांव में बच्चा चोरी के आरोप में गांव के दामाद को रस्सी में बांधकर ग्रामीणों ने जमकर पिटाई कर दी थी। सूचना पाकर शिकारीपाड़ा पुलिस रविवार की देर शाम घायल को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शिकारीपाड़ा में भर्ती कराया। घायल सोम किस्कू ने पुलिस को बयान दिया कि वह शिकारीपाड़ा थाना क्षेत्र के हीरापुर गांव का रहने वाला है। उसका ससुराल जामबाद गांव में है। वह अपनी पत्नी हीरामुनि हेम्ब्रम के साथ जामबाद गांव में रहकर मजदूरी कर जीवनयापन कर रहा है। कुछ दिनों से उसकी सरहज (साला की पत्नी) हेलेना मरांडी सोम से पैसा की मांग कर रही थी। वह नहीं दे पा रहा था। रविवार को इसी बात को लेकर दोनों के बीच झगड़ा भी हुआ था। दोपहर के बाद वह कुछ सामान दुकान से खरीदने के लिए प्रतापपुर गांव जा रहा था, तो उसका साला का लड़का भी उसके पीछे लग गया। जो लगभग 9 वर्ष का है। कुछ दूर जाने के बाद हेलेना शोर मचाने लगी की सोम मेरे बेटा को चुरा कर भाग रहा है। इसके बाद लोग सोम को पकड़ कर रस्सी में बांधकर पीटने लगे। पुलिस ने मामले में नामजद अभियुक्त बबुटा मुर्मू उर्फ अगस्टिन मुर्मू, किशुन टुडू, हेलेना मरांडी, गोडधा हांसदा, मांझी मरांडी, मंगल मरांडी एवं किशुन मरांडी को गिरफ्तार कर सोमवार को जेल भेज दिया है।

सीसीएल कथारा प्रक्षेत्र मे स्वच्छता पखवाड़ा शुरू

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो/कथारा। सीसीएल कथारा प्रक्षेत्र में कोयला मंत्रालय के निदेर्शानुसार 16 जून से 30 जून तक स्वच्छता पखवाड़ा-2024 के पालन के तहत सोमवार को तमाम विभागाध्यक्षों और अन्य कर्मचारियों की गरिमामयी उपस्थिति में कथारा महाप्रबंधक संजय कुमार द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा की शुरूआत करके स्वच्छता और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। मौके पर महाप्रबंधक कथारा क्षेत्र संजय कुमार ने कहा कि महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था। इस अवसर पर जीएम कुमार उप प्रबंधक (सी एस आर), कथारा क्षेत्र के द्वारा स्वच्छता शपथ दिलाई गई। शपथ में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा स्वच्छता को बढ़ावा देने तथा देश को स्वच्छ बनाने के लिए स्वच्छता मिशन में शामिल होने के लिए अन्य लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए वर्ष में 100 घंटे तथा सप्ताह में कम से कम 2 घंटे स्वेच्छा से समर्पित करने पर जोर दिया गया। क्षेत्र के महाप्रबंधक के नेतृत्व में शपथ में जीवन के सभी पहलुओं में सर्वोत्तम स्वच्छता प्रथाओं को अपनाने पर जोर दिया गया।

इस पखवाड़े के दौरान, सी सी एल, कथारा क्षेत्र अपने सभी परियोजनाओ और आस-पास के कार्यालय परिसरों में नियमित रूप से सफाई निरीक्षण करेंगे ताकि उचित स्वच्छता और रिकॉर्ड प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके। इसके अतिरिक्त, ऑफिसर्स क्लब एवं गेस्ट हाउस और उसके आस-पास की सफाई बनाए रखने के लिए स्वच्छता अभियान और स्वैच्छिक सफाई गतिविधियां (श्रमदान) आयोजित की जाएंगी।

इस अवसर पर महाप्रबंधक संजय कुमार ने सभी कर्मचारियों और परिवार के सदस्यों से विभिन्न प्रतियोगिताओं में पूरे मनोयोग से भाग लेने और इसे सफल बनाने की अपील की। इस कार्यक्रम में कथारा क्षेत्र के अर्जुन कुमार प्रसाद, जयंत कुमार, बिनोद कुमार, जय प्रकाश नारायण सिंह, संजय सिंह, सी बी तिवारी, एस के गुप्ता, चन्दन कुमार, निरंजन विश्वकर्मा, अजुराम, रोहित कुमार तथा अन्य कामगार एवं सुरक्षाकर्मी भी उपस्थित रहे।

डालमिया भारत फाउंडेशन ने माइक्रो-इंटरप्राइजेस का शुभारंभ कर कायम की एक नयी मिशाल

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। भारत की प्रमुख सीमेंट कंपनी डालमिया भारत लिमिटेड की सीएसआर शाखा डालमिया भारत फाउंडेशन ने ग्रामीण समुदायों को पूरी तरह से आत्मनिर्भर व आर्थिक रूप से सबल बनाने के निमित्त बोकारो के उत्तरी गोराबाली गांव में पांच छोटे व्यवसायों (माइक्रो-इंटरप्राइजेस) की शुरूआत की है। इन नए व्यवसायों में चार किराना दुकानें और एक कॉस्मेटिक दुकान शामिल हैं। यह प्रयास डीबीएफ के ग्राम परिवर्तन प्रोजेक्ट का हिस्सा एवं ग्रामीणों के आत्मनिर्भरता हेतु नई मिशाल साबित हो रही है। डालमिया भारत फाउंडेशन की ग्राम परिवर्तन योजना के तहत सभी लाभार्थियों को खुद के माइक्रो इंटरप्राइजेस स्थापित करने में मदद मिली। इतना ही नहीं डीबीएफ टीम ने उन्हें बैंक से लोन दिलाने में भी मदद की ताकि वे बिना किसी परेशानी के खुद का व्यवसाय शुरू कर सकें या इसका विस्तार कर सकें। इस अवसर पर स्थानीय समुदाय के बालेश्वर सिंह राठौर एवं डीबीएफ अधिकारी उपस्थित रहे। उक्त पहल पर टिप्पणी करते हुए डीसीबीएल बोकारो प्लांट के यूनिट हेड प्रिय रंजन ने कहा कि डालमिया भारत में हम जमीनी स्तर पर सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और स्थायी भविष्य के लिए अवसर पैदा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। गोराबाली में इन माइक्रो इंटरप्राइजेस की स्थापना कर हमारा लक्ष्य रोजगार के अवसर उत्पन्न करना स्थानीय निवासियों के जीवन स्तर में सुधार करना और क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना है।

एक व्यापक दृष्टिकोण के तहत हमारे ये प्रयास ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को गुणवत्तापूर्ण जीवन देते हुए सभी के विकास सामाजिक स्थिरता और समुदाय के सदस्यों को आत्मनिर्भर बनाने में योगदान देते हैं।

गोड्डा में शांति, प्रेम व सद्भावना के साथ मनाया गया बकरीद

खबर मन्त्र संवाददाता

गोड्डा। सोमवार को ईद उद अजहा, बकरीद के अवसर पर गोड्डा सहित जिले के अन्य क्षेत्रों से आपसी प्रेम शांति और सद्भावना के साथ त्यौहार मनाया गया। गोड्डा में आसानबनी, न्यू मार्किट सरकंडा चौक आदि स्थानों पर शांति और सुरक्षा के साथ मुस्लिम धर्मवलबियों ने सुबह अपने निकट के मस्जिदों में नमाज अता की और कुरबानी की रस्म अता की। प्रेम से गले मिलकर एक दुसरे को इस पर्व पर शुभकामनायें दी। गोड्डा शहरी क्षेत्र में अनुमंडल पदाधिकारी बैद्यनाथ उरांव, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी जे पी एन चौधरी, नगर थाना प्रभारी मधुसूदन मोदक, महिला थाना प्रभारी गुलाब किस्टोफा, भोला दास के साथ मुफ्फसिल थाना प्रभारी कृष्णा कुमार शाह के साथ उनके सहायक अधिकारी भी गश्त लगाते देखे गए। जिले के महगामा अनुमंडल पदाधिकारी के साथ एस डी पी ओ महगामा अपने अपने क्षेत्रों में विधि ब्यावस्था का जायजा लेते रहे।

खबर मन्त्र
रांची. मंगलवार .18 जून 2024
अभिव्यक्ति
epaper.khabarmantra.net

एचईसी का जिंदा करें

देश भर में औद्योगिक ईकाइयों के निमार्ण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला एचईसी अब बंदी के कगार पर है। नेहरू के जिस सपने को संयुक्त बिहार में रांची के स्वच्छ वातावरण में मूर्त रूप दिया गया था उसकी मौत अब तय मानी जा रही है। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्य में कांग्रेस समर्थित सरकार भी इस दिशा में कुछ करने में अपने को असहाय पा रही है। कई विशेषज्ञों का आज भी मानना है कि अगर एचईसी महाराष्ट्र,पंजाब या यूपी में होता तो इसे बंद करना आसान नहीं था क्योंकि इन राज्यों में राजनीतिक इच्छा शक्ति के साथ मजबूत नेता हैं। लेकिन झारखंड में भाजपा के सांसद और राज्य की कांग्रेस समर्थित सरकार में इस मदर फैक्ट्री को लेकर उत्साह का अभाव है। कामगारों को छह माह से वेतन नहीं मिला है वहीं एचईसी की मशीन एक -एक कर मरम्मत के नाम पर बाहर जा रही है लेकिन आ नहीं रही है। जमीन तो बिक ही रही है, हॉस्पीटल बिक चुका है अब एचएमबीपी का एसएफडब्लू शॉप भी मात्र दो करोड़ के अभाव में बंद कर दिया गया है। आत्मनिर्भर भारत का नारा देने वाली भाजपा सरकार ने इस कंपनी को बंद करने के सभी उपाय किये, चलाने का कोई ठोस इरादा नहीं दिखा पायी। हद तो यह की भेल के सीएमडी ही एचईसी के भी अंशकालिक सीएमडी है जिससे काम तेज होना संभव ही नहीं हैं। जब भी कोई बेहतर सीएमडी आया एचईसी लाभ में आया तब उसे हटा दिया गया। आखिर इस मदर कंपनी को जो केन्द्र सरकार के सभी रक्षा उपकरण और इसरो के कठिन सामग्री बनाने में सक्षम है इसे इस तरह क्यों बर्बाद करना चाहती है? इस दिशा में राज्य के नये रक्षा राज्य मंत्री सह सांसद संजय सेठ और भाजपा के सभी सांसदों से उम्मीद है कि वे गंभीर प्रयास करें। देश की शान उद्योगों की जान एचईसी जिंदा रह सके और आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा हो सके।

बढ़ती महंगाई

देश की थोक महंगाई मई में तेजी से बढ़कर 15 माह के उच्च स्तर 2.61 प्रतिशत पर पहुंच गई जबकि यह अप्रैल में 1.26 प्रतिशत ही थी। प्रतिकूल आधार प्रभाव और खाद्य वस्तुओं के दामों में तेजी से इजाफे के कारण थोक महंगाई बढ़ी। थोक महंगाई को थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) के रूप में मापा जाता है।मई में खाद्य उत्पादों की महंगाई 9.82 प्रतिशत रही, जबकि इसके एक साल पहले यानी मई 2023 में थोक महंगाई -3.61 प्रतिशत थी। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के शुक्रवार को जारी आंकड़े के अनुसार मई में थोक महंगाई के बढ़ने में ईंधन और बिजली के अलावा अन्य कारकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और इन कारकों की महंगाई सालाना आधार पर बढ़ी या मासिक आधार पर उनकी कीमत कम गिरी।खाद्य वस्तुओं में मुख्यतः सब्जियों (32.42 प्रतिशत), दाल (21.95 प्रतशत), अनाज (9.01 प्रतिशत), फल (5.81 प्रतिशत) और गेहूं (6 प्रतिशत) के दाम बढ़ने का असर थोक महंगाई पर देखा गया। वैसे तो इस माह के दौरान आलू (64.05 प्रतिशत), प्याज (58.05 प्रतिशत), धान (11.79 प्रतिशत) के दामों में गिरावट आई, फिर भी उनके दाम ऊपर बने हुए हैं। दूसरी तरफ प्रोटीन युक्त उत्पादों जैसे अंडे व मांस (0.68 प्रतिशत) और दूध (3.61 प्रतिशत) ने इस माह के दौरान कुछ राहत प्रदान की। अभी तक दक्षिण पश्चिम मॉनसून के बढ़ने की गति असमान रही है। दक्षिणी क्षेत्र में अत्यधिक बारिश हुई है। गर्मी की मार झेल रहे उत्तर पश्चिम और पूर्व और उत्तर पूर्व भारत में बारिश कम हुई है। सभी राज्यों में खरीफ की समय पर बोआई के लिए समय पर बारिश होनी आवश्यक होती है। इसके अलावा खरीफ फसल का न्यूनतम समर्थन मूल्य भी लंबित है और इससे बोआई का रुझान भी प्रभावित होता है। निश्चित ही यह आम आदमी के लिये परेशानी का सबब है।

बरसा का हर बूंद बचाकर ही हम बचेंगे

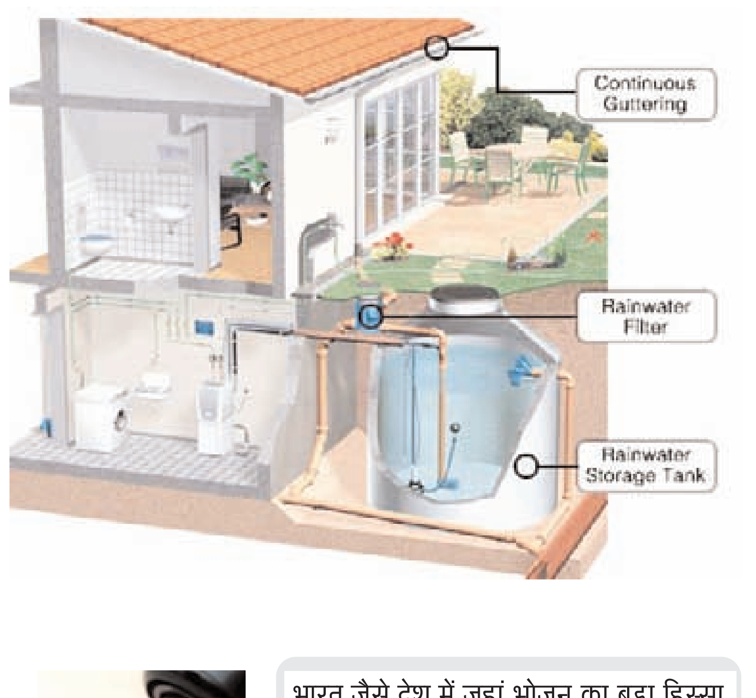

हमने जल को अमृत माना नदियों को भगवान का दर्जा दिया। पानी की महत्ता स्वीकार की। यानी हमें हर वह काम करना होगा जो करने की जरूरत है। वर्षा-जल की हरेक बूंद को जमा कर पानी की उपलब्धता बढ़ानी है, इसका इस्तेमाल इतने कारगर ढंग से करना है कि वर्षा-जल की हरेक बूंद का इस्तेमाल हमारे भोजन या फ्लश होने वाले पानी में हो। हमें यह भी सुनिश्चित करना है कि इस्तेमाल पानी की हरेक बूंद का पुनर्चक्रण हो और प्रदूषण से वह खराब न हो। हम यह बात पहले से जानते हैं और अमल में भी लाते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन के दौर में इतना ही काफी नहीं होगा। हमें ये सारे काम कहीं अधिक तेजी से और व्यापक स्तर पर अलग ढंग से करने होंगे।

हमें मालूम है कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का ताल्लुक गर्मी और कम-ज्यादा बारिश से है। इन दोनों का जल चक्र से सीधा सह-संबंध है। इस तरह जलवायु परिवर्तन के असर को कम करने के लिए पानी एवं उसके प्रबंधन पर ध्यान देना होगा।

हमें पता है कि हर नया साल इतिहास का सर्वाधिक गरम साल बनता जा रहा है और पिछले रिकॉर्ड को तोड़ता जा रहा है। भारत में ओडिशा के कुछ हिस्सों में तापमान फरवरी की शुरूआत में ही 40 डिग्री सेल्सियस को पार कर गया था। उत्तर भारतीय राज्य बढ़ती गर्मी एवं सामान्य से अधिक तापमान के सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ रहे हैं। खास बात यह है कि यह सब 'ला नीना' के साल में हो रहा है। ला नीना प्रशांत महासागर की वे जल धाराएं हैं जो दुनिया का तापमान कम करने के लिए जिम्मेदार मानी जाती हैं। लेकिन भारत के मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि वैश्विक ताप वृद्धि ने ला नीना के इस शीतकारी प्रभाव को कम कर दिया है।

बढ़ती हुई गर्मी का जल सुरक्षा के लिहाज से कई मायने हैं। पहला, इसका मतलब है कि जल इकाइयों से अधिक वाष्पीकरण होगा। यानी हमें न सिर्फ लाखों जल निकायों में पानी जमा करने पर ध्यान देने की जरूरत है बल्कि वाष्पन के कारण होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए भी योजना बनानी होगी। एक विकल्प भूमिगत जल भंडारण यानी कुओं पर काम करने का है। भारत लंबे वक्त से भूमिगत जल प्रणालियों के प्रबंधन को कम तवज्जो देता रहा है क्योंकि सिंचाई विभाग की समूची अफसरशाही ही नहरों एवं अन्य सतही जल प्रणालियों पर आधारित है। लेकिन जलवायु परिवर्तन एवं पानी की भारी किल्लत के इस दौर में इसे बदलने की जरूरत होगी। हमें तालाबों, पोखरों एवं नहरों से होने वाले नुकसान की भरपाई के तरीके तलाशने होंगे। ऐसा नहीं है कि वाष्पीकरण से पहले नुकसान नहीं होता था लेकिन तापमान बढ? के साथ इसकी दर बहुत ज्यादा हो गई है। हमें योजना बनाने और अधिक काम करने की जरूरत है।

- सुनीता नारायण

> भारत जैसे देश में जहां भोजन का बड़ा हिस्सा अब भी वर्षा-सिंचित इलाकों में ही पैदा होता है, वहां पर मिट्टी की नमी कम होने से भूमि अपरदन तेज होगा और धूल का बनना भी बढ़ जाएगा। जल प्रबंधन को वनस्पति नियोजन के साथ तालमेल बिठाकर चलना होगा ताकि मिट्टी में पानी को रोके रखने की क्षमता बेहतर हो, अधिक देर तक चलने वाली तीव्र गर्मी के दौर में भी।

दूसरा, बढ़ती गर्मी का मतलब है कि मिट्टी में नमी कम होती जाएगी जिससे जमीन में धूल की मात्रा बढ़ जाएगी और सिंचाई की जरूरत बढ़ती जाएगी। भारत जैसे देश में जहां भोजन का बड़ा हिस्सा अब भी वर्षा-सिंचित इलाकों में ही पैदा होता है, वहां पर मिट्टी की नमी कम होने से भूमि अपरदन तेज होगा और धूल का बनना भी बढ़ जाएगा। जल प्रबंधन को वनस्पति नियोजन के साथ तालमेल बिठाकर चलना होगा ताकि मिट्टी में पानी को रोके रखने की क्षमता बेहतर हो, अधिक देर तक चलने वाली तीव्र गर्मी के दौर में भी।

तीसरा, साफ है कि गर्मी बढ़ने से पानी का इस्तेमाल बढ़ जाएगा क्योंकि पीने एवं सिंचाई के साथ ही जंगलों या इमारतों में लगी आग बुझाने के लिए भी ज्यादा पानी की दरकार होगी। हम दुनिया के कई हिस्सों एवं भारत में भी जंगलों में भीषण आग लगने के डरावने दृश्य देख चुके हैं। तापमान जैसे-जैसे बढ़ता जाएगा, यह सिलसिला भी तेज होता जाएगा। जलवायु परिवर्तन से पानी की मांग बढ़ेगी लिहाजा यह और भी जरूरी हो जाता है कि हम पानी के साथ अपशिष्ट जल को भी बरबाद न करें।

सच यह है कि अत्यधिक बारिश होने की बढ़ती घटनाओं के संदर्भ में भी जलवायु परिवर्तन का असर दिख रहा है। हम बारिश के एक बाढ़ के तौर पर आने की भी अपेक्षा करें। इस तरह बाढ़ों का एक चक्र पूरा होने के बाद सूखे की स्थिति और भी गंभीर हो। भारत में पहले से ही साल में बारिश कम दिन होती है। साल भर में औसतन सिर्फ 100 घंटे की ही बारिश होती है। लेकिन जलवायु परिवर्तन बारिश वाले दिनों की संख्या और कम करेगा। वैसे भारी बारिश वाले दिनों की संख्या बढ़ जाएगी।

इसका जल प्रबंधन की हमारी योजनाओं पर बड़ा असर होगा। हमें बाढ़ प्रबंधन पर अधिक शिद्दत से गौर करने की जरूरत है, नदियों के तटबंध बनाने के साथ ही बाढ़ के पानी को भूमिगत एवं सतहीय जलभंडार निकायों-कुओं एवं तालाबों में जमा किया जा सके। लेकिन हमें वर्षाजल को इका करने के बारे में अलग तरह से योजना बनाने की जरूरत है।

फिलहाल मनरेगा के तहत लाखों की संख्या में बन रहे तालाब एवं पोखर सामान्य बारिश के हिसाब से डिजाइन हैं। लेकिन अब भारी बारिश की बात आम होने के साथ ही ये जल भंडार संरचनाओं को भी नए सिरे से डिजाइन करने की जरूरत है ताकि वे लंबे समय तक लबालब रहें। मूल बात यह है कि जलवायु परिवर्तन के दौर में हमें पानी की हर बूंद बचानी होगी, चाहे बारिश का पानी हो या बाढ़ का पानी।

हमें पानी एवं उसके प्रबंधन को लेकर पहले जुनूनी होना था लेकिन अब तो सेहत एवं दौलत के आधार पानी को लेकर हमें संकल्पित एवं सुविचारित रवैया अपनाना होगा। यह अपने भविष्य को बनाने-बिगाड़ने की बात है।

(लेखिका सेंटर फॉर साइंस ऐंड एनवायरनमेंट से संबद्ध हैं)

खास बात

गुमनामी से शिखर तक खो-खो

सुधांशु मित्तल

यह खेल प्राचीनकाल से प्राकृतिक घास या मैदान में नियमित रूप से पूरे भारत में खेला जाता है। 'खो' मराठी शब्द है जिसका अर्थ है जाओ और पीछा करो। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों द्वारा खेले जाने वाला 'खो खो' प्राचीन भारत का पारंपरिक खेल माना जाता है और यह ग्रामीण क्षेत्रों में कबड्डी के बाद दूसरा रोमांचक टैग गेम है। 'खो खो' की उत्पत्ति भारत में मानी जाती है। इतिहास में इसका वर्णन मौर्य शासनकाल (चौथी ईसा पूर्व) में मिलता है। 'खो खो' खेल का वर्णन महाभारत काल में भी किया गया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि महाभारत काल में 'खो खो' रथ पर खेला जाता था जहां प्रतिद्वंद्वी रथ पर सवार होकर एक-दूसरे का पीछा करते थे, जिसे 'रथेरा' कहा जाता था। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि महाभारत युद्ध के 13वें दिन गुरु द्रोणाचार्य द्वारा बनाए गए चक्रव्यूह में प्रवेश करने के लिए अभिमन्यु ने 'खो-खो' में इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति का उपयोग किया था और खो-खो के कौशल का उपयोग करके कौरव वंश को भारी नुकसान पहुंचाया था।

लोकमान्य तिलक द्वारा गठित डेक्कन जिमखाना पुणे ने पहली बार इस खेल के विधिवत नियम तय किए। वर्ष 1923-24 में इंटर स्कूल स्पोर्ट्स कम्पटीशन की स्थापना की गई जिसके माध्यम से ग्रामीण स्तर पर 'खो-खो' को लोकप्रिय करने के लिए कदम उठाए गए। वर्ष 1928 में भारत की पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए गठित 'अखिल भारतीय शारीरिक शिक्षण मंडल' द्वारा वर्ष 1935 में इस खेल के नियमों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया।

आधुनिक काल में 'खो-खो' खेल को महाराष्ट्र के अमरावती के हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल के तत्वाधान में सबसे पहले 1936 के बर्लिन ओलंपिक्स में प्रदर्शित किया गया था तथा इस खेल को अडोल्फ हिटलर ने जमकर सराहा। वर्ष 1938 में अखिल महाराष्ट्र शारीरिक शिक्षण मंडल ने 'खो-खो' खेल की दूसरी नियम पुस्तिका प्रकाशित की।

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में यात्रियों को लेकर जा रही गाड़ी के अलकनंदा नदी में गिरने से कई लोगों की मृत्यु की अत्यंत दुःखद सूचना मिली। ईश्वर दिवंगत आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करे। इस हादसे में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूँ।

-सुदेश महतो, आजसू

आपके ट्वीट

अपने रांची लोकसभा क्षेत्र के परिवारजनों से मिलना सुखद अनुभूति देने वाला है। आपका प्रेम, आपका आशीर्वाद, आपका साथ विकसित भारत के संकल्प को पूर्ण करने में मुझे सामर्थ्य प्रदान करेगा। आप सबका हृदय से आभार और अभिनंदन। **- संजय सेठ**

स्नातकोत्तर प्रशिक्षित शिक्षक प्रतियोगिता परीक्षा 2023 में उत्तीर्ण हुए अभ्यर्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं। अगली पीढ़ी को शिक्षित बनाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। आइये, बेहतर झारखंड बनाते हैं। **- चंपई सोरेन, सीएम**

मन की मजबूती

धर्म-प्रवाह

अनुराग वत्स

नचिकेता वहां तीन दिन तक बगैर खाए-पिए उनका इंतजार करता रहा। यम आए। जब जाना कि अतिथि एक बालक है और तीन दिन से उनकी राह देख रहा था, तो प्रसन्न होकर कहा, ह्यहमसे तीन वरदान मांग लो। कम उम्र के नचिकेता ने परिपक्व समझ दिखाते हुए यम से पहले वर के रूप में यह मांगा कि वह जब यहां से लौटे, तो उसके पिता उसे देख खुश हो जाएं।

यानी उसने जीवन मांग लिया। फिर उसने जिज्ञासा प्रकट की कि मुझे उस आग के बारे में बताएं, जिससे गुजरकर इंसान स्वर्ग पहुंचता है। तीसरे मुझे उस अमरता के बारे में बताएं, जिसकी चाह हर इंसान को मृत्यु के बाद रहती है। नचिकेता के सवालों से यमराज असमंजस में पड़ गए। जीवन का वर तो दे दिया लेकिन बाकी बातें उन्हें झमेले वाली लगीं। उन्होंने बालक का मन बदलने के लिए कहा कि ऐसी जिज्ञासाओं की बजाय तुम धन-दौलत, ऐशो-आराम की तमाम चीजें मांग लो। मजे से रहो।

भला यह कैसी अटपटी जिज्ञासा लेकर बैठ गए। लेकिन नचिकेता टस-से-मस नहीं हुआ। तब यम ने उसकी सारी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

सवाल है कि यम यानी मृत्यु के सामने नचिकेता जीवन और उसकी तमाम सुख-सुविधाएं न मांगकर अपनी जिज्ञासा पर क्यों अटल रहा? इसका जवाब नचिकेता पर यादगार कविता-पुस्तक आत्मजयी लिखनेवाले कुंवर नारायण यूं देते हैं, नचिकेता का हठ एक दृढ़ जिज्ञासु का हठ है।

कॉटून वर्ल्ड

वैश्विक नेताओं की मुलाकात ...

साभार कॉर्टन मूवमेंट डॉटकॉम

लेटर टू एडीटर

आनलाइन शिक्षा

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव के अनुसार कोविड-19 की अवधि में शिक्षा को बचाना इस समय सबसे मूल्यवान है। इस अवधि के दौरान शिक्षा बहुत अधिक प्रभावित हुई है। ऑनलाइन शिक्षा ही शिक्षा प्रदान करने का विकल्प बन गई है। शिक्षकों और छात्रों के बीच प्रत्यक्ष संपर्क समाप्त हो गया है। वर्तमान में देश ऐसी शिक्षा के लिए तैयार नहीं है।

-नरेंद्र शर्मा, रांची

शीघ्र पलायन रोकें

महंगाई में बढ़ोतरी से व्यापार, व्यवसाय और औद्योगिक क्षेत्रों में भय का माहौल है। इस बार फिर महानगरों से मजदूरों का पलायन शुरू हो गया है। ऐसी स्थिति में मजदूरों को अपने कार्यस्थल पर रोकने की योजना बनाए जाने की महती जरूरत है, जिससे तालाबंदी में भी उत्पादन प्रभावित न हो। सरकार को जल्द ही पहल करनी होगी।

-अमृतलाल, हजारीबाग

तेल के बढ़ते दाम से प्राप्त पैसा आधारभूत संरचना में लगाये सरकार

भरत झुनझुनवाला

जनता तेल के बढ़ते दामों को लेकर परेशान है। बीते चार वर्षों में विश्व बाजार में कच्चे ईंधन तेल का दाम लगभग 40 से 80 डालर प्रति बैरल रहा था। इस सम्पूर्ण अवधि में भारत में पेट्रोल का दाम लगभग 80 से 110 रुपये प्रति लीटर रहा था। वर्तमान में विश्व बाजार में कच्चे तेल का दाम 65 डालर प्रति बैरल है। इसलिए आशा की जाती थी कि भारत में पेट्रोल का दाम भी लगभग 90 से 110रुपये प्रति लीटर ही रहेगा। लेकिन अपने देश में पेट्रोल का दाम 90 से 100 रुपये प्रति लीटर हो गया है जो कि प्रथम दृष्ट्या अनुचित दिखता है।

वर्तमान में तेल के ऊंचे दाम को समझने के लिए कोविड के प्रभाव को समझना होगा। बीते वर्ष जून के माह में कोविड संकट के कारण तमाम देशों ने लॉकडाउन लगा दिए थे, जिससे यातायात और उद्योग ठप हो गये थे और विश्व बाजार में कच्चे तेल की मांग काफी गिर गयी थी। यहां तक कि कई तेल कम्पनियों ने जिस तेल को जहाजों पर भर रखा था, उसे वे शून्य मूल्य पर भी बेचने को तैयार थे, ताकि जहाज को खाली किया जा सके और जहाज को खड़े रखने का डैमरेज न पड़े। उस समय अपने देश में भी आयातित कच्चे तेल का दाम कुछ कम हुआ था। बताते चलें कि कुछ तेल का आयात तत्काल बाजार भाव पर किया जाता है लेकिन अधिकतर तेल का आयात लम्बी अवधि के समझौतों के अंतर्गत किया जाता है, जिसके अंतर्गत आयात किये गये तेल का मूल्य

सामयिक

तात्कालिक बाजार भाव से प्रभावित नहीं होता। इसलिए यदि बाजार में तेल का भाव शून्य हो गया तो इसका अर्थ यह नहीं है कि शून्य मूल्य पर भारत मनचाही मात्रा का तेल खरीद सके। यदि भारत कुछ तेल शून्य मूल्य पर खरीदता भी है तो भी लम्बी अवधि के समझौतों के अंतर्गत पूर्व में निर्धारित मूल्यों पर तेल को खरीदते रहना पड़ेगा। फिर भी बीते वर्ष कोविड संकट के समय भारत द्वारा खरीदे गये तेल के मूल्य में गिरावट आई थी। उस समय भारत सरकार ने तेल पर वसूल की जाने वाली एक्साइज डयूटी को बढ़ा दिया।

तेल के ऊंचे दाम का प्रभाव मुख्यतः ऊपरी वर्ग पर पड़ता है। अपने देश में तेल के मूल्य का ऊपरी और कमजोर वर्गों पर अलग-अलग प्रभाव के आंकड़े उपलब्ध नहीं हुए लेकिन अध्ययन के अनुसार यानी ऊपरी वर्ग पर तेल के बढ़े हुए मूल्यों का सोलह गुना प्रभाव अधिक पड़ता है। यह कहना उचित होगा कि तेल के ऊंचे मूल्यों का विरोध करने के लिए ऊपरी वर्ग द्वारा निचले वर्ग को ढाल के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

तेल के ऊंचे मूल्यों का लाभ पर्यावरण का है। खपत कम होने से तेल से उत्सर्जित कार्बन की मात्रा कम होगी, जिससे धरती के तापमान में वृद्धि कम होगी और अपने देश समेत सम्पूर्ण विश्व में बाढ़ और सूखे जैसी आपदाएं कम होंगी। चौथा और संभवतः प्रमुख लाभ यह है कि कोविड संकट के दौरान सरकार का वित्तीय घाटा बहुत बढ़ गया है। इसलिए सरकार को जनता पर टैक्स लगा कर इस घाटे की पूर्ति तो करनी ही पड़ेगी। प्रश्न सिर्फ यह बचता है कि सरकार तेल पर टैक्स लगाकर अपने घाटे की भरपाई करेगी या फिर कपड़े और कागज पर लगाकर। असल में कपड़े और कागज जैसी आवश्यक एवं उपयोगी वस्तुओं के स्थान पर तेल पर अधिक टैक्स वसूल करना ही उचित होगा। विशेषकर इसलिए कि तेल पर टैक्स वसूल करने का बोझ आम आदमी पर कम और समृद्ध वर्ग पर ज्यादा पड़ेगा। तेल के ऊंचे मूल्य सही हों तो भी सरकार की आलोचना इस बिंदु पर की जानी चाहिए कि तेल के ऊंचे दामों से अर्जित रकम का उपयोग तेल की खपत को और कम करने के लिए किया जाए। सार्वजनिक यातायात जैसे बसों, मेट्रो आदि में सुधार किया जाए।

प्रकृति के सभी घटकों पर आधुनिक सभ्यता का आक्रमण

हृदयनारायण दीक्षित

प्रकृति का प्रत्येक अंश और अंग परस्परावलम्बन में है। सब एक-दूसरे पर आश्रित हैं। न जल स्वतंत्र है और न ही हवा। वनस्पतियां और औषधियां भी स्वतंत्र नहीं हैं। लाखों जीव हैं, वह भी प्रकृति की शक्तियों पर निर्भर हैं। पिछले कुछ समय से प्रकृति के सभी घटकों पर आधुनिक सभ्यता का आक्रमण है। पृथ्वी का ताप बढ़ा है। संभवतः पहली बार भारत के बड़े क्षेत्र में तापमान लगभग 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचा। अनेक जीव, पशु और पक्षी इस ताप को सह नहीं पाए। अनेक मनुष्यों की भी इस ताप के कारण मृत्यु हुई। भूमण्डलीय ताप में लगातार वृद्धि का कारण हमारी जीवनशैली है। इसका केन्द्र आधुनिक औद्योगिक सभ्यता है। इस विषय पर कई अंतरराष्ट्रीय बैठकें भी हो चुकी हैं। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। यही स्थिति जल प्रदूषण की है। नदियां सूख रही हैं। ऋतु चक्र गड़बड़ाया है।

प्राचीन भारत में सभी प्राकृतिक शक्तियों और वनस्पतियों और भिन्न-भिन्न जीवों के प्रति आत्मीयता का भाव रहा है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में यह आत्मीयता सुंदर कविता के रूप में प्रकट हुई है। इस सूक्त के रचनाकार अथर्वा हैं। उन्होंने पृथ्वी को माता कहा है। उत्सवों और मांगलिक कार्यों में छाया आदि बनाने के क्रम में जमीन में बांस गाड़े जाते थे। जमीन को खोदना पड़ता था। ऋषि प्रार्थना करते हैं, "हे पृथ्वी माता इसके लिए हमें क्षमा करें।" अथर्वा कहते हैं, "इस पृथ्वी पर तमाम उत्सव होते हैं। लोग मिलते हैं। परस्पर प्रसन्न होते हैं। ऐसी हमारी पृथ्वी माता हम सबको संरक्षण दें।" ऋग्वेद और अथर्ववेद में वनस्पतियों को भी देवता माना गया है। महाभारत के प्रसंग में श्रीकृष्ण ने पृथ्वी की उपासना की। पृथ्वी प्रकट हो गईं।

श्रीकृष्ण ने पूछा, "हे माता आप किस उपासना से प्रसन्न होती हैं?" पृथ्वी ने उत्तर दिया, "दोपहर और सांय कीट-पतिंग, चूहे-बिल्लियों आदि के लिए अन्न के कुछ दाने बिखेरने से।" मार्क्सवादी विद्वान रामशरण शर्मा ने 'प्रारंभिक भारत का परिचय" (पृष्ठ 44) में लिखा है, "प्राचीन भारत में नदियां ईश्वर तुल्य मानी जाती थीं। ऋग्वेद में सरस्वती नदी को देवी के रूप में चित्रित किया गया है। वैदिकोत्तर काल में गंगा को मातृ देवी कहा गया है। ऐसी परंपराएं आज तक बरकरार हैं, पृथ्वी और जल दोनों से वनस्पतियों और पशुओं का पोषण होता था। इसलिए इन्हें माता का दर्जा दिया गया। अनेक वृक्ष नीम, पीपल, बरगद, शमी और तुलसी भी पवित्र माने जाते हैं।"

ऋग्वेद और अथर्ववेद में गोहत्या को निषेध बताया गया है। शर्मा जी ने लिखा है, "गौतम बुद्ध पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सुत्त निपात में गायों की सुरक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है।" शर्मा जी ने ऋग्वेद के संदर्भ की उपेक्षा की है। बुद्ध से बहुत पहले ऋग्वेद में गायों की सुरक्षा के साथ उनकी उपासना पर भी जोर दिया गया है। संपूर्ण वैदिक साहित्य पर्यावरण सजगता से भरा पूरा है। पर्यावरण की चिंता संप्रति विश्व कर्तव्य है। भारत में पर्यावरण चेतना का उद्भव कम से कम 3000 से 4000 वर्ष पुराना है। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को प्रकृति का यज्ञ चक्र समझाया और कहा, "अन्न से प्राणी हैं, अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है। वर्षा यज्ञ से होती है और यज्ञ श्रेष्ठ कर्म से उत्पन्न होता है (गीता 3.14)।" मनुष्य वनस्पतियों और जीवन के प्रति आत्मीय बना रहे तो वर्षा समय पर होगी। सभी प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा भी होगी।

रामधारी सिंह दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखा है, "जब आर्य इस संस्कृति का निर्माण करने लगे तब उनके सामने अनेक जातियों को एक संस्कृति में पचा कर समन्वित करने का सवाल था। ये जातियां आर्य आगमन के पहले से ही इस देश में बस रहीं थीं। उन्होंने आरंभ से हिन्दुओं का लचीला रुख पसंद किया।" दिनकर जी के कथन में आर्य बाहर से आई हुई जाति है। प्रश्न है कि बाहर से आए आर्य यहां पर नदी संस्कृति का निर्माण क्यों करेंगे? दिनकर जी आर्यों को बाहर से आया हुआ मानते थे। यह गलत है। यहां पहले से ही वैदिक संस्कृति फल फूल रही थी। दिनकर जी ने अपनी बात के समर्थन में पंडित जवाहर लाल नेहरू को उद्धत किया है।

नेहरू ने लिखा है, "ईरानी और यूनानी लोग, पार्थियन और बैक्ट्रियन लोग, सीथियन और हूण लोग, मुसलमानों से पहले आने वाले तुर्क और ईसा की आरंभिक सदियों में आने वाले ईसाई, यहूदी और पारसी, ये सब के सब एक के बाद एक भारत में आए।"

शिवराज सिंह चौहान को प्रदेश चुनाव प्रभारी और हिमंता विस्वा सरमा को सह चुनाव प्रभारी बनाये जाने का भाजपाईयों ने किया स्वागत

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ जे पी नड्डा ने आगामी विधानसभा के चुनाव की तैयारी के लिए चुनाव प्रभारी एवं चुनाव सह प्रभारी की घोषणा कर दी है। आने वाले झारखण्ड विधान सभा चुनाव की तैयारी को लेकर भाजपा झारखण्ड प्रदेश के लिए केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को प्रदेश चुनाव प्रभारी तथा असम के मुख्यमंत्री हिमंता विस्वा सरमा को प्रदेश सह चुनाव प्रभारी नियुक्त किया है। राष्ट्रीय महामंत्री अरुण कुमार सिंह के हस्ताक्षर से जारी पत्र का उल्लेख करते हुए पार्टी के रामगढ़ जिला अध्यक्ष प्रवीण मेहता ने कहा कि झारखंड प्रदेश के लिए उन दोनों के अनुभव से भारतीय जनता पार्टी का आगामी विधानसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत से एनडीए की सरकार का गठन होना तय है। उनकी नियुक्ति से कार्यकताओं में उत्साह का माहौल है। भारतीय जनता पार्टी रामगढ़ जिला परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। शिवराज सिंह चौहान को प्रदेश चुनाव प्रभारी व हिमंता

विस्वा सरमा को प्रदेश चुनाव सह प्रभारी बनाये जाने पर प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश प्रसाद, प्रदेश प्रवक्ता अविनेश कुमार, जिला के वरिष्ठ नेता रंजीत कुमार सिन्हा, अमरेन्द्र कुमार गुप्ता, रणंजय कुमार उर्फ कुंटू बाबु, डॉ संजय सिंह, प्रो संजय सिंह, इलारानी पाठक, राजू चतुवेर्दी, बलराम महतो, सरिता ठाकुर, आनंद बेदिया, अखिलेश प्रसाद, प्रो खिरोधर साहू, रंजन फौजी, राजू कुशवाहा, दिलीप सिंह, रमेश कुमार वर्मा, संजीव कुमार बावला, किरण देवी, वसुध तिवारी, दीनदयाल कुमार, राजीव पामदत्त, संतोष कुमार शर्मा प्रवीण कुमार सोनू, भीमसेन चौहान, धीरज कुमार साहू, राकेश पंडा, सोनू कुमार शौर्य लक्ष्मी देवी, अमितेश कुमार सिंह, नमेंद्र चंचल, सन्नी कुशवाहा, विनोद कुमार, कुमेल उरांव, सैयद किरमानी, उमेश प्रसाद, रंजीत पांडेय, विजय जायसवाल, जगेश्वर प्रजापति, महेन्द्र प्रजापति, आलोक कुमार, सुनील कुमार बर्नवाल, वरुण कुमार सिंह, दिनेश प्रसाद, सुखदेब प्रसाद, योगेश दांगी, रोबिन गुप्ता, दीपक सोनकर, शिव कुमार महतो, सूर्यवंश श्रीवास्तव, मनोज गिरि, बबलू साव, अशोक कुमार, संजय शाह, नरेश कुमार राजाराम प्रजापति, गणेश प्रसाद, राजेश प्रसाद, तोकेश सिंह, सतीश मोहन मिश्र, सहदेव ठाकुर, मोहन पांडेय, राजीव जायसवाल, विजय ओझा आदि ने बधाई दी है।

एक नजर में

राज्य में 200 यूनिट बिजली मिलेगी मुफ्त, अंबा प्रसाद ने विधानसभा में की थी मांग

बड़कागांव। विधानसभा बजट सत्र के दौरान बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद में राज्य में 200 यूनिट बिजली मुफ्त करने की मांग की थी इसके बाद राज्य के मुख्यमंत्री श्री चंपाई सोरेन ने इस पर अपनी सहमति प्रदान की। मुख्यमंत्री श्री चंपाई सोरेन ने इसकी घोषणा कर दी है अब राज्यवासियों को 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली मिलेगी। मुख्यमंत्री श्री चंपाई सोरेन के घोषणा पर विधायक अंबा प्रसाद ने आभार जताया है।
विदित हो कि बजट सत्र के दौरान दिनांक 2 मार्च 2024 को तारांकित प्रश्न के माध्यम से बड़कागांव की कांग्रेस विधायक अंबा प्रसाद ने सदन को अवगत कराते हुए बताया था कि राज्य के 42.16 प्रतिशत लोग गरीब हैं, जो पूरे देश में बिहार (51.91 प्रतिशत) के बाद सर्वाधिक है। राज्य सरकार के द्वारा वर्ष 2022 में बिजली उपभोक्ताओं को 100 यूनिट मुफ्त बिजली देने की शुरूआत करने के बाद इसे 125 यूनिट तक बढ़ाने की कवायद चल रही है लेकिन राज्य में एक बड़ी आबादी गरीब तबके की है, जो बिजली बिल दे पाने में भी असमर्थ है इसलिए राज्य के घरेलू बिजली उपभोक्ताओं को 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली दिया जाए।

सेविका की लापरवाही से केंद्र में घंटों बंद रहा बच्चा

चरही। चुरचू प्रखंड के चरही स्थित लालबंगला में स्थापित आंगनबाड़ी केंद्र में सेविका और सहायिका द्वारा लापरवाही बरते जाने का एक मामला प्रकाश में आया है। बीते 11 जून को 10.30 बजे सेविका और सहायिका केंद्र को बंदकर चलते बने। उस केंद्र के अंदर एक तीन वर्षीय बच्चा समीर महतो पिता सकल देव महतो रह गया। बच्चा केंद्र से अपना घर नहीं पहुंचने के कारण इसके माता-पिता काफी परेशान हो गए। और खोज-बीन करने लगे। इसके बाद परिजन आंगनबाड़ी केंद्र पहुंचकर खिड़की से देखा तो पाया कि बच्चा अंदर में बंद है और रो रहा है। उसके बाद केंद्र का ताला खुलवाकर बच्चे को बाहर निकाला गया। इस मामले को लेकर बाल विकास परियोजना पदाधिकारी रेखा रानी से पूछे जाने पर बताया कि मामला 11 जून की है। और इसकी जानकारी मुझे 16 जून को हुई है। आगे कहा कि इसकी जांच की जाएगी। जबकि केंद्र सेविका पूनम कुमारी ने बताया कि कन्यादान प्रमाण-पत्र के लिए हजारीबाग कोर्ट के लिए निकल पड़ी थी। इसका जार्ज सहायिका को दिया गया था। इसकी जानकारी बच्चे के माता-पिता ने केंद्र के सेविका को दी गई। कोर्ट न जाकर पुनः वापस पहुंची। और केंद्र का ताला खोलकर बच्चे को बाहर निकाला गया।

मंडा पूजा में झलकती है झारखंड की सभ्यता और संस्कृति : निर्मला देवी

भुरकुंडा (रामगढ़)। कुसियारा मंडा पूजा समिति के तत्वावधान में मंडा पुजा का आयोजन किया गया। मंडा पुजा में 150 भोगता और सोकताईनो ने दहकते अंगारो पर चलकर और बनस झुला पर झुलकर भगवान शिव के प्रति अपनी आस्था और भक्ति का परिचय दिया। मंडा पूजा में कुसियारा, किन्नी, भंडरा, घाघरा, जराद गांव के भोगता और सोकताईनो ने निर्जला उपवास कर भगवान शिव की उपासना किया। पूजा को लेकर आयोजित मंडा मेला का उद्घाटन पूर्व विधायक निर्मला देवी, आजसु के केंद्रीय महासचिव रोशन लाल चौधरी, पूर्व जिप उपाध्यक्ष मनोज राम, कुरसे पंचायत के मुखिया संदीप उरांव ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। मौके पर पूर्व विधायक निर्मला देवी ने कहा कि मेला हमें अपने पूर्वजों की याद ताजा कराती है। मेला झारखंडी संस्कृति की धरोहर भी है। उन्होंने कहा कि मंडा मेला में झारखंड की सभ्यता व संस्कृति झलकती है, इसे संजोए रखना हमसबों का दायित्व है। मंडा पूजा को सफल बनाने में समिति के अध्यक्ष रामश्याम सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष बिनोद जयसवाल, संजय ठाकुर, कोषाध्यक्ष सूरज जयसवाल, सचिव राम महतो, उप कोषाध्यक्ष सुनील सिंह, करण कुमार, उप सचिव विकाश उरांव, बिरजू मुंडा, मिथलेश, दीपक महतो, अनु सिंह, संरक्षक मोहित महतो, केतर महतो, अजीत महतो, हरखनाथ महतो सहित अन्य लोगो का विशेष योगदान रहा।

ईद-उल-अजहा की नमाज पढ़ मांगी मुल्क में अमन की दुआ

कटकमसांडी। प्रखंड क्षेत्र में मुस्लिम धर्मावलम्बियों ने सोमवार को ईद-उल-अजहा की दो रकअत वाजिब नमाज पढ़कर मुल्क में अमन की दुआएं मांगी और कुबार्नी के रस्म अदा किया। पूरे प्रखंड क्षेत्र में अवस्थित मस्जिदों व ईदगाहों में ईद-उल-अजहा की नमाज सुबह सात बजे तक अदा कर दी गई। मौके पर मस्जिद के इमामों ने खुतबा पढ़ी और इसके बाद अकीदतमंदों ने गिले शिकवे भुलाकर एक दूसरे से गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। किसी भी अनहोनी से निपटने के लिए पुलिस प्रशासन मुस्तैद दिखी। पर्व को लेकर दिनभर कटकमसांडी व पेलावल पुलिस क्षेत्र में गश्त करते दिखी। ईद-उल-अजहा पर्व शांतिपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुई। मौके पर भाजपा उपाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार बीरू, जिप प्रतिनिधि मनीष ठाकुर, उपप्रमुख प्रतिनिधि सतीश सिंह, सांसद प्रतिनिधि राजेंद्र प्रसाद राजा, पूर्व जिप प्रतिनिधि मिस्बाहुल इस्लाम, बीससूत्री अध्यक्ष सरयू यादव, वरिष्ठ कांग्रेसी राजकिशोर सिंह, जिप प्रतिनिधि कारू राम, समाजसेवी विक्रम राणा, समाजसेवी उपेंद्र कुशवाहा, कांग्रेस के इंद्रदेव यादव आदि दर्जनो जनप्रतिनिधियों व प्रबुद्धजनों ने लोगों को ईद की मुबारकबाद दी।

बरही में हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी बकरीद विभिन्न ईदगाहों और मस्जिदों में अदा हुई नमाज

बरही। मुस्लिम धर्मावलंबियों ने सोमवार को बरही प्रखंड के सभी बीस पंचायतों में त्याग और बलिदान का महापर्व बकरीद पूरे क्षेत्र में भारी उत्साह के साथ गले से गले मिलाकर मनाया। बरही प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत जामा मस्जिद, कोनरा स्थित ईदगाह समेत रसोईया धमना, कोनरा, छोटकी बरही, दुलमाहा, धनवार, गरजामो, गोरियाकरमा, मलकोको, भंडारो, डुमरियाडीह, गरजमो, मोहगढा सभी विभिन्न गांव में स्थित ईदगाह व मस्जिदों में ईद-उल-अजहा की नमाज अदा की गई। जिसमें सजदे के लिए हजारों सिर झुके। नमाज अदा करने के बाद सभी ने अपने एवं अपने क्षेत्र की तरक्की, शहर, जिला, प्रदेश व वतन में अमन चैन, खुशहाली व तरक्की के लिए दुआ मांगी। बकरीद को लेकर मुसलिम समुदाय के लोग सुबह से ही कुबार्नी के रश्म अदा करने के बाद मित्रो को दावत पर बुलाया। लोगों ने नये कपड़े पहने और एक दूसरे से गले मिलकर बकरीद की शुभकामनाएं दी। गरजामों में नमाज अदा करने के बाद क्षेत्र में अमन शांति और तरक्की के लिए दुआएं मांगी गई। मौके पर उपस्थित पूर्व जिप प्रतिनिधि सह अल्पसंखयक कल्याण महासमिति अध्यक्ष मो कयूम ने बकरीद की बधाई देते हुए कहा कि ईद उल अजहा बलिदान और त्याग का त्यौहार है। अपने अंदर छिपे बुराइयों को कुबार्नी देने का त्यौहार है। हमें इस अवसर पर अपने अंदर की सारी बुराइयों, घमंड, गुरुर ईर्ष्या, द्वेष व आपसी दुश्मनी को त्याग करने का संकल्प लेनी चाहिए। बकरीद को लेकर विधि व्यवस्था बनाए रखने और शांति सुरक्षा को लेकर पुलिस जगह-जगह मुस्तैद रही। वहीं कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष अब्दुल मनान वारसी, डॉ निजामुद्दीन अंसारी, 20 सूत्री अध्यक्ष इकबाल रजा, पंसस मो तैयब, बरही पश्चिमी मुखिया समशेर आलम, कोनरा मुखिया प्रतिनिधि मो ताजुद्दीन, मो तौकीर रजा, रिजवान अली, पप्पू खान, विजैया मुखिया प्रतिनिधि मो मंसूर, मो वारिस, मो तस्लीम, मो मेराज, शराफत अली, मो बेलाल, मो असलम, मुखिया प्रतिनिधि टिंकू आलम, मो जहांगीर सहित अन्य मुस्लिम धर्मावलंबियों ने एक दूसरे से गला लगाकर बधाई दी।

स्पीड न्यूज

ईद-उल-अजहा पर मस्जिदों और ईदगाहों में मुस्लिम समाज के लोगों की जुटी भीड़

रामगढ़। जिलाभर में सोमवार को मुस्लिम समाज के लोगों ने ईद-उल-अजहा का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस मौके पर समाज के लोगों ने अपने आसपास के ईदगाह और मस्जिदों में पहुंचकर अकीदत के साथ नमाज अदा कर अमन चैन और खुशहाली की दुआ मांगी। इसके उपरांत एक दूसरे को गले लगाकर बकरीद की बधाई दी। जिला के रामगढ़, मांडू, पतरातू, भुरकुंडा, कुजू, चितरपुर, गोला आदि में बकरीद का त्योहार शांतिपूर्ण तरीके से मनाया गया। वहीं, पुलिस प्रशासन की ओर से बकरीद को लेकर सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किये गये थे। ताकि त्योहार शांति पूर्वक तरीके से मनाया जा सके।

बालू लदा ट्रैक्टर जब्त, प्राथमिकी दर्ज

बरही। अवैध बालू उठाव को लेकर बरही पुलिस ने कार्रवाई करते हुए एक बालू से लदा गाड़ी को जप्त किया है। पुलिस को मिली गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर बरही पुलिस ने सोमवार को बरही रेलवे स्टेशन रोड से एक बालू लदा ट्रैक्टर पकड़ा है। इस बाबत जानकारी देते हुए पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी चंद्रशेखर कुमार ने बताया कि अवैध बालू उठाव एवं बिक्री के खिलाफ बरही पुलिस सक्रिय है, जहां सूचना मिलेगी कार्रवाई निश्चित रूप से किया जायेगा।

झारखंडी संस्कृति की धरोहर है मंडा पूजा : पंकज महतो

भुरकुंडा (रामगढ़)। श्रीश्री शिव मुंडा पूजा समिति हेहल के तत्वावधान में पूरे भक्ति व श्रद्धाभाव से मंडा पूजा का आयोजन किया गया। मंडा पूजा में दर्जनों भोगता और सोकताईनो ने दहकते अंगारो पर चलकर और बनस झुला पर झुलकर भगवान शिव के प्रति अपनी आस्था और भक्ति का परिचय दिया। मंडा पूजा के ाअवसर पर छऊ नृत्य का भी आयोजन किया गया, जो ग्रामीणों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा। पूजा में शामिल मुख्य अतिथि किसान बेरोजगार संघर्ष मोर्चा के केंद्रीय संयोजक पंकज महतो ने कहा की मंडा पूजा की शुरूआत सर्वप्रथम नागवंशी राजाओं ने की थी। मंडा पूजा को लेकर कई पौराणिक कथाएं भी प्रचलित है। जिसमें से एक भगवान शिव की पहली पत्नी सती के बलिदान के रूप में भी हम लोग मंडा पूजा मनाते हैं। उन्होंने कहा कि मंडा झारखंडी संस्कृति की धरोहर है। श्री महतो ने कहा कि मंडा में झारखंड की सभ्यता व संस्कृति झलकती है, इसे संजोए रखना हमसबों का कर्त्तव्य है। ऐसे कार्यक्रमों से गांव के लोगों में आपसी भाईचारगी व प्रेम भी बढ़ता है। मौके पर समाजसेवी रविन्द्र मुंडा, कमेटी के अध्यक्ष उचेश्वर सिंह, उपाध्यक्ष विनोद बेदिया, कोषाध्यक्ष श्याम सिंह, सह कोषाध्यक्ष जग्गू मुंडा, सचिव सुनील सिंह, सहसचिव बलदेव मुंडा, गिरिशंकर महतो, रामदयाल मुंडा, वार्ड पार्षद प्रदीप शर्मा, कौलेश्वर कुशवाहा, विनोद कुशवाहा, बैजनाथ मुंडा सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद थें।

रामगढ़ कोठार में दर्दनाक सड़क हादसे में दो की मौत, एक घायल

चरही। चुरचू के गोंदवार निवासी सोनाराम मुर्मू पिता स्व. श्रीराम मांझी (38 वर्ष) ,पत्नी सुरुजमनी सोरेन (30वर्ष) एवं उसकी सास मूर्ति टुडू (उम्र 50 वर्ष) का रामगढ़ के कोठार चौक पर एक सड़क हादसे में दर्दनाक मौत हो गई। जबकि सोनाराम मुर्मू कि हालत नाजुक बताई जा रही है। उसका इलाज रांची के आरएमसीएच में किया जा रहा है। जानकारी के अनुसार सोनाराम मुर्मू अपने पैशन प्रो बाइक पर सवार होकर पत्नी व उसकी सास रांची की ओर जा रहे थे। उसी क्रम में रामगढ़ के कोठार चौक पर एक हाईवा ने चपेट में ले लिया। उनकी पत्नी और सास की मौत घटना स्थल पर ही हो गई।

मांडू विधानसभा चुनाव तैयारी को लेकर हुई बैठक में कमेटी विस्तार पर चर्चा

चरही। चुरचू प्रखंड के चरही आकाश गंगा कार्यालय में अगामी मांडू विधानसभा चुनाव तैयारी को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता आनंद सोरेन व संचालन चुरचू के पूर्व उपमुखिया सहदेव किस्कु ने किया। बैठक में मांडू विधानसभा के प्रत्येक प्रखंड में बूथ कमेटी बनाने और हरेक प्रखंड में प्रखंड स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किये जाने का निर्णय लिया गया। बैठक में कार्यकताओं ने अगामी मांडू विधानसभा चुनाव में आनंद सोरेन को निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में उतारने का निर्णय लिया है। मौके पर बिशुन मुर्म, सुखदेव सोरेन, अर्जुन टुडू, मोहन हेब्रोम, सहदेव किस्कू, एहतेसामुल हसन, मुनेश्वर रविदास, विकास टुडू, राजेश भुईया, जय नादान भारती , निखिल किस्कू, सुनील किस्कू, ऐनुल अंसारी, सुलताल अंसारी, आनुराग मुर्मू, राम विलास टुडू, प्रमोद टुडू, सुनील टुडू, मो समशेर अंसारी, रवि किस्कू, चुनूलाल हंसदा, जयनाथ महतो, संजय कुमार वर्मा, सामोम अंसारी, सुखदेव सोरेन, सुलतान, अर्जुन मुर्मू, प्रमोद टुडू, मो. इदरीस, प्रकाश सोरेन, संजय मुर्मू, अरविंद टुडू, सुनील किस्कू, बाबूचंद हंसदा, मनोज सोरेन, अर्जुन कुमार हंसदा, प्रविल टुडू, मो. इरफान सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

बरही डीएसपी व चौपारण पुलिस को मिली एक और बड़ी सफलता

301 किलो डोडा के साथ पंजाब व हरियाणा के 5 लोग गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

चौपारण। थाना प्रभारी दीपक कुमार सिंह की कामयाबी की फेहरिस्त में एक और शिलापट दर्ज हो गया। एक बार फिर बरही एसडीपीओ सुरजित कुमार व थाना प्रभारी दीपक कुमार सिंह ने नशा के सौदागरों पर बड़ी कार्यवाई करते हुवे 301 किलो डोडा सहित 5 लोगों को गिरफ्तार किया। इसकी जानकारी थाना प्रभारी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दिया। जिसमें उन्होंने कहा कि रविवार कि रात में वरीय पदाधिकारी के द्वारा गुप्त सूचना मिली कि दनुआ स्थित ड्राईवर भाई पंजाबी लाईन होटल के पास एक ट्रक वाहन सं0-आरजे 23 जीए-5707 पर अवैध रुप से भारी मात्रा में डोडा लोड किया जा रहा है। इस संबंध में त्वरीत कार्रवाई करते हुए अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सूरजित कुमार एवं थाना प्रभारी दीपक कुमार सिंह के नेतृत्व में

टीम गठित कर सशस्त्र बल के साथ दनुआ स्थित ड्राईवर भाई पंजाबी लाईन होटल के पास छापामारी किया गया। छापामारी दल होटल के पास पहुँचा तो देखा कि एक ट्रक लगा हुआ है जिसका नम्बर आरजे23 जीए-5707 और उस ट्रक के उपर कुछ लोग चढे हुए है और कुछ लोग माथा पर प्लास्टिक का बोरा ला रहे हैं और कुछ लोग उस बोरा को चढ़ाने में मदद कर रहे हैं। पुलिस को देखते ही लोग भागने का प्रयास करने लगे जिसे सभी आदमी को सशस्त्र बल के द्वारा खदेडकर पकड लिया गया। पकडाये व्यक्तियों को भागने का कारण पुछने पर उनलोगो के द्वारा संतोषजनक जवाब नही दिया गया। तत्पश्चात पकडे गये ट्रक एवं व्यक्तियों के तलाशी के क्रम में कुल 18 प्लास्टिक के बोरा में अवैध डोडा बंधा हुआ पाया गया। सभी बोरी को वजन करने पर कुल-301 किग्रा0 डोडा पाया गया। इस संबंध में ट्रक सहित डोडा एवं अन्य बरामद सामान को जप्त करते हुए चौपारण थाना कांड सं0-199/24 दिनाक 17/06/24 धारा 414/34 भा०द०वि० एवं 17(सी)/18(सी)/29 एनडीपीएस एक्ट दर्ज कर गया।

गिरफ्तार हुए लोग

1. रुपिन्द्रजीत सिंह पिता जशवीर सिंह ग्राम- चौके थाना- गिल्लेकला जिला- भंटिडा (पंजाब)
2. यशविन्दर सिंह पिता स्व0 मुन्नी सिंह सा0- रामपुरा थाना- रामपुरा जिला- भटिन्डा (पंजाब)
3. असलम पिता रफीक सा0- मलेरकोटला थाना+जिला- मलेरकोटला (संगरूर) (पंजाब)
4. नवाब खान पिता स्व0 छोटा खान सा0 थाना- बढ़ोर जिला- बनठाल (संगरूर) (पंजाब)
5. तारीक पिता अलीम खान सा0- अलीम्यू थाना- बहीन जिला- पलवल (हरियाणा) को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

मां शीतला मंदिर में 24 घंटे का अखंड-हरिकीर्त्तन संपन्न

भुरकुंडा (रामगढ़)। मां शीतला मंदीर सयाल मोड़ भुरकुंडा में चल रहे 24 घंटा का अखण्ड-हरिकीर्त्तन का सोमवार को समापन हो गया। इसके पूर्व रविवार को पुरोहित रामकुमार पाठक द्वारा पूरे विधि-विधान एवं वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पूजा-अर्चना कराई गई। इसके बाद अखंड-हरिकीर्त्तन का शुभारंभ हुआ। पूजा में बतौर यजमान कैलाश ठाकुर व पत्नी रीता देवी शामिल हुईं। अखंड-कीर्त्तन के दौरान हरे रामा हरे कृष्णा के भक्ति उद्घोषों से पूरा क्षेत्र गूंजता रहा। हरिकीर्त्तन मंडली में सेंट्रल सौन्दा, लंपगा, बनगड्डा, जवाहर नगर, पटेलनगर आदि क्षेत्रों के श्रद्धालु भक्त शामिल हुए। धार्मिक अनुष्ठान को सफल बनाने में नागो राय, व्यास कैलाश ठाकुर, भीम सिंह, सुभाष यादव, नानू यादव सहित पटेलनगर पंचायत के लोगों का विशेष योगदान रहा।

बड़कागांव प्रखंड में बकरीद का त्योहार शांतिपूर्वक संपन्न

खबर मन्त्र संवाददाता

बड़कागांव। प्रखंड में ईद-उल-अजहा यानी बकरीद का त्योहार शांतिपूर्वक संपन्न हो गया। प्रखंड के सभी मस्जिदों में सुबह के समय से ही नमाज अदा करने के लिए नमाजी जुटने लगे। नमाजियों ने नमाज अदा कर अमन चैन की दुआ की और एक दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। नमाज के बाद लोगों ने अपने घरों में जाकर कुबार्नी की रस्म अदा की। बड़कागांव प्रखंड के बादम जामा मस्जिद, बलिया जामा मस्जिद, बड़कागांव जामा मस्जिद, चट्टी मस्जिद, मोकद्दस मस्जिद बादम, सिरमा मस्जिद, महुदी मस्जिद, महुगाई मस्जिद, चंदौल मस्जिद, डाडी मस्जिद, चेपा मस्जिद, सिंदूवारी मस्जिद, नगड़ी मस्जिद, महुगाई मस्जिद, हाहे मस्जिद सहित अन्य मस्जिदों में ईद-उल-अजहा की नमाज अदा की गई। खुदा ने हजरत इब्राहिम से अपने बेटे की कुबार्नी तलब की। खुदा का हुक्म पाते ही हजरत इब्राहिम अपने बेटे इस्माइल की कुबार्नी देने जंगल की ओर रवाना हुए। हजरत ने बेटे से कहा कि मैंने ख्वाब देखा है कि मुझे खुदा की राह में तुम्हारी कुबार्नी देनी है। बेटे ने कहा कि अगर खुदा की यही रजा है तो मैं तैयार हूं और आप मुझे सब्र करने वालों में सबसे आगे पाइयेगा। इस तरह खुदा ने हजरत इब्राहिम का इम्तहान लिया था और हजरत इस्माइल की जगह दुंबा की कुबार्नी से खुदा ने हजरत इब्राहिम की कुबार्नी कबूल फरमाई। बकरीद कुबार्नी का पर्व है। यह त्योहार हमें प्रेम, सद्भावना, त्याग और बलिदान की प्रेरणा देती है। बकरीद पर्व के अवसर पर शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद रही। प्रखंड क्षेत्र के सभी मस्जिदों के इर्द-गिर्द कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। एसडीपीओ कुलदीप कुमार, इंस्पेक्टर अनिल सिंह और थाना प्रभारी मुकेश कुमार सिंह के नेतृत्व में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रखंड के गांवों में पुलिस के अधिकारी और जवान गस्ती करते नजर आए।

विस्थापित-प्रभावित संघर्ष समिति सीसीएल भुरकुंडा कोलियरी की कुरसे में हुई बैठक

26 को बलकुदरा खुली खदान से कोयला का संप्रेषण व ट्रांसपोर्टिंग ठप रहेगा : समिति

- सभी मांगों पर पहल कर भुरकुंडा लोकल सेल चालू करने की रखी मांग

खबर मन्त्र संवाददाता

भुरकुंडा (रामगढ़)। विस्थापित-प्रभावित संघर्ष समिति सीसीएल भुरकुंडा कोलियरी की बैठक सोमवार को कुरसे जंगल में हुई। इसकी अध्यक्षता जयदेव सिंह और संचालन मिहिलाल बेदिया ने किया। बैठक में विगत 26 फरवरी 2024 को सीसीएल प्रबंधन और विस्थापित प्रभावित संघर्ष समिति के बीच हुई वार्ता की समीक्षा की गई। तत्पश्चात सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया की प्रबंधन अपने वायदे के अनुसार कोई कार्य नहीं की। कहा गया कि समिति की ओर से सौंपे गए मांग-पत्र के आलोक में कोई कार्रवाई नहीं की गईं। प्रबंधन द्वारा भुरकुंडा कोलियरी से प्रभावित राजस्व ग्राम के बीस

बेरोजगारों को बलकुदरा खुली खदान में खनन कार्य कर रही कंपनी में रोजगार देने का वायदा किया गया था जिसे पूरा नहीं किया गया। कहा गया कि सभी समस्याओं के समाधान हेतु प्रबंधन ने अप्रैल माह में समिति के साथ बैठक करने का लिखित आश्वासन दिया था वह भी पूरा नहीं हुआ। जिससे समिति के लोगों में सीसीएल प्रबंधन के खिलाफ आक्रोश है। बैठक में अपनी सभी मांगों की पूर्ति के लिए उग्र जन आंदोलन करने का भी निर्णय लिया है। जिसके तहत आगामी 26 जून को भुरकुंडा कोलियरी अंतर्गत बलकुदरा खुली खदान से कोयला का संप्रेषण (डिस्पैच) व परिवहन (ट्रांसपोर्टिंग) ठप करने की बात कही गई। समित की मुख्य मांगो में भुरकुंडा कोलियरी रोड सेल अविलंब चालू करने, पीएसएमई बलकुदरा में समिति की ओर से सौंपे गए 20 लोगो के सूची के अनुसार तत्काल रोजगार उपलब्ध कराने, भुरकुंडा कोलियरी रोड सेल में कोलियरी से प्रभावित चारो राजस्व ग्रामों के बेरोजगार रयोतों को न्यायोचित भागीदारी सुनिश्चित करते हुए रोड सेल चालू करने, रोड सेल में पेलोडर लोडिंग की जगह मैनुअल लोडिंग को पुनः चालू कराने सहित अन्य सभी 12 सूत्री मांगों शामिल है। कहा गया कि सभी मांगों पर पर तत्काल समारात्मक पहल नहीं की गई तो उग्र आंदोलन किया जायेगा। जिसकी सारी जवाबदेही सीसीएल प्रबंधन की होगी। बैठक में रामदास बेदिया, धनेश्वर यादव, मनोज मांझी, अनिल सोनी, टिंकू प्रजापति, अजय तुरी, बुलंद बेदिया, विनोद मुंडा, योगेंद्र मुंडा, अजय बेदिया, सुरेंद्र तुरी, बिनोद प्रजापति, सन्नी बेदिया, सोमर यादव, गणेश तुरी, मनु करमाली, सुनील यादव, पंकज सिंह, सुनील तुरी, संजय बेदिया, अर्जुन तुरी, विक्की प्रजापति, कैलाश बेदिया, दीपक तुरी आदि मौजूद थें।

स्पीड न्यूज

निलेश कुमार ने ग्रहण किया किशुनपुर ओपी प्रभारी का पदभार

पाटन पलामू। किशुनपुर ओपी प्रभारी के रूप में निलेश कुमार ने पदभार ग्रहण किया। निवर्तमान ओपी प्रभारी नीरज कुमार से उन्होंने पदभार लिया। इसके पूर्व निलेश पलामू के रामगढ़ थाना में थाना प्रभारी के थे। वहीं किशुनपुर ओपी के निवर्तमान ओपी प्रभारी नीरज कुमार को पुलिस लाइन भेज दिया गया है। ओपी प्रभारी निलेश ने पदभार ग्रहण के बाद कहा कि मेरी पहली प्राथमिकता क्षेत्र में अमन चैन कायम रखना होगा।

बाइक दुर्घटना में एक की मौत

चैनपुर पलामू। बकरीद पर अपने रिश्तेदार के घर सिक्की कला से शाहपुर जा रहे दो युवकों की बाइक दोपहर 12 बजे दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। इसमें हकीम अंसारी (26) पिता अनीश अंसारी सिक्की कला की मौत सिर में गंभीर चोट लगने से हो गयी। वह हेलमेट नहीं पहने था। वहीं औरंगजेब पिता इस्लाम खान भी गंभीर रूप से घायल व बेहोश है।

हर्ष-उत्साह के साथ बकरीद संपन्न

हरिहरगंज पलामू। हरिहरगंज व पिपरा प्रखंड क्षेत्र में सोमवार को त्याग व बलिदान का त्योहार ईद उल अजहा हर्ष व उत्साह के साथ शांतिपूर्ण माहौल में मनाया गया। शहर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में मस्जिद व ईदगाह में बकरीद की नमाज अदा करने के लिए मुस्लिम धर्मावलंबियों की भारी भीड़ देखी गयी। प्रशासनिक स्तर से सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था की गयी थी। प्रखंड भर में चिन्हित स्थानों पर दंडाधिकारी के नेतृत्व में पुलिस बल की तैनाती की गयी थी। मौके पर अतहर हुसैन, इरफान शाहिद, असलम, जमील अंसारी, इसरार अंसारी, गोल्डन अंसारी, डायमंड, राजा, जमील अंसारी, मुस्तफा अंसारी मौजूद थे।

26 बिल बकायेदारों पर प्राथमिकी दर्ज

नीलांबर पितांबरपुर। प्रखंड के विभिन्न गांवों में बिजली चोरी मामले में छापेमारी की गयी। जिसमें 26 बिजली बकायेदारों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कनीय विद्युत अभियंता आपूर्ति प्रशाखा डाल्टनगंज ग्रामीण संजय खलको के लिखित आवेदन पर की गयी। लिखित आवेदन में कहा गया कि सभी बकायेदारों के यहां एक घरेलू विद्युत संबंध है जो बकाया राशि पर पूर्व से ही विच्छेदित था। इसके बावजूद ये बिना बकाया राशि जमा किये बिजली चोरी करते पाये गये। साथ ही कनीय विद्युत अभियंता आपूर्ति प्रशाखा डाल्टनगंज ग्रामीण संजय खलको ने कहा कि बकायेदारों के खिलाफ आगे भी प्राथमिकी दर्ज कर अग्रेतर कार्रवाई की जायेगी। जो बकायेदार अभी तक बिल जमा नहीं किये हैं वो जल्द बिजली बिल जमा करें।

नावाबाजार के युवक की रामगढ़ में मौत

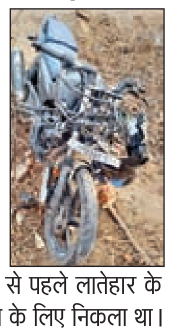

रामगढ़ पलामू। नावा बाजार के युवक की रामगढ़ में सड़क हादसे में मौत हो गयी। युवक पल्सर बाइक से रमकंडा बारात जा रहा था। इसी क्रम में अज्ञात वाहन से टक्कर हो गयी। बाइक पर दो लोग थे। मृत युवक की पहचान नावा बाजार के राजू प्रजापति (25) पिता राम किशुन प्रजापति के रूप में हुई है। राजू अपने एक साथी के साथ बाइक से पहले लातेहार के बरवाडीह गया था। वहां से बारात जाने के लिए निकला था।

पूर्व मुखिया राम प्रसाद की पुण्यतिथि मनी

पांडू पलामू। प्रखंड के कजरु खुर्द के समाजसेवी इंदु शर्मा एवं उनके भाइयों ने अपने पिता स्व राम प्रसाद शर्मा (भूतपूर्व मुखिया ग्राम पंचायत कजरु खुर्द वर्तमान ग्राम पंचायत कजरु कलां) की 34वीं पुण्यतिथि मनायी। पुण्यतिथि पर भंडारा कराया। साथ ही असहाय लोगों के बीच अंग वस्त्र बांटे। मौके पर फलदार पौधे भी लगाये। श्री शर्मा ने बताया कि उनके पिताजी भी हमेशा गरीबों व असहाय लोगों के बीच रहकर उनकी सेवा किया करते थे। वे बहुत ही नेक दिल इंसान थे। मौके पर लव कुमार विश्वकर्मा, पूर्व मुखिया प्रतिनिधि जवाहर पासवान, नंदू यादव, पूर्व पंसस प्रिंस दुबे, रिंकू शुक्ला, पंकज दुबे, अशोक गिरी, डॉ विनय ठाकुर, अनिरुद्ध पांडे, बलराम पांडे, सगुनी साव सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद थे।

महिलाओं ने रक्तदान कर पेश की मिसाल

मेदिनीनगर। जायंट्स क्लब महिला विंग ने रक्तदान शिविर लगाया। जायंट्स वेलफेयर फाउंडेशन के संस्थापक व प्रथम विश्व अध्यक्ष पद्मश्री नाना चूड़ासमा के जन्मदिन पर डालटनगंज ब्लड बैंक में डाल्टनगंज सहेली उड़ान की सदस्यों ने रक्तदान कर सामाजिक उत्तरदायित्व को पूर्ण किया। रक्तदान महादान है। किसी की जिंदगी बचाना सबसे बड़ी पूजा है। मौके पर जायंट्स सहेली की अध्यक्ष देवेंद्र नामधारी, आईपीपी रेणु शर्मा, सचिव प्रियंका आनंद, तृप्ता आनंद, अंजू अग्रवाल, नंदिनी राजन सहाय, कंवलजीत नामधारी, सीमा भसीन, आरती आनंद मौजूद थी। सुबह 11 बजे तक 10 यूनिट रक्तदान हो चुका था। इनमें समाज के एक पुरुष ने स्वेक्षा से रक्तदान किया जिसका सहेली उड़ान अभिनंदन करता है।

घर में परिवार बढ़े तो उन्हें स्वस्थ रहने के लिए पौधरोपण भी जरूरी : कौशल

रांची/मेदिनीनगर। रांची शहर के कार्निवल बैंक्विट हॉल में रविवार को मेदिनीनगर के निवासी दिवंगत सुदामा पंडित व स्व सुमित्रा देवी के पुत्र अविनाश देव की शादी दिल्ली के सुरिष्ठ राय की पुत्री रानी से हुई। विश्व व्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्म गुरु व वन राखी मूवमेंट के प्रणेता पर्यावरणविद कौशल किशोर जायसवाल ने पर्यावरण धर्म का पहले मूल मंत्र के तहत वर-वधू को आशीर्वाद स्वरूप थाईलैंड प्रजाति के बारहमासी (फला हुआ) आम का पौधा देकर उनके मंगलमय वैवाहिक जीवन की सुखद कामना की। कहा कि परिवार की संख्या बढ़े तो पौधों की संख्या भी बढ़नी चाहिए।

आज हुसैनाबाद आयेंगी झारखंड की आयरन लेडी कल्पना सोरेन, होर्डिंग से पटा पूरा शहर

जिला उपाध्यक्ष टूटू थामेंगे झामुमो का दामन, बढ़ी विधानसभा की राजनीतिक सरगर्मी

गौतम पटेल

हुसैनाबाद पलामू। आज 11 बजे अनुमंडल के कर्पूरी मैदान में हेलीकॉप्टर से होगी आगमन। सूत्रों की मानें तो हुसैनाबाद मध्य जिला परिषद व जिला उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह उर्फ टूटू अपने हजारों समर्थकों के साथ झामुमों में होंगे शामिल। खबर हैं कि स्थानीय टाउन हॉल में कार्यकर्ताओं को संबोधित करेंगी। राज्य सरकार के कई बड़े नेता को भी आने की सूचना है। इधर, आलोक कुमार सिंह के समर्थकों ने हुसैनाबाद विधानसभा में व्यापक प्रचार-प्रसार कर पूरे शहर को होडिंग बॉडिंग से सजा दिया है। पूरे शहर में झामुमो के बैनर पोस्टर पर झारखंड मुक्ति मोर्चा जिंदाबाद, झुकेंगे नहीं रुकेंगे नहीं के पोस्टर लगाये गये हैं।

इसे लेकर झामुमो कार्यकर्ताओ में उत्साह है। इससे पूर्व आलोक सिंह ने शहर के रुद्रा होटल में तैयारी को लेकर विभिन्न लोगों को जिम्मेदारी दी थी और मीडिया को बताया था कि झारखंड विधानसभा के नवनिर्वाचित गांडेय विधायक व पार्टी की आयरन लेडी कल्पना सोरेन मुर्मू का कार्यक्रम ऐतिहासिक होगा। इधर, हाल ही हाल ही में लोकसभा चुनाव में राज्य के मुखिया पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के जेल जाने के बाद कल्पना की राजनीतिक मैदान में धुआंधार बैटिंग से राज्य के 14 में कुल 5 लोकसभा व खुद गांडेय से विधायक बन अपनी ताकत को विरोधियों से अवगत करा दिया है। संथाल व कोयलांचल के बाद अब पलामू पर उनकी निगाहें हैं। लगातार बड़े नेताओं को पार्टी में शामिल कराना और कार्यक्रम कर जनता में झारखंडी उलगुलान की बिगुल फूंक दी है। हुसैनाबाद में अगम और जिला उपाध्यक्ष के साथ भाजपा, राजद, एनसीपी जैसे कई राष्ट्रीय पार्टी के हजारों समर्थक झामुमो में शामिल होने की सूचना है, जिससे हुसैनाबाद विधानसभा का राजनीतिक तापमान बढ़ गया है। कयास लगाया जा रहा है कि आलोक सिंह को पार्टी में शामिल कराने एवं राज्य की सबसे बड़ी पार्टी की नेता की उपस्थिति अगले विधानसभा चुनाव में बड़ा संकेत है। बहरहाल ये सब बातें अभी चौक चौराहे पर हैं, लेकिन इस कार्यक्रम ने हुसैनाबाद में कल्पना की कला एक नया राजनीतिक अध्याय लिखने जा रही है, जिसके हीरो होंगे आलोक कुमार सिंह।

लू से मौत को प्राकृतिक आपदा घोषित करे चंपई सरकार : सुधा

खबर मन्त्र संवाददाता

मेदिनीनगर। झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री सह पाटन छतरपुर विस क्षेत्र के पूर्व विधायक सुधा चौधरी ने चंपई सोरेन सरकार को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि यह सरकार जनहित पर

संवेदनहीन हो चुकी है। गरीब व मध्यमवर्गीय लोगों के समस्या से कोई सरोकार नहीं रखती है। झारखंड में प्रचंड गर्मी व कड़ी धूप के कारण लोगों की मौत हो रही है। यह सरकार निरंकुश बनकर बैठी हुई है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदा में ठनका से मौत, जंगली जानवर के हमला से हुए नुकसान पर सरकार मुआवजा देती है लेकिन प्रचंड गर्मी व लू लग जाने से मौत होने पर सरकार अपनी गंभीरता नहीं दिखा रही है। यह भी एक प्राकृतिक आपदा है। सरकार इसे भी प्राकृतिक आपदा घोषित कर मृतक के परिजनों को शीघ्र मुआवजा दे। कहा कि अवैध तरीके से उजड़ रहे जंगल व पहाड़ को सरकार बचाने का प्रयास करे। साथ ही शहरी समेत ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था सरकार शीघ्र करे। श्रीमती चौधरी ने कहा कि प्रचंड गर्मी में जहां एक ओर लोगों को पीने के लिए पानी के लिए जूझना पड़ रहा है वहीं दूसरी ओर झारखंड सरकार के उदासीन रवैया के कारण बिजली विभाग आमजनों के साथ खिलवाड़ कर रही है।

जिले में ईद उल अजहा शांतिपूर्वक संपन्न, गले मिलकर एक दूसरे को दी बधाई

जिले की सभी मस्जिदों-ईदगाहों में अदा की गयी बकरीद की नमाज

खबर मन्त्र संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिले में ईद उल अजहा (बकरीद) की नमाज सभी मस्जिदों व ईदगाहों में निर्धारित समय के अनुसार अकीकत के साथ अदा की गई। यह पर्व शांतिपूर्ण व आपसी सौहार्द के साथ मनाया गया। नमाज अदा करने के बाद मुस्लिम समुदाय के लोगों ने एक दूसरे से गले मिलकर मुबारकवाद दिया। बकरीद की नमाज इमाम के द्वारा पढ़ाया गया। साथ ही साथ बकरीद हम क्यों मनाते हैं इसके पीछे क्या उद्देश्य है उस

बकरीद की नमाज पढ़ते मुस्लिम धर्मावलंबी।

पर प्रकाश डालते हुए इमाम ने कहा कि बकरीद हजरत इब्राहिम की कुर्बानी की याद में मनाया जाता है। इसके जरिए यह दर्शाया जाता है कि हजरत इब्राहिम अल्लाह में सबसे अधिक विश्वास रखते थे। अल्लाह पर अपने विश्वास को दिखाने के लिए उन्होंने अपने बेटे की बलि देनी थी लेकिन उपरवाला ने इब्राहिम की नियत को समझकर बेटे की कुर्बानी को भेड़ में तब्दील कर दिया। यह पर्व मुसलमानों के सभी पर्वों में सबसे महत्वपूर्ण है जिसे देश दुनिया के सभी मुसलमान इस पर्व को बड़े ही अकीदत के साथ मनाते हैं।

यहां-यहां भी अदा की गयी बकरीद की नमाज

बकरीद पर जिला मुख्यालय के जामा मस्जिद, मदीना मस्जिद, हेरा मस्जिद, छोटी मस्जिद, नूरी मस्जिद, मिल्लत मस्जिद, अहले हदीस मस्जिद, मोहम्मदी मस्जिद, छतरपुर प्रखंड के जामा मस्जिद खाटिन, मंदेया खान टोला मस्जिद, हरिहरगंज प्रखंड के बंजारी मदीना मस्जिद, अररूआ जामा मस्जिद, चैनपुर प्रखंड के चैनपुर जामा मस्जिद, शाहपुर रहीमिया मस्जिद, हैदरनगर प्रखंड के भाई बिगहा जामा मस्जिद, कुड़वा मस्जिद, हुसैनाबाद प्रखंड के नूरी मस्जिद, हुसैनाबाद ईदगाह, पांकी प्रखंड के जामा मस्जिद, सलगस मस्जिद समेत जिले के विभिन्न मस्जिदों में नमाज अदा की गयी।

आसमान में खुशनुमा बादल के नजारे से जगी हिटवेव से निजात मिलने की उम्मीद

खबर मन्त्र संवाददाता

मोहम्मदगंज पलामू। रविवार सुबह से मौसम के रुख में बदलाव से लोगों में हिट वेव से निजात मिलने की उम्मीद जगी है। सर्वाधिक तापमान रविवार को दोपहर में 46 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था। एक पखवाड़ा पहले 48 इसके बाद 41-42 और हाल के दिनों में लगातार 45 पर बना रहा था। रविवार को दोपहर बाद शाम में 43 और सुबह भी यही स्थिति देखने को मिली। मगर उमस के बीच हवाओं के बहने से सुबह 7 बजे और शाम में भी बादल के दर्शन से लोगों में हीट वेव से राहत मिलने की उम्मीद जगी है। इससे मॉनसून के भी जल्दी पहुंचने के आसार बताया जाता है। निराश होने लगे किसान भी भगवान इंद्र की आराधना और अच्छी फसल की मन्नत मांगने लगे है।

पलामू में हीट वेव जारीं, स्कूल टाइम आगे बढ़े

मेदिनीनगर। झारखंड राज्य सहयोगी शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष सह संघर्ष मोर्चा के सदस्य बिनोद तिवारी ने भीषण गर्मी में 18 जुन से खुलने वाले विद्यालय के समय को आगे बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री सह शिक्षा मंत्री चंपई सोरेन, विधायक कल्पना सोरेन, शिक्षा सचिव एवं परियोजना निदेशक से निवेदन किया है। कहा कि अभी संपूर्ण झारखंड हीट वेभ की चपेट में है। कहा कि कई शिक्षक बीस से तीस किलोमीटर दूर विद्यालय जाते हैं और उच्च विद्यालय तक के बच्चें चील चिलाती धूप में घर आते हैं जो गर्मी में परेशान होंगे।

इस परिस्थिति में शिक्षक एवं छात्र के जीवन रक्षा का ध्यान रखते हुए गर्मी छुट्टी को मानसून आने तक स्कूल खुलने का समय 18 जून से आगे बढ़ाने की कृपा की जाय।

एंबुलेंस की टक्कर से मोपेड सवार वृद्ध की मौत, रखा एनएच जाम

खबर मन्त्र संवाददाता

हरिहरगंज पलामू। हरिहरगंज मेदिनीनगर मुख्य पथ एनएच 139 पर सोमवार की सुबह करीब 9 बजे दुबटिया मोड़ के समीप अज्ञात एंबुलेंस की टक्कर से मोपेड सवार 65 वर्षीय केश्वर साव की घटनास्थल पर ही मौत हो गई । वे हरिहरगंज से धान का बीज खरीद कर पिपरा थाना क्षेत्र के होलेया गांव स्थित अपने घर जा रहे थे। दुर्घटना की सूचना पाकर मृतक के परिजन व आसपास के लोगों ने मुआवजे की मांग करते हुए एनएच को जाम कर दिया। बाद में हरिहरगंज तथा पिपरा के पुलिस अधिकारियों द्वारा समझा बुझा कर तथा

सरकारी प्रावधान के अनुसार मुआवजा देने के आश्वासन के बाद ढाई घंटे बाद एनएच 139 पर आवागमन सुचारू किया जा सका।

जिला वासियों के लिए कानूनी सलाहकार के रूप में समर्पित रहूंगा : अनिल कश्यप

खबर मन्त्र संवाददाता

हुसैनाबाद (पलामू)। अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद् कार्यालय हुसैनाबाद में सोमवार को झारखंड हाईकोर्ट के सीनियर एवं लीडिंग एडवोकेट अनिल कश्यप को अंग वस्त्र तथा मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। विदित हो कि अनिल कश्यप जपला के ही मूल निवासी हैं और इन्होंने दसवीं तक की पढ़ाई बक्शी उच्च विद्यालय हुसैनाबाद से की है। जपला जैसे छोटे शहर से निकलकर उन्होंने रांची में एक अलग पहचान बनायी है और रांची हाईकोर्ट में लीडिंग एडवोकेट के रूप में कार्यरत हैं। पूर्व सैनिक सेवा परिषद् के सभी सदस्यों ने संगठन संरक्षक कर्नल डॉ संजय कुमार सिंह के नेतृत्व में उनके उत्कृष्ट कार्यों को देख तथा हुसैनाबाद के लोगों के लिए इतनी व्यस्तता के बावजूद फोन के जरिए या रांची आफिस में बुलाकर कानूनी सलाहकार और मददगार के रूप में खड़े रहते हैं। उनके जपला आगमन पर पूर्व सैनिकों ने उन्हें कार्यालय में आमंत्रित कर भव्य स्वागत और सम्मानित किया।

पारिवारिक विवाद में महिला ने लगायी फांसी, मौत

मेदिनीनगर। पांकी प्रखंड के पीपराटांड़ थाना क्षेत्र के होटवार निवासी कमलेश यादव की पत्नी लालो देवी (45) ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना की सूचना पाते ही पीपराटांड़ थाना पुलिस घटनास्थल पहुंच शव को कब्जे में ले लिया। साथ ही अंत्यपरीक्षण के लिए मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेज दिया। मृतका के परिजनों ने बताया कि किसी बात को लेकर रविवार की देर शाम पति-पत्नी में विवाद हुआ था। इसके बाद मृतका ने घर में ही फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इस मामले में पुलिस जांच में जुट गयी है।

प्रखंड में हर्षोल्लास के साथ मनी ईद उल अजहा

नीलांबर पितांबरपुर पलामू। बकरीद के मौके पर सोमवार को निर्धारित समय के तहत प्रखंड क्षेत्र के ईदगाह और मस्जिदों में सामुदायिक रूप से नमाज अदा की गयी। लोगों ने एक दूसरे को बकरीद की शुभकामनाएं दी। बता दें कि ईद के 70 दिन बाद ईद उल अजहा यानी बकरीद मनाया जाता है। इस दिन बकरे की कुर्बानी दी जाती है। मुस्लिम समाज के लोगों के लिए बकरीद का त्यौहार बहुत महत्वपूर्ण होता है। इधर, बकरीद को लेकर पुलिस-प्रशासन भी मुस्तैद रही। सुबह से ही ईदगाह और मस्जिदों के आसपास भारी संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती की गई थी। बकरीद की नमाज अदा करने के बाद लोगों ने एक दूसरे से गले मिलकर कुर्बानी का फर्ज निभाया।

पाटन समेत आसपास के क्षेत्रों में मनी बकरीद

पाटन पलामू। पाटन प्रखंड समेत आसपास के क्षेत्रों में बकरीद का पर्व शांति, सौहार्द व भाईचारे के साथ मनाई गई। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने मस्जिदों में जाकर सुबह बकरीद पर्व की नमाज अदा की। साथ ही एक दूसरे के गले मिलकर, सेवईयां खाकर बकरीद पर्व का मुबारकवाद दिये। पाटन प्रखंड के लोईगा, सुंठा, गम्हेथा, खाम्ही, रजहारा, सगुना, पाटन, केल्हार ,नावा जयपुर सिरमा आदि जगहों पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने बकरीद का पर्व अकीदत के साथ मनाया। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अपने अपने क्षेत्र के मस्जिदों में जाकर एक साथ नमाज अदा की। तथा एक दुसरे को मुबारकबाद दिया। इधर बकरीद पर्व को लेकर पाटन प्रखंड के मुस्लिम बहुल इलाकों में विशेष चहल-पहल देखी गयी। लोग एक दूसरे से गले मिलते नजर आये। वहीं पाटन पुलिस, किशुनपुर ओपी पुलिस तथा नावा जयपुर पुलिस ने बकरीद पर्व को लेकर क्षेत्र में गश्त करते रहे। पुलिस मुस्तैद देखी गयी।

रंगकर्मी सैकत चटर्जी को मिला सोन गौरव सम्मान

मेदिनीनगर। पलामू के मासूम आर्ट ग्रुप के सचिव व वरीय रंगकर्मी सैकत चटर्जी को बिहार के डेहरी ऑन सोन में सोन गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया है। रंगकर्म के क्षेत्र में 35 वर्षो से सक्रिय रहने के कारण सैकत को सोन गौरव सम्मान दिया गया। रविवार की रात डेहरी के झुनझुनवाला वाटिका में अभिनव कला संगम द्वारा आयोजित एक समारोह में सैकत को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आरा के मनोज कुमार सिंह द्वारा निर्देशित बहु चर्चित नाटक गंगा स्नान की प्रस्तुति की गयी।

अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस पर दौड़ 23 को

मेदिनीनगर। 23 जून को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस पर 16 वर्ष से अधिक उम्र वाले खिलाड़ियों के लिए पलामू जिला स्तरीय 3000 मीटर दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन एवं 16 वर्ष आयु वर्ग से कम वाले (सब-जूनियर) खिलाड़ियों के लिए 600 मीटर दौड़ का आयोजन किया गया है।

मूलभूत सुविधाओं के घोर अभाव से जूझ

मेदिनीनगर। डालटनगंज चैनपुर भंडरिया विधानसभा क्षेत्र की जनता के मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव है। वर्ष 2009 में पिता इन्दर सिंह नामधारी के बाद लगभग 15 वर्षों में यहां की जनता ने दो जनप्रतिनिधियों को कार्य करने का अवसर प्रदान किया। एक 5 वर्ष एवं दूसरे को 10 वर्ष परन्तु इस क्षेत्र के लिए इन्होंने कुछ भी ऐसा कार्य नहीं किया जिससे जनता की अपेक्षाएं पूर्ण हुई हो। मैं ज्यादा तो नहीं परन्तु 15 वर्षों से इस क्षेत्र की जनता की मुख्य मांग रही है। उक्त बातें युवा नेता दिलीप सिंह नामधारी ने कही। कहा कि क्षेत्र में समस्या का अंबार है।

धनबाद-चंद्रपुरा रेल लाईन पर खतरा के बयान से उबाल

कतरास के लोगों को फिर ठगने की तैयारी

प्रेम कुमार

कतरास। धनबाद जिले के महत्वपूर्ण शहरों में एक कतरास में स्थित कतरासगढ़ स्टेशन एवं धनबाद चंद्रपुरा ;डी सीद्ध रेल लाईन पर खतरा जैसी बात सामने आने के बाद कतरास के लोगो में रेलवे व बीसीसीएल के विरुद्ध आक्रोश पनपने लगा हैण बार बार डी सी लाईन पर खतरा बताकर लोगो के आवाजाही के प्रमुख संसाधन पर इस तरह का हमला यहाँ के लोग पचा नहीं पा रहे हैंण लोगो में ऐसे जन विरोधी बयान से काफी उबाल हैण जिम्मेवार अधिकारियों के ऐसे बयान से कतरास शहर के लोग उदवेलित हैंण धनबाद रेल मंडल प्रबंधक के द्वारा कतरास स्टेशन से सटे सोनारडीह स्टेशन के आसपास रेल लाईन को भू धंसान से बचाने के लिए स्टोविंग करने का बयान आने के बाद से पुन रू एक बार फिर कतरास स्टेशन के अस्तित्व पर सवाल उठ खड़े हुए हैंण बताते चले कि कतरास स्टेशन के आगे बांस जोड़ा में भू धंसान की वास्तविक स्थिति से मॉनिटरिंग के लिए लगाया गया रियल टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम मशीन प्रबंधन की लापरवाही के कारण चोरी हो गयी। एक तरफ अमृत योजना के तहत करोड़ों की राशि की योजना के जरिये कतरास स्टेशन को आधुनिकतम रूप देने का कार्य किया जा रहा हैंण दूसरी ओर धनबाद चंद्रपुरा डी सी लाईन बंद होने की आशंकाओं का सवाल लोगो के जेहन में गूंजने लगा है।

मालूम हो कि भू धंसान का खतरा बताकर वर्ष 2017 के 15 जून को धनबाद चंद्रपुरा डी सी लाईन में ट्रेनों का परिचालन बंद कर दिया गया थाण चुनाव के समय 25 फरवरी 2019 से इस लाईन पर ट्रेनों का परिचालन प्रारम्भ किया गयाण मामले में मंडल रेल प्रबंधक कहते हैं कि डीसी लाईन को आग व भू धंसान से बचाना है परन्तु इस मार्ग पर ट्रेनों का परिचालन सुनिश्चित व सुरक्षित रहे इस पर बयान देने से परहेज करते हैंण दूसरी ओर डी सी लाईन का एक वैकल्पिक मार्ग करीब दो हजार करोड़ की योजना से धनबाद मतारी चंद्रपुरा तक करीब 40 किलोमीटर का कार्य जारी है। इस संबंध में खबर मन्त्र ने शहर के विभिन्न तबके के प्रमुख लोगों की राय ली। प्रमुख समाजसेवी और बियाडा के पूर्व अध्यक्ष विजय कुमार झा का कहना था... डी सी लाईन को बचाने के लिए रियल टाइम मॉनिटरिंग मशीन को नहीं लगाया जाना कई आशंकाओं को व्यक्त करता हैण डीजीएमएस डी सी लाईन पर खतरा अवश्य बताती है पर इसके उपायों का इंतजाम नहीं करती हैण श्री झा ने कहा को अमृत योजना से कतरास स्टेशन को आधुनिक रूप देना महज आई वाश के समान हैण उन्होंने कहा कि अभी विधानसभा चुनाव है चुनाव के बाद जो असली चेहरा है वह सामने आ जायेगाण श्री झा ने कहा कि दिल्ली में बैठकर यहाँ कि डीलिंग कि जाती है।

जागो संस्था के प्रमुख चुन्ना यादव का कहना था। डीसी लाईन में खतरा की बात पूर्णतया षड़यंत्र है। आजादी के पूर्व से स्थापित कतरास गढ़ स्टेशन आजतक सुरक्षित रहा है। 2017 से यह षड्यंत्र चल रहा है। लोगो के आंदोलन के कारण यहां ट्रेनों का चलना शुरू हुआ। श्री यादव ने कहा की इस षड्यंत्र में बीसीसीएल शामिल है। मालगाड़ी चलने से खतरा नहीं है पर सवारी गाड़ी चलने से यहाँ खतरा नजर आ रहा हैण श्री यादव ने कहा कोयला ट्रांसपोर्टिंग पर प्रबंधन की नजर लगी हुई हैण कोल माइंस पर नजर है लोगो की सुविधा से मतलब नहीं हैण एक विकसित शहर कतरास को उजाड़ने की यह साजिश हैण श्री यादव ने कहा की कतरास स्टेशन व डी सी लाईन के लिए वे लोग लड़ाई फिर लड़ेंगे। चैंबर के सचिव मनोज कुमार गुप्ता का मानना ताकि .कतरास के लोगो को ठगने का कार्य किया जा रहा है। अमृत भारत योजना से कतरास स्टेशन का काया कल्प के पश्चात इस तरह का बयान काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। दूसरे स्थानों में नदी के पानी के नीचे से ट्रेन गुजर रही हैण आग को बुझाने के लिए वन टाईम कोशिश क्यों नहीं किया जा रहा हैण सम्पूर्ण प्रयास से आग को बुझाया जा सकता है।

डीसी लाइन कतरास-बाघमारा कोयलांचल की लाइफ लाइन है

सामाजिक कार्यकर्ता राजेंद्र प्रसाद राजा के मुताबिक डीसी लाईन को कतरास बाघमारा कोयलाँचल की लाइफ लाईन कहा जाता है। यहाँ पर बीसीसीएल का 19 रैक प्रतिमाह कतरास से जाता हैण श्री राजा ने कहा कि आजतक डीसी लाईन पर किसी भी प्रकार की बड़ी घटना नहीं घटी हैण ईधार कुछ वर्षो में डी सी लाईन पर खतरा की बात ज्यादातर सामने आई हैण उन्होंने कहा की जमीन के 75 फीट नीचे जमीन की वस्तुस्थिति जानने के लिए लगई गई रियल टाइम मॉनिटरिंग मशीन को चोरी होने के बाद दुबारा नहीं लगाया गयाण तेतुलिया में जमीन को बोरिंग कर ठंडा रखने के लिए सोडियम सिलीकेट डाला जाता थाण परन्तु अभी यह व्यवस्था नहीं है। श्री राजा ने कहा की चुनाव खत्म होने के बाद डी सी लाईन में फिर खतरा की बात होने लगी है।

स्पीड न्यूज

रानी-विनय का सहयोग स्कूल जाने लगी पलक

जमशेदपुर। आर्थिक तंगी के कारण पिछले तकरीबन 3 माह से बारीडीह गुरुद्वारा के पीछे रहने वाली पलक स्कूल नहीं जा रही थी। उसके पास ना तो ड्रेस था न ही किताबें और न बकाया फीस देने की रकम। बारीडीह डेफोडिल उवि के कक्षा 6 की पलक की मां माधुरी देवी भी परेशान थी। मदद के लिए कई जगहों पर गुहार लगायी। लेकिन कहीं से मदद की आस नहीं दिखी। किसी ने उन्हें सृष्टि महिला विकास सहयोग समिति प्राइवेट लिमिटेड की अध्यक्ष रानी गुप्ता से संपर्क करने को कहा। माधुरी ने समाज सेवी रानी गुप्ता से संपर्क साधा। रानी ने माधुरी को आश्वासन दिया कि जहां तक हो सकेगा वह हरसंभव मदद करेंगी। उसके बाद समाजसेवी रानी गुप्ता ने गायत्री शक्तिपीठ परिवार के विनय कुमार सिंह से संपर्क किया और बच्ची की मदद की गुहार लगायी। उसके बाद दोनों ने मिलकर बच्ची की आर्थिक मदद की।

टाटा मोटर्स यूनियन : दो पदों के लिए छह ने खरीदा नामांकन पत्र

जमशेदपुर। टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनियन के दो कमेटी मेंबरों के सेवानिवृत्त होने से रिक्त हुए स्थान पर चुनाव कार्यक्रम चल रहा है। उसी क्रम में चुनाव समिति के द्वारा पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार आज नामांकन पत्र वितरण किया गया। चुनावी कार्यालय ओल्ड कैंटीन टाटा मोटर्स प्रांगण में सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक नामांकन पत्र वितरण की सारी प्रक्रिया पूरी की गई। दोनों क्षेत्र से कई प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र लिया। एबीबीटीएल क्षेत्र से कुल चार प्रत्याशियों ने एक पद के लिए नामांकन पत्र लिया। जिनके नाम निम्नलिखित है :- संतोष कुमार, रऊफ खान, बी के महतो, उपेंद्र कुमार। वहीं प्लांट 3 बी आई डब्ल्यू क्षेत्र से दो प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र खरीदा देवाशीष सतपति और सुनील सिंह। इस तरह से कुल दो पदों के लिए छह प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र खरीदा।

शिवराज-हिमंत के कार्य अनुभव से पार्टी को होगा लाभ : काले

जमशेदपुर। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश प्रवक्ता अमरप्रीत सिंह काले ने झारखंड प्रदेश भाजपा के नव नियुक्त प्रदेश चुनाव प्रभारी और सह चुनाव प्रभारी को बधाई दी और इस दूरदर्शिता पूर्ण नियुक्ति के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा को साधुवाद दिया। झारखंड में आसन्न विधानसभा चुनाव के लिए केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान को प्रदेश चुनाव प्रभारी और असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा को सह प्रभारी नियुक्त किये जाने पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए श्री काले ने कहा कि दोनों नेता कार्यकर्ताओं में संजीवनी फूंक देते हैं। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री एवं मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को भाजपा झारखंड का प्रदेश चुनाव प्रभारी नियुक्त किया जाना संगठन में नयी ऊर्जा और स्फूर्ति पैदा करने वाला कदम है।

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह
स्वामित्व वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह
द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 95708-48433
पिन- -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com
R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797
*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी।
प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

फॉरेस्ट क्लीयरेंस का रास्ता साफ, मिलते ही खुलेगी बंद पड़ी सुरदा माइंस

सांसद विद्युतबरण महतो ने केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री से की बात, मिला आश्वासन

खबर मन्त्र प्रतिनिधि

घाटशिला। सांसद विद्युतवरण महतो के प्रयास से सुरदा माइंस के जल्द खुलने की उम्मीद बढ़ गयी है। भारत सरकार के वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने सुरदा माइंस के फॉरेस्ट क्लियरेंस स्टेज-वन को मंजूरी प्रदान कर दिया है। जाहिर है कि इससे कंपनी प्रबंधन के साथ ही स्थानीय ताम्र मजदूरों के बीच खुशी देखने को मिल रही है।

मालूम हो कि फॉरेस्ट क्लियरेंस स्टेज-वन को सांसद विद्युतवरण महतो एवं आईसीसी के ईडी श्याम सुंदर सेठी के पहल के बाद वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की सचिव ने पूर्व में ही स्वीकृति प्रदान कर दिया था। विभागीय सचिव के बाद विभागीय मंत्री की स्वीकृति का इंतजार था। संसदीय चुनाव और आदर्श आचार संहिता लागू होने के कारण फाइल मंत्रालय में ही पेंडिंग पड़ी हुई थी। चुनाव समाप्त होते और पुनः भूपेंद्र यादव के केंद्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री बनने के साथ स्थानीय सांसद विद्युतवरण महतो एकबार पुनः सुरदा माइंस को लेकर पूरी तरह रेस हो गए।

सांसद प्रतिनिधि दिनेश साव ने बताया कि आईसीसी के ईडी श्याम

बंद पड़ी सुरदा माइंस का गेट।

सुंदर सेठी से बंद सुरदा माइंस के स्टेटस की पूरी जानकारी हासिल करने के बाद सांसद विद्युतवरण महतो ने केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव से फोन पर बातचीत कर सुरदा माइंस के फॉरेस्ट क्लियरेंस स्टेज-वन को स्वीकृति प्रदान करने का आग्रह किया था। सांसद के आग्रह पर केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने भी फाइल को जल्द ही मंजूरी प्रदान करने का भरोसा दिया था।

खबर है कि केंद्रीय वन, पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने सुरदा माइंस के फॉरेस्ट क्लियरेंस स्टेज-वन को स्वीकृति प्रदान कर दिया है। विभागीय मंत्री की मंजूरी के बाद इसे पोर्टल पर भी अपलोड कर दिया गया है। सुरदा माइंस के फॉरेस्ट क्लियरेंस स्टेज-वन की स्वीकृति मिलने से माइंस के जल्द खुलने की भी उम्मीद बढ़ गई है। एचसीएल-आईसीसी के ईडी श्याम सुंदर सेठी समेत अन्य अधिकारी भी इसे लेकर खुश है। खबर है कि फॉरेस्ट क्लियरेंस स्टेज-वन की स्वीकृति के साथ ही एचसीएल-आईसीसी प्रबंधन ने एनवायरमेंट क्लियरेंस का भी प्रोसेस शुरू कर दिया है। यह मंजूरी भी वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार से मिलना है। एनवायरमेंट क्लियरेंस के साथ ही राज्य सरकार के स्तर पर सुरदा माइंस को खोलने की औपचारिकता पूरी को जायेगी। मालूम हो कि एचसीएल-आईसीसी को सुरदा माइंस के 385.52 हेक्टेयर जमीन का लीज अगले 20 वर्षों के लिए राज्य सरकार पहले ही दे चुकी है। भारत सरकार के वन, पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से 323 हेक्टेयर जमीन का एनवायरमेंट क्लियरेंस भी हासिल है। हालांकि, तकनीकी कारणों से शेष बचे 65.52 हेक्टेयर जमीन का फॉरेस्ट क्लियरेंस नहीं होने के कारण एनवायरमेंट क्लियरेंस नहीं मिल रहा था जिससे माइनिंग समेत अन्य गतिविधियां भी बंद पड़ी हुई थी। ऐसे में फॉरेस्ट क्लियरेंस का स्टेज-वन कम्पलीट होने से आईसीसी प्रबंधन की भी उम्मीद काफी बढ़ गयी है। वहीं, सांसद विद्युतवरण महतो के चुनाव जीतने के साथ ही सुरदा समेत अन्य कॉपर खदानों और प्लांट को चलाने के लिए पूरी तरह सक्रिय होने पर लोगों के बीच उत्साह देखने को मिल रहा है।

अपने छात्रों को सोशल वैल्यू प्रदान करता है एक्सएलआरआइ : नरेंद्रन

- एक्सएलआरआइ के 75 वर्ष पूरे होने पर दो दिवसीय ओडिसी का हुआ आयोजन

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। एक्सएलआरआइ की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने पर टाटा ऑडिटोरियम में दो दिवसीय ओडिसी का आयोजन किया गया जिसमें एक्सएलआरआइ के सभी प्रोफेसरों के साथ ही पूर्व प्रोफेसरों व संस्थान के 45 पूर्व छात्र-छात्राओं ने भी हिस्सा लिया। मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में टाटा स्टील के एमडी सह एक्सएलआरआइ के चेयरमैन जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में एक्सएलआरआइ के डायरेक्टर फादर एस जॉर्ज, एक्सएलआरआइ की एडमिनिस्ट्रेशन डीन फादर डोनाल्ड डिसूजा, एकेडमिक डीन

पूर्ववर्ती छात्रों एवं प्राध्यापकों के साथ चेयरमैन टीवी नरेंद्रन।

प्रोफेसर संजय पात्रो, एक्सएलआरआइ एल्युमनी एसोसिएशन के प्रेसिडेंट राणावीर सिन्हा मौजूद थे।

कार्यक्रम के दौरान सभी को संबोधित करते हुए टीवी नरेंद्रन ने कहा कि एक्सएलआरआइ जैसे संस्थान मजबूत सोशल वैल्यूज प्रदान करते हैं जो कि इस संस्थान की यूएसपी है। कहा कि एक्सएलआरआइ के शिक्षकों द्वारा जिस प्रकार से देश व समाज को अच्छे मैनेजर के साथ बेहतर इंसान भी तैयार करते हैं। उन्होंने सभी प्रोफेसरों के साथ ही पूर्व प्रोफेसर व विद्यार्थियों का स्वागत किया।

इस दौरान एक्सएलआरआइ के डीन फाइनांस फादर डोनाल्ड डिसूजा ने कहा कि एक्सएलआरआइ के साथ लोगों का एक इमोशनल जुड़ाव है। यही वह जुड़ाव है जो यहां से पढ़ कर बड़े पदों पर आसीन छात्र-छात्राओं को भी वापस उनके कॉलेज तक लाता है। कार्यक्रम के दौरान एक पैनल डिस्कशन का भी आयोजन किया गया जिसे प्रो. सुनील कुमार षाड़ंगी ने संचालन किया। इसमें कुल छह पूर्ववर्ती विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इसमें प्रो. रश्मि मेहती, प्रो रेनु मद्दू, प्रो. जीतू सिंह, रोनाल्ड डिक्रॉस्टा समेत अन्य ने अपने पक्ष रखे।

एक नजर में

हरिना मेला में सांसद ने की बाबा मुक्तेश्वर नाथ की पूजा

पोटका। पूर्वी सिंहभूम जिला के प्रसिद्ध मुक्तेश्वरधाम हरिणा मेला के तीसरे दिन सोमवार को भी भक्तों की भीड़ उमड़ी। सोमवार को जमशेदपुर लोकसभा क्षेत्र से लगातार तीसरी बार सांसद बने विद्युतवरण महतो पत्नी उषा महतो के साथ हरिणा मेला पहुंचे। उन्होंने भगवान भोलेनाथ पर जलाभिषेक कर पूजा अर्चना कर क्षेत्र के सुख, समृद्धि की कामना किया। उन्होंने मुक्तेश्वरधाम समिति से भेंट कर मेला के स्थिति की जानकारी ली। सोमवार को भी हरिणा मेला में आसपास गांव के सैकड़ों भक्तों पहुंचे एवं मेला का आनंद लिया। हरिणा मेला में भाजपा नेता गणेश माहुली भी शामिल हुए। इस अवसर पर विधाधर साहु, ब्रजांकण दंडपाट, यशवंत महतो, चितरंजन सीट, राहुल महतो, श्यामल महाकुड़ उपस्थित थे।

आजसू छात्र मोर्चा के कई नेता झामुमो में शामिल

जमशेदपुर। आजसू पार्टी के छात्र नेताओं ने आज जुगसलाई विधायक मंगल कालिंदी से उनके कार्यालय में पहुंचकर मुलाकात की और उन्हें पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। इस दौरान आजसू के छात्र नेताओं ने विधायक से कहा कि उनके अच्छे व्यवहार और क्षेत्र में किया जा रहे विकास कार्य से वह सभी प्रभावित है और विधायक जी के नेतृत्व में और उनके साथ मिलकर झारखंड मुक्ति मोर्चा के लिए कार्य करना चाहते हैं। इसके बाद विधायक मंगल कालिंदी ने सभी छात्र नेताओं को झामुमो में शामिल करवाया और झारखंड मुक्ति मोर्चा में उनका स्वागत किया। आजसू छात्र मोर्चा के कॉलेज अध्यक्ष आशुतोष कुमार, छात्र मोर्चा के कोल्हान उपाध्यक्ष आकाश सिंह, छात्र मोर्चा के महानगर अध्यक्ष अंकित केसरी, जिला उपाध्यक्ष युवराज सिंह और जिला उपाध्यक्ष सूर्यकुमार आदि विधायक के समक्ष झामुमो में शामिल हुए।

अन्नू बनीं सामाजिक संस्था अस्तित्व की जिलाध्यक्ष

जमशेदपुर। साकची स्थित जुबली पार्क में अस्तित्व के सामाजिक कार्यों की वैचारिक संगोष्ठी आयोजित की गयी। इस संगोष्ठी में संस्था की सचिव और संस्थापिका मीरा तिवारी ने बताया कि किस तरह पिछले चार सालों में अस्तित्व के सामाजिक कार्यों और समाज में व्याप्त महत्वपूर्ण मुद्दों को अपना सामाजिक दायित्व समझते हुए संस्था द्वारा सरकार और प्रशासन के समक्ष प्रखरता से उठाया गया। करोना काल से लेकर अब तक लोगों को जागरूक करने के साथ ही हर तरह से उनकी मदद करना इसके अलावा महिला सशक्तिकरण, बाल शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र में सकड़ों नेत्र और स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन किया गया। समाज में अस्तित्व संस्था ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। बैठक को अभिभावक स्वरूप और वरिष्ठ नागरिक संघ के अध्यक्ष रविन्द्र नाथ चौबे ने भी संबोधित किया और संस्था को अपनी तरफ से हर संभव सहयोग और मार्गदर्शन देने की बात कही। बैठक में इस्तेमाल बस्ती बर्माखाइंस निवासी अन्नू चौबे को पूर्वी सिंहभूम जमशेदपुर महानगर की जिला अध्यक्ष के सम्मान से सम्मानित करते हुए नियुक्ति पत्र दिया गया। बैठक में मीरा तिवारी, रविन्द्र नाथ चौबे, अन्नू चौबे, ब्रजेश मिश्रा, संजीत द्विवेदी, रमावती देवी, ममता देवी, चंदा देवी, ममता सिंह, शोबिता बेहरा आदि मौजूद रहे।

गम्हरिया में धूमधाम से मनी बकरीद

गम्हरिया। सरायकेला-खरसावां जिले के विभिन्न क्षेत्रों में मुस्लिम समुदाय के लोगों पे बकरीद धूमधाम से भाईचारे के साथ मनाया। मौके पर सैकड़ों मुस्लिम लोगों ने निर्धारित समय पर मुहिया स्थित ईदगाह में नमाज अदा किया और सभी को एकता, प्रेम व भाईचारे का पैगाम दिया। साथ ही, एक दूसरे के गले लगकर बकरीद की बधाई दी। इस दौरान समाज के लोगों ने बताया कि यह पर्व हम इब्राहिम इस्लाम की याद में मनाते हैं जिन्होंने अल्लाह के हिकमत में सारी अजीज चीजों का कुर्बान कर दिया था। उन्होंने अल्लाह की रहमत में अपनी जान भी कुर्बान कर दी थी। बताया कि आज के दिन हम सभी अपने अंदर छुपे नफरत, घमंड तथा तमाम बुराईयां जो हमारे जेहन में प्रिय बनकर बैठा रहता है, उसे कुर्बान कर देते है और एक नई सोच के साथ आपसी भाईचारा तथा मुहब्बत को सलामत रखते हुए एक नई जिंदगी की शुरुआत करते हैं।

रक्तदान कर आनंदमार्गी रूपा देवी ने झारखंड सरकार से लिया सम्मान

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। 14 जून को विश्व रक्तदान दिवस पर झारखंड सरकार की झारखंड स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी रांची के पब्लिक हेल्थ ऑडिटोरियम नामकुम, रांची में आयोजित 20वें सम्मान समारोह में आनंद मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम ग्लोबल के रिलीफ कोऑर्डिनेटर सुनील आनंद की धर्मपत्नी आनंदमार्गी रूपा देवी को 1 वर्ष में ज्यादा रक्तदान करने के लिए मोमेंटो एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। हर महीने आयोजित होने वाले आनंद मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम ग्लोबल के रक्तदान शिविर में अपने मानक के अनुसार

सम्मान ग्रहण करती आनंदमार्गी रूपा देवी।

प्रत्येक वर्ष 120 दिन के अंतराल में संस्था के रक्तदान शिविर में पिछले काफी सालों से रक्तदान कर रही है। सम्मान प्राप्त करने के बाद रांची स्थित आनंद मार्ग बाबा क्वार्टर में आनंद मार्ग के विश्वस्तरीय महासचिव आचार्य अभीरामानंद अवधूत एवं संस्था के वरीय पदाधिकारी से आशीर्वाद भी लिया गया।

भाजमो को इस राज्य के थर्ड फ्रंट के रूप में खड़ा करेंगे : सरयू राय

- चुनावी तैयारी में जुटी भाजमो, बूथ प्रभारी व भवन प्रभारियों की बैठक संपन्न

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। भारतीय जनतंत्र मोर्चा जमशेदपुर महानगर की अहम बैठक जिलाध्यक्ष सुबोध श्रीवास्तव की अध्यक्षता में बारीडीह स्थित विधानसभा कार्यालय में आयोजित हुई। बैठक में मुख्य रूप से जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय उपस्थित हुए। बैठक में आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पूर्वी विधानसभा प्रत्येक मंडलों में बूथ प्रभारियों एवं भवन

बैठक को संबोधित करते विधायक सरयू राय।

प्रभारियों से चर्चा की गई। सभी भवन प्रभारियों को अपने भवन के अंतर्गत आने वाले बूथों की संरचना को मजबूत करना, व्यापक रूप से प्रत्येक बूथ में भ्रमण कर स्थानीय कार्यकर्ताओं से संपर्क स्थापित करने का निर्देश दिया गया। एक बूथ में 10 व 10 से अधिक सक्रिय और सजग कार्यकर्ताओं की टोली बनाने को कहा। श्री राय ने कहा कि चुनाव के लिए सबसे प्रमुख भवन है। पूर्वी विधानसभा अंतर्गत 120 भवन है। सभी पदाधिकारी मंडलवार भवनों में ध्यान दें।

अबकी बार पलटी मार... अभियान का हिस्सा बने नागरिक, भगायें डेंगू मच्छर

- टाटा स्टील यूआइएसएल ने डेंगू भगाने को लांच किया विशेष अभियान
- विश्व डेंगू दिवस पर सामुदायिक सहभागिता अभियान की शुरुआत

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। विश्व डेंगू दिवस के अवसर पर, टाटा स्टील यूटिलिटीज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर सर्विसेज लिमिटेड (टाटा स्टील यूआईएसएल) डेंगू के खतरे से निपटने के उद्देश्य से एक व्यापक सामुदायिक सहभागिता अभियान की शुरुआत की घोषणा की।

डेंगू के खिलाफ जागरूकता अभियान लांच करते कंपनी के जीएम आरके सिंह और घरों के प्रांगण में फेंके गये डिब्बे, डिबिया ऐसे पलट कर रखें ताकि बरसात का पानी उसमें जमा न हो।

विभाग की कठोर वैज्ञानिक नियंत्रण गतिविधियों, जिसमें एंटी-लार्वा उपचार, फॉगिंग और व्यापक जागरूकता अभियान शामिल हैं, के बावजूद नागरिकों की सक्रिय भागीदारी के बिना डेंगू को नियंत्रित करना संभव नहीं है। जागरूकता बढ़ाने, रोकथाम को बढ़ावा देने और डेंगू से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए, टाटा स्टील यूआईएसएल एक विशेष जागरूकता सत्र का आयोजन कर रहा है।

सर्वश्रेष्ठ पेंटिंग बनाने वालों को सांसद विद्युत ने किया पुरस्कृत

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। विश्व पर्यावरण दिवस से लगातार विभिन्न कार्यक्रमों के जरिये पर्यावरण संरक्षण और संरक्षण का संदेश दे रही बस्ती विकास समिति की ओर से 6 दिवसीय चित्रांकन प्रतियोगिता का समापन रविवार को हुआ। पर्यावरण चुनौती एवं समाधान विषय पर आधारित चित्रांकन प्रतियोगिता में शहर के विभिन्न क्षेत्रों से कुल 115 बच्चे-बच्चियों ने भाग लिया। बागुन नगर स्थित आशीर्वाद मंडप में आयोजित प्रतियोगिता के समापन समारोह में जमशेदपुर के सांसद विद्युत महतो मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस दौरान 5 से 8 आयु वर्ग में अंकुर आनंद, यशस्वी अग्रवाल एवं आरोही सिंह ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

शहीद पोटो हो पर फिल्म बनायें स्थानीय फिल्मकार, सब्सिडी देगी सरकार : चंपई सोरेन

- नेशनल हो फिल्म फेस्टिवल के समापन समारोह को सीएम ने किया संबोधित

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। गत 16 जून को एक्सएलआरआइ ऑडिटोरियम में ऑल इंडिया हो फिल्म एसोसिएशन कि ओर से नेशनल हो फिल्म फेस्टिवल समारोह को हो जनजातीय दमा - दुमंग धुन पर नृत्य कर मुख्यमंत्री चम्पई सोरेन का स्वागत किया गया, ऑल इंडिया हो फिल्म एसोसिएशन के अध्यक्ष सुरा बिरुली ने स्वागत भाषण दे कर सभी अभिनन्दन किया।

अवार्ड देते मुख्यमंत्री चंपई सोरेन। साथ में मंत्री बन्ना गुप्ता व दीपक बिरुआ और समापन समारोह में रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति देता डांस ट्रूप।

मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री चम्पई सोरेन, विशिष्ट अतिथि आदिवासी कल्याण मंत्री दीपक बिरुवा, स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता, जिला परिषद अध्यक्ष सोनाराम बोदरा, एसोसिएशन के अध्यक्ष सुरा बिरुली ने ओत गुरु कोल लाको बोदरा की चित्र पर माल्यार्पण कर फेस्टिवल का शुभारंभ किया

मुख्यमंत्री चम्पई सोरेन ने कहा कि अच्छे फिल्म बने शहीद पोटो हो की फिल्म बने झारखंड सरकार आप लोगों को सब्सिडी देने का काम करेगी। समाज के लोगों को अच्छा मैसेज जाए और समाज उस पर गर्व करें, कोई भी फिल्म बनती है तो एक्टर, डायरेक्टर, और कई लोग मिल कर एक फिल्म को बनाने में एक जुट हो कर काम करते है तब जा कर एक अच्छी फिल्म बनती है। सरकार हर संभव फिल्म बनाने में मदद करेगी आप लोग एक मंच पर आइये।

बुधन सिंह हेस्सा को दिया गया लाइफटाइम अचिवमेंट पुरस्कार : ऑल इंडिया हो फिल्म एसोसिएशन की ओर से सिने अवार्ड समारोह में इस वर्ष साहित्यकार व सामाजिक कार्यकर्ता बुधन सिंह हेस्सा को लाइफटाइम अचिवमेंट पुरस्कार नवाजा गया। एसोसिएशन के अध्यक्ष सुरा बिरुली ने बताया कि ऑल इंडिया हो फिल्म एसोसिएशन की ओर से हर वर्ष समाज के वैसे लोगों को यह पुरस्कार दिया जाता है जो लंबे समय से विभिन्न क्षेत्रों में समाज के उत्थान व प्रगति के लिए कार्य कर रहे हैं। बुधन सिंह हेस्सा (60 वर्षीय) लंबे समय से साहित्य सृजन का कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही सामाजिक कार्यों में भी अग्रणी भूमिका अदा कर रहे हैं। बुधन सिंह हेस्सा को ओडिशा में साहित्य रत्न व साहित्य अकादमी की ओर से हो कवि के रूप में सम्मानित किया गया है। इसके साथ ही फिल्म निर्माण में भी उनकी गहरी रुचि है।

समापन समारोह में राजुराज बिरुली एंड पूजा -सुपर मॉडल ग्रुप, (जमशेदपुर) राजकुमार पुरती एन्ड सोनी मुर्मू (ओडिशा) ग्रुप, बप्पी एन्ड ग्रुप (रायरंगपुर) अक्षय सिंह एंड पिंकी मुंडा ग्रुप (पश्चिम बंगाल) अरुण मुंडरी डांस ग्रुप (ट्रेडिशनल) ग्रुप (रांची) फूलमती सिरका एन्ड राजेश - ग्रुप (चाईबासा) दीपिका एंड दीप्ति हेस्सा सिस्टर, बिंदास डांस ग्रुप, बप्पी एन्ड डांस ग्रुप, फूलमती एन्ड राजेश डांस परफॉर्मेंस किया।

पानी हमारे लिए कितना अहम है। यह सभी जानते हैं। एक तरफ हमारे शरीर के 70 फीसदी से ज्यादा हिस्से में पानी है तो दूसरी तरफ धरती का 71 फीसदी हिस्सा पानी से ढका हुआ है। 1.6 प्रतिशत पानी जमीन के नीचे है और 0.001 प्रतिशत वाष्प और बादलों के रूप में है। धरती की सतह पर जो पानी है उसमें से 97 प्रतिशत सागरों और महासागरों में है जो नमकीन है और पीने के काम नहीं आ सकता। केवल तीन फीसदी पानी ही पीने योग्य है जिसमें से 2.4 प्रतिशत ग्लेशियरों और उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव में जमा हुआ है और केवल 0.6 प्रतिशत पानी नदियों, झीलों और तालाबों में है जिसे इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका मतलब यह हुआ कि पीने योग्य पानी धरती पर बहुत ही कम है। रोज की जरूरतों की अगर बात की जाए तो एक व्यक्ति औसतन 30-40 लीटर पानी रोजाना इस्तेमाल करता है। धरती और पानी बचाने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी नई पीढ़ी पर है। वर्तमान परिदृश्य में जल संरक्षण की अहमियत पर गंभीरता से मंथन और क्रियान्वयन अब बेहद जरूरी हो गया है।

समाजिक प्रयास से जल संरक्षण की अनोखी पहल

नीर, नारी और विज्ञान के माध्यम जल-जन जोड़ो अभियान

उपाय

जल-जन जोड़ो अभियान के संयोजक संजय सिंह का कहना है कि जल संकट को गंभीरता से नहीं लिया गया तो 2030 तक देश की 40 फीसदी आबादी पानी के लिए तरसेगी। संयुक्त राष्ट्र के ताजा आंकड़ों के अनुसार 2025 तक दुनिया की 1.8 अरब आबादी पीने के पानी की कमी का संकट झेलेगी। यूरोपीय संघ का कहना है कि साफ पानी पाना सिर्फ बेसिक मौलिक अधिकार ही नहीं है बल्कि यह सुरक्षा का मामला बन गया है। विश्व संस्था की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त पानी है, लेकिन उसके सही प्रबंधन की जरूरत है। भारत के संदर्भ में भी यही बात कही जा सकती है। प्रस्तुति : बासुकीनाथ पाण्डेय

जल संरक्षण के कार्यक्रम

नीर-नारी और विज्ञान पर आधारित थिएटरों को देश के 16 शहरों में किया जा रहा है और यह 160 स्कूलों में क्रमबद्ध तरीके से संचालित हो रहे हैं। हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, चंडीगढ, ओडिशा आदि शहरों में आयोजित किया जा चुका है और बाकी शहरों में संचालित करने का सिलसिला जारी है। इसके लिए छोटे शहरों का चुनाव किया गया है। इसके लिए छठी क्लास से नवीं क्लास के बच्चों को शामिल किया जाता है। थिएटर के जरिए मंचन होनेवाले इस जागरूकता से भरे कार्यक्रम का मकसद यही है कि विज्ञान की बेहद सरल भाषा में नारी के जरिए नीर को समझा जाए और समय रहते उसके महत्व का आकलन कर उसे संरक्षित करने का प्रयास किया जाए। दरअसल साइंस को थिएटर के जरिए एक टूल बनाने की कोशिश की गई है। उसका स्वरूप जटिल या बोझिल नहीं हो इसके लिए सहज संवाद का सहारा लिया जाता है। वो बात माइम के जरिए लोगों तक पहुंचे। या फिर पोस्टर पर लिखे शब्द जल की निर्मल या अविरल धारा को प्रवाहित करते हो। या फिर कलाकार अपनी भूमिकाओं के जरिए मानव मस्तिष्क में पैठ बनाए और नीर-नारी और विज्ञान को हर अंदाज में सार्थक कर दें। मकसद वहीं की नारी नीर को विज्ञान की सरल भाषा में समझाती हो। दरअसल पुराने दौर की कहावतों और कथनों को आज की युवा पीढी बड़ी शिद्दत से फॉलो करती है। ठीक उसी प्रकार विज्ञान को आसान मिसालों के जरिए किसी भी तथ्य को समझाने की कोशिश की जाए तो वह बड़ी आसानी से आपके अंतःकरण में उतरता चला जाता है। वैसे भी जब नीर को नारी का साथ मिल जाए तो यह स्थिति सोने पर सुहागा से कम नहीं। दरअसल इसे आप ईको-वॉश प्रोग्राम भी कह सकते हैं।

लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में अपनी मौजूदगी दर्ज करानेवाले राकेश खत्री के जेहन में जब विज्ञान के जरिए पानी को ले-मैन तकनीक अंदाज में बताने का ख्याल आया तो उन्होंने सबसे पहले स्कूली बच्चों और थिएटर की कल्पना की। स्कूल इसलिए क्योंकि बच्चों को वह सही मायने में जल-संवाहक और जल-दूत मानते है। उनका ऐसा मानना है कि बच्चे किसी भी विषय-वस्तु को बिना किसी लाग-लपेट के सहजता से स्वीकार करते हैं जिससे अमुक विषय पहले के मुकाबले और सहज होकर प्रखर बन जाता है। थिएटर इसलिए क्योंकि थिएटर या रंगमंच आज भी लोगों के दिलों तक बेहद हल्के-फुल्के अंदाज में रखने का सबसे सशक्त माध्यम है।

कार्यक्रम की शुरुआत करने के लिए जिस स्कूल का चुनाव किया गया होता है। वहां पहले कैरेक्टर को चुनने की बारी आती है। स्कूलों में बच्चों को नीर-नारी और विज्ञान के जरिए क्या और कैसे बताना है, इसकी उन्हें पूरी छूट होती है। राकेश जी लंबी मेहनत-मशक्कत के बाद पात्रों और उनकी भूमिका को तय करते हैं। फिर कैसे करना है यह सुनिश्चित किया जाता है।

अंत में वो दिन भी आ जाता है जब तैयारियों को अंजाम देने की बारी आती है। थिएटर शुरू होने पहले खामोशी होती है। दर्शकों में बैठे स्कूली बच्चे और उनके सैकड़ों अभिभावक उत्सुकता के केंद्र-बिंदु में खो जाते हैं। क्या होनेवाला है? कैसा होनेवाला है इसको लेकर सबके मन में कई सवाल और उत्सुकता हिलोरे ले रही होती है। तभी एक म्यूजिक उनकी उत्सुकता को तोड़ता है। स्टेज पर हलचल होती है। सामने खड़ी 'वसुंधरा' (पृथ्वी) मौन है। उसके मौन में कई सवाल है। वह खुद की व्यथा बताती है। दोहन की ताबड़तोड़ कोशिशों की दास्तान सुनाती 'वसुंधरा' संरक्षण के उन किरणों पर भी रोशनी डालती है। तभी पानी की मौजूदगी दिखती है।

संस्कारों से पानी की बचत

महिलाएं बाहर नौकरी करने के साथ घर का मोर्चा भी बखूबी संभालती है और इसमें पुरुष का योगदान उनके मुकाबले तो काफी कम होता है। एक नारी के स्वभाव में सहेजना, समेटना और संरक्षण करना होता है। बिखरे घर को समेटना वहीं जानती है। घर के तारतम्य टूटने की स्थिति में एक नारी ही उसे बखूबी सहेजती है। घर में बिजली और पानी की बर्बादी को रोकने की सबसे सजग प्रहरी वही है। इसलिए एक पुरानी कहावत भी है- घर औरतों से होता है और घर औरतों से संजता और संवरता है।काशी में रहने वालों ने ही असी की ऐसी हालत कर दी है। पहली बार कुछ लोगों ने असी के किनारे को पाटने की कोशिश की थी, तभी अगर लोग जाग्रत हो जाते तो आज यह नौबत नहीं आती।

संस्कारों से ही पानी की बचत कर सकते हैं और पर्यावरण सुधार सकते हैं। नीर को बचाने के लिए नारी को आगे लाना होगा, ऐसा ईको रूट फाउंडेशन के अध्यक्ष राकेश खत्री का मानना है। इन स्कूलों में नीर नारी और विज्ञान पर आधारित थिएटर को स्कूली बच्चे संचालित करते हैं। राकेश ने विज्ञान की सरल भाषा में नीर को बचाने के लिए नारी को आगे लाया है जिसमें लड़के और लड़किया उनके लिए जल संवाहक, जल दूत, और जल योद्धा की भूमिका अदा कर रहे है। हालांकि ज्यादातर इस कार्यक्रम में लड़कियां शिरकत करती है। यह कार्यक्रम केंद्र सरकार के डिपार्टमेनट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (राष्ट्रीय विज्ञानं एवं प्रोधौगिकी संचार परिषद् द्वारा प्रायोजित है जिसके प्रोग्राम डायरेक्टर डॉक्टरसंपोष कुमार हैं जो केंद्र सरकार के राष्ट्रीय विज्ञानं एवं प्रोधौगिकी संचार परिषद् विभाग में साइंटिस्ट के पद पर कार्यरत हैं। नीर यानी पानी का संरक्षण महिलाएं ही बेहतर तरीके से कैसे करना कैसे जानती है? राकेश इस सवाल पर मुस्कुराते हुए जवाब देते हैं- 'घर में होम मिनिस्टर कौन होता है? एक घर को कौन चलाता है? आप ध्यान से देखें कि एक घर में हाउस वाइफ, गृहिणी सबसे ज्यादा कामकाज करती है। समाज में ऐसे मिसालों की भी कमी नहीं जब

चुनौती है भारत में साफ पानी की सप्लाई

एक अनुमान के मुताबिक भारत में लगभग आठ करोड़ लोगों को पीने का साफ नहीं मिल रहा है. सूखे की गंभीर स्थिति का सामना कर रहे महारष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र और अन्य राज्यों में पानी को लेकर खून खराबे की नौबत तक आ जाती है। गांवों की तो छोड़ दें, देश के कई शहरों में लोगों को पानी की किल्लत का सामना करना पड़ता है। पानी को लेकर आये दिन लड़ाई झगड़े की खबरें भी आती रहती हैं। लेकिन महाराष्ट्र के लातूर में पानी का संकट इस बार इतना गहरा गया है कि प्रशासन को यहां जल स्त्रोतों के आसपास धारा 144 का प्रयोग करना पड़ा है।

दुनिया के नीर और नारी का रिश्ता

हर कोने मे नीर और नारी का एक ही रिश्ता है और वो है पवित्रता और जिम्मेदारी का। घर में वह विद्युत प्रहरी (बिजली की बचत करनेवाला) और जल प्रहरी (पानी को बचाने वाला) की भूमिका निभाती है। जिस प्रकार नारी सहजता से घर को समेटने और सहेजने की कला जानती है उसी प्रकार नारी विज्ञान के जरिए पानी को सदियों से समेटती और सहेजती आई है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रकृति की दो महान रचना नीर और नारी है। नारी सृष्टि की संचालिका है तो जल जीवन का संरक्षक है। नारी को पूजे जाने की परंपरा और उसकी चर्चा हमारे पुराणों और महाभारत में भी आती है तो जल को हिंदू धर्म शास्त्रों ने देवता माना है। दोनों भारत में पूजे जाते हैं और इन दोनों का भारतीय संस्कृति में अक्षुण्ण स्थान है।

नौ राज्यों की स्थिति गंभीर घटता भूजल और पलायन की समस्या झेलते झारखंड सहित पठारी राज्य

झारखंड के पठार से वन गायब हो चुके हैं। वर्षा का पानी बहकर सीधे नदियों के माध्यम से समुद्र पहुंच जाता है। राज्य की वर्तमान सरकार ने एक लाख ढोभा बनाकर एक अच्छा प्रयास किया है लेकिन जिस प्रकार बीते दशकों में भूजल के स्तर में चिंताजनक गिरावट आयी है। भूजल का स्तर गिरते-गिरते नौ राज्यों में खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है। ऐसे राज्यों में नब्बे फीसद भूजल का दोहन हो चुका है और उनके पुनर्भरण में काफी गिरावट आई है। केंद्रीय जल आयोग द्वारा 2014 में जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार देश के अधिकांश बड़े जलाशयों का जल-स्तर वर्ष 2013 के मुकाबले कम पाया गया था। आयोग के अनुसार देश के बारह राज्यों हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, झारखंड, त्रिपुरा, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के जलाशयों के जल-स्तर में काफी गिरावट दर्ज की गई थी।2015 में भी लगभग यही स्थिति रही। सूखा और पानी की कमी ने पलायन को भी बढ़ावा दिया है. मराठवाड़ा और विदर्भ से लाखों लोग पलायन कर चुके हैं। जब एक पत्नी, बच्चे और घर संभालती है तो दूसरी पत्नी सिर्फ पानी लाने का काम करती है, क्योंकि महिलाओं को अपने घरों से कई किलोमीटर तक पैदल जाकर पानी लाना पड़ता है। राजधानी दिल्ली तक में सभी को नल से पानी नहीं मिल रहा है, जिसकी वजह से जल माफिया का उदय हो गया है। वे किल्लत का सामना कर रहे लोगों को महंगे में पानी बेचते हैं।

कृषि एक अन्य मसला है। दुनिया की कुल आबादी का 18 फीसदी भारत में है जबकि शुद्ध जल का केवल 4 फीसदी हमारे यहां है। इसमें से 80 फीसदी का इस्तेमाल खेती में होता है। देश के किसान चावल, कपास, गेहूं और गन्ने जैसी पानी की खपत वाली फसल पसंद करते हैं। चावल निर्यात की जाने वाली प्रमुख फसल है। एक किलो चावल उगाने में करीब 3,500 लीटर पानी लगता है। परंतु किसानों को दूसरी फसल उगाने के लिए मनाना आसान नहीं है। देश में अधिकांश बारिश जुलाई से सितंबर के दरमियान होती है। भंडारण और समुचित बुनियादी ढांचे या जल प्रबंधन के अभाव में कुल बारिश का बमुश्किल 20 फीसदी इस्तेमाल हो पाता है। केंद्र में जल मंत्रालय को भी पानी के अलावा अन्य चुनौतियों का सामना करना होगा। नल से पानी के वितरण के लिए बुनियादी सुविधाएं बहुत अहम हैं। ग्रामीण इलाकों में इसकी हालत खस्ता है। इसका आधुनिकीकरण करने की आवश्यकता है। पानी राज्य की विषयवस्तु है और अधिकांश राज्यों में झील और तालाब शहरीकरण और औद्योगीकरण की भेंट चढ.गए हैं। पानी माफिया, अचल संपत्ति लॉबी और यहां तक कि किसान भी केंद्र का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते। केंद्र केवल अंतरराज्यीय नदियों के माध्यम से हस्तक्षेप कर सकता है वह भी तब जब संसद जनहित में कानून बना दे।

नदी जब मरणासन्न हो जाती है तब उसको पुनर्जीवित करने के लिए लोग चिंतित होते हैं। लेकिन ऐसे लोग मुट्ठी भर हैं। जब तक यह मुट्ठी भर चेतना व्यापक जनचेतना में तब्दील नहीं होती, नदियों को बचाना संभव नहीं है। इसलिए अब यह बहुत जरूरी है कि बच्चों में बचपन से ही नदियों का सम्मान करने की बात भरी जाए। चाहे वे बच्चे ग्रामीण हों या शहरी। हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसी हो कि प्राथमिक स्तर से ही नदियों के प्रति लगाव पैदा करने वाले पाठ बनाए जाएं। फिर चाहे पहली कक्षा के बच्चे के लिए चार-छह पंक्तियों का कोई नदी गीत हो या फिर स्नातकोत्तर स्तर पर नदियों पर व्यापक अध्ययन वाला कोई पाठ। कहने का मतलब यह कि बचपन से लेकर जवानी तक बच्चे के जेहन में यह बात रहनी चाहिए कि नदी कितनी जरूरी है। उसका संरक्षण हमारा परम कर्तव्य है, क्योंकि यही वह नदी है जिसके बलबूते हमारी प्यास बुझती है। नदी हमारी जीवनदायिनी है। बच्चों को जब तक हम नदी का महत्त्व नहीं समझाएंगे, उनको जब तक नदियों के निकट नहीं लाएंगे, नदियों के तट की साफ-सफाई करवाने के लिए उन्हें प्रेरित नहीं करेंगे, वे नदियों के महत्त्व को भला कैसे समझेंगे! ऐसा कुछ अभियान चले तब जाकर बच्चों में नदियों के प्रति अनुराग विकसित होगा। सरकारी हो या निजी, हर तरह के स्कूलों के सभी बच्चों को नदियों के तट पर लाना चाहिए। वहां उनसे शपथ दिलाना चाहिए कि हम जीवन भर नदी को बचाने का प्रण करते हैं। नदी में भूल कर भी कचरा नहीं डालेंगे। शहर का दूषित जल या कचरा नदी में जाने से हम रोकेंगे। नदी को लेकर जो चिंता हमारा समाज गरमी के अवसर पर दिखाता है, उसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि वह भविष्य की आशंका से भयग्रस्त हो जाता है कि अगर कल को जल ही नहीं रहा, तो हाहाकार मच जाएगा।

नारी की नीर संरक्षण में भूमिका

नारी सदियों से जल सरंक्षण में एक अहम भूमिका निभाती आई है। जब भी जल संकट और जल प्रदूषण की स्थिति उपजती है तो उसका भुगतान भी नारी को ही पड़ता है । हमारे विकासशील देश भारत में जल लाने का कार्य केवल महिलाओं और बच्चों को ही करना होता है। आपके जेहन में शायद अब वो तस्वीरें घूम रही होंगी जब आपने रेगिस्तान या पहाड़ी इलाकों में औरतों को पानी ले जाते हुए देखा होगा। हमारे देश में ऐसी कुछ जगहें है जहां पानी लाने के लिए औरतों को मीलों दूर पैदल जाना होता है। अब नीर के इस समस्या के बीच नारी को ही उसके उत्थान के लिए आगे आना होगा। नारी को पूरे विश्व में जल संवाहक माना जाता है।सदियों बाद भी कायम रहें।

बूंद-बूंद का महत्व

हम लोग अपनी-अपनी नदियों के प्रति कितने सजग हैं, इसका अनुमान नदियों की हालत देख कर ही लगाया सकता है। देश की अधिकतर नदियां प्रदूषण की मार झेल रही हैं। फिर चाहे उत्तर प्रदेश की गंगा हो, असी और वरुणा हो या आमी नदी हो। बनारस के बीचोंबीच से बहने वाली नदी असी तो 'असी नाला' के रूप में पहचानी जाती है। अब जबकि पूरा परिदृशय बदल चुका है, असी नदी नाले में तब्दील हो गई है तो मुट्ठी भर लोग वहां असी को बचाने और पुनर्जीवित करने की चिंता कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ की इंद्रावती, दूध, हसिया, हसदेव, शिवनाथ, खारुन, केलो या अरपा हो या पूर्वोत्तर की नांबुल नदी हो- नदी जब मरणासन्न होने लगती है, तब हमारी लोक चेतना जाग्रत होती है। तब मुट्ठी भर लोग नदी किनारे जाते हैं और उसे प्रणाम करके जन-जागरण यात्रा शुरू करते हैं।

ऐसे आयोजन लगभग वार्षिक श्राद्ध की तरह अक्सर गरमी के मौसम में देखने को मिलते हैं। हम अजीब दुनिया के प्राणी हैं। जो नदी हमारी मां की तरह है, जिसकी जलधार हमें जीवन देती है, उसी को हम नष्ट करने पर आमादा रहते हैं। भारत का नियाग्रा जलप्रपात कहे जाने वाले बस्तर के चित्रकोट में एक बूंद भी पानी नहीं है, क्योंकि इंद्रावती लगभग सूख चुकी है। छत्तीसगढ़ की अन्य नदियों की भी यही दुर्दशा है। जलविहीन नदियों को देख कर कुछ लोग विचलित हो रहे है। पिछले दिनों कुछ लोगों ने स्कूली बच्चों के साथ इंद्रावती जन-जागरण यात्रा निकाली। शिवनाथ नदी के संरक्षण के लिए शिवनाथ सेवा मंडल बना जो पिछले एक-दो वर्षों से नदी के तट पर निरंतर आरती करता है, साफ-सफाई करता है। कुछ परपीड़क किस्म के लोग इन्हें विचित्र नजरों से देखते हैं और मुस्कुरा कर आगे बढ़ जाते हैं। वे उनके काम में हाथ नहीं बंटाते, बल्कि उपहास की दृष्टि से देखते हैं।

कहीं पानी का नल पानी की बूंदों और पानी की तेज धार की अहमियत बताता है। तो कहीं ट्यूबवेल हमें ड्रिप इरिगेशन की सीख देता है। यह पूछे जाने पर राकेश कहते हैं कि किसी भी बड़े काम की शुरुआत छोटे कदमों से होती है। एक-एक कदमों के जरिए आप मीलों दूर का फासला तय करते हैं जिसमें वक्त लगता है। अगर कोई कदम ही ना बढाए तो फिर किलोमीटर या मील का फासला तय करने की नहीं सोच सकता।

आपकी पहल ठोस होगी, आपकी कोशिशों में ताकत होगी तो करोड़ों देशवासियों तक यह संदेश पहुंचाना मुश्किल नहीं होगा। समय रहते यह समझना होगा की टैब या नल से निकलते पानी के पतले या मोटे धार में लाखों-करोड़ों बूंदों का योगदान है। अगर ये बूंदें ना होती तो पानी का प्रवाह वैसा नहीं होता जिससे पानी की एक बाल्टी चंद मिनटों में भर जाती है।असंख्य बूंदों का स्वरूप पानी को तेज धार में तब्दील करता है ठीक उसी प्रकार जल को लेकर जागरूकता और उसके संरक्षण को लेकर हम सवा सौ करोड़ देशवासियों को एकजुट होना होगा। ध्यान रहें हमारे बाद भी हमारी कई पीढयों को जीवन में जल की जरूरत होगी। उनके खातिर ही सहीं हम इसे समय रहते तन-मन से संरक्षित करने का प्रयास तो करें। कोशिशों के बाद परिणाम आने में भी वक्त लगता है। समय पर और सार्थक कोशिशें होंगी तो उसका स्वरूप सुंदर, निर्मल और बेजोड़ होगा, इमसें कोई संशय नहीं है। अगर पानी को बचाना है तो सबसे पहले हमें खुद को सुधारना होगा, क्योंकि पानी ही हमारा जीवन है और इसके बिना हम जिंदा नहीं रह सकते। इसलिए हमें पानी की कीमत समझनी होगी, और पानी को बचाना होगा। इसी पीढी के लोगों को जल-दूत, जल-प्रहरी और जल संवाहक की भूमिका निभानी होगी ताकि आगामी हर पीढ़ी में जल और जीवन का अटूट श्रंखला।

स्पीड न्यूज

ईद उल अजहा का त्योहार शांतिपूर्ण संपन्न

बकरीद की बधाई देते लोग।

कांडी। प्रखंड क्षेत्र में सोमवार को ईद उल अजहा (बकरीद) का त्योहार शांति व सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो गया। प्रखण्ड के विभिन्न गांवों में स्थित ईदगाहों में मुस्लिम भाइयों ने बकरीद की नमाज अदा की। कांडी ईदगाह में सुबह आठ बजे नमाज पढ़ा गया। जहां पर हाफिज अब्दुल माजिद खान ने नमाज पढाया। यहां पर कांडी के अलावे ढबरिया, हरिहरपुर व कुछ लोग सड़की के बकरीद का नमाज पढ़े। भुड़वा ईदगाह में हाफिज बाबर आजम, कुरकुटा ईदगाह में हाफिज मोहम्मद गुलजार, पतीला ईदगाह में हाफिज अब्दुल्ला, अधौरा ईदगाह में हाफिज इमामुद्दीन ने अधौरा, देवडीह, सोनपुरवा व तेलियानिजामत गांव के मुश्लिम भाईयों को नमाज पढाया। उधर सड़की ईदगाह में कयामुद्दीन कादरी, जमुआ ईदगाह में हाफिज मनान व लमारी खुर्द ईदगाह में हाफिज सफायद अंसारी ने ईद का नमाज पढ़ाया। शांति व्यवस्था को लेकर पुलिस हर जगह मुस्तैद रही। कांडी मस्जिद के अलावे पतीला व भुड़वा सहित सभी ईदगाह के पास पुलिस तैनात थी। मौके पर कांडी पंचायत मुखिया विजय राम, जिला परिषद प्रतिनिधि दिनेश कुमार, समाजसेवी विकास दुबे, उप मुखिया ने कांडी ईदगाह में पहुंचकर मुस्लिम भाइयों से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दिया। सड़की ईदगाह में पहुंचकर राजद प्रखण्ड अध्यक्ष इमामुद्दीन खान ने भी वहां उपस्थित व प्रखण्ड के सभी मुस्लिम भाइयों को बकरीद की मुबारकबाद दिया।

लू लगने से युवक की मौत

मझिआंव। नगर पंचायत क्षेत्र के वार्ड नंबर एक स्थित अखौरी तहले गांव में रविवार को स्व. श्याम बिहारी साव के 24 वर्षीय पुत्र विकेश कुमार गुप्ता की मौत हो गई। चिकित्सक के अनुसार युवक की मौत लू लगने से हुई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार युवक मझिआंव बाजार क्षेत्र में ब्लॉक रोड स्थित फंकी ब्वॉयज क्लेक्सन नामक कपड़े की दुकान से घर खाना खाने गया हुआ था। घर पहुंचते ही युवक फ्रिज से (चिल्ड) ठंडा पानी निकाल कर पीने के बाद चैकी पर लेट गया। कुछ देर के बाद परिजन युवक को चैकी से नीचे गिरा पाया। आनन फानन में रेफरल अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सक वीर प्रताप सिंह ने जांचोपरांत मृत घोषित कर दिया। इस संबंध चिकित्सक वीर प्रताप सिंह ने बताया कि युवक की मौत अस्पताल पहुंचने से पहले हो चुकी थी। धूप से जाने बाद फौरन ठंडा पानी का सेवन करने से हार्ट ब्लॉकेज हो गया, जिसके कारण डेथ हो गई है। रविवार की देर शाम कोयल नदी के टंकी घाट पर युवक का दाह संस्कार कर दिया गया।

एसएसबी ने 161 किलो गांजा के साथ दो तस्कर को किया गिरफ्तार

अररिया। सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) 56 वीं बटालियन के दुबाटोला बीओपी के बाह्य सीमा चौकी सिकिटीया और वाहिनी मुख्यालय के जवानों ने कार्यवाहक कमांडेंट कस्तूरी लाल के नेतृत्व में छापेमारी कर 161 किलो गांजा के साथ दो तस्करों को गिरफ्तार किया। भारत-नेपाल सीमा स्तंभ संख्या-173/1 के नजदीक एसएसबी जवानों ने नेपाल से भारत लाने के क्रम में कार्रवाई करते हुए 161 किलो गांजा के साथ दो तस्करों को धर दबोचा। दबोचे गए तस्करों में दोनों भारत के हैं। कार्यवाहक कमांडेंट कस्तूरी लाल ने बताया कि वर्तमान समय में सशस्त्र सीमा बल जहां एक ओर देश की आंतरिक सुरक्षा ड्यूटी में बखूबी अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रही है, दूसरी ओर भारत- नेपाल सरहद की सुरक्षा और राष्ट्र विरोधी तत्वों के खिलाफ भी लगातार कार्रवाई कर रही है। इसी कड़ी में 56 वीं वहिनी के बाह्य सीमा चौकी दुबाटोला के क्षेत्र में भारत-नेपाल सीमा स्तंभ संख्या 177/1 के नजदीक जवानों ने कार्रवाई कर यह सफलता प्राप्त की। उन्होंने बताया कि कार्रवाई का नेतृत्व 56वीं वाहिनी बीओपी दुबाटोला के उप निरीक्षक आकांक्षा चौधरी के निर्देशन में उप निरीक्षक दीगंता कुमार नाथ व अन्य ने की। बीओपी कुशमाहा के सहायक सेनानायक अभिषेक कुमार गुप्ता ने दोनों तस्करों से पूछताछ कर अग्रिम कार्रवाई हेतु गांजा सहित तस्करों को सोनामनी गोदाम पुलिस के सुपुर्द कर दिया। गिरफ्तार तस्करों में कुशमाहा के पिपरा के जितेंद्र प्रसाद साह और आमगाछी क्षेत्र वार्ड संख्या चार के रहने वाले उमेश सदा हैं। सशस्त्र सीमा बल द्वारा की हुई इस कार्रवाई से तस्करों में हड़कंप है।

पटना: गंगा नदी में डूबे दो लोगों का शव बरामद

पटना। बिहार में पटना जिले के बाढ़ थाना क्षेत्र में नौका के पलटने से गंगा नदी में डूबे चार लोगों में से दो लोगों का शव सोमवार को बरामद कर लिया गया है। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि रविवार को गंगा दशहरा के अवसर पर कुछ लोग नौका पर सवार होकर स्नान करने के लिये नदी के उसपार जा रहे थे। इस दौरान उमा घाट के समीप नौका पलट गयी। कुछ लोग तैरकर बाहर आ गये, जबकि चार लोग लापता हो गये। घटना की जानकारी के बाद राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) की टीम स्थानीय गोताखोरों की मदद से लापता लोगों की तलाश कर रही थी।

मुख्यमंत्री नीतीश ने सरकारी नौकरी और रोजगार देने के निर्धारित लक्ष्य को मिशन मोड में पूरा करने के दिए निर्देश

एजेंसी

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सात निश्चय-2 के तहत 10 लाख सरकारी नौकरियां और 10 लाख रोजगार देने का लक्ष्य निर्धारित किया था। इस संबंध में मुख्यमंत्री ने उप मुख्यमंत्री, संबंधित विभागों के मंत्रियों, मुख्य सचिव, अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचिव और सचिव के साथ सोमवार को बैठक कर एक वर्ष के भीतर मिशन मोड में लक्ष्य पूरा करने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने नियुक्ति के लिए आयोजित परीक्षाओं में पूर्ण पारदर्शिता बनी रहे और परीक्षा में किसी प्रकार की अनियमितता और प्रश्न पत्र लीक न हो इसको लेकर एक सख्त कानून बनाने का निर्देश दिया। साथ ही कहा कि इससे संबंधित प्रस्ताव विधानसभा के सत्र में लाया जाय। प्रदेश में अब तक 5 लाख 16 हजार लोगों को सरकारी नौकरी दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त एक लाख 99 हजार सरकारी नौकरी से संबंधित नियुक्ति की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गयी है। अगले तीन महीने के अंदर नियुक्ति पत्र वितरित करने का लक्ष्य रखा गया है। नियुक्ति करने वाले विभिन्न आयोगों को दो लाख 11 हजार नई नियुक्तियों के लिए अधियाचना भेजी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त अगले एक महीने में दो लाख 34 हजार रिक्तियों की अधियाचना विभिन्न आयोगों को भेजी जायेगी। साथ ही आगामी वर्ष में नियुक्ति के लिए 72 हजार और रिक्तियां होने का अनुमान है, जिसकी अधियाचना अगले वर्ष भेजी जायेगी। उल्लेखनीय है कि सात निश्चय-2 के अन्तर्गत 5 लाख 16 हजार नियुक्तियां की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त एक लाख 99 हजार नियुक्ति पत्र वितरण के लिये तैयार है। साथ ही 5 लाख 17 हजार रिक्तियों के लिए नियुक्ति प्रक्रियाधीन है यानी कुल 12 लाख से अधिक सरकारी नौकरी देने का लक्ष्य वर्ष 2024-25 तक रखा गया है। इस प्रकार मुख्यमंत्री के सात निश्चय 2 के अन्तर्गत 10 लाख सरकारी नौकरी देने का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था, उसे पार करते हुये वर्ष 2024-25 तक 12 लाख से अधिक लोगों को सरकारी नौकरी दे दी जायेगी।

निक्की ने वूमैन कबड्डी में जिले का नाम किया रौशन

नवादा। जिले में नरहट प्रखण्ड अंतर्गत कुशा गांव के सुरेश यादव एवं किरण यादव की बेटी निक्की ने राज्य स्तरीय वूमैन कबड्डी प्रतियोगिता में अपने टीम को जीत दिलाकर नवादा जिले का नाम रौशन किया है। निक्की ने बताया कि बिहार स्टेट स्पोर्ट अथॉरिटी के सौजन्य से पाटलिपुत्रा स्पोर्ट कम्प्लेक्स परिसर पटना में आयोजित 10 से 16 जून तक खेल प्रतियोगिता में शामिल हुई थी। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता में राज्य के विभिन्न जिलों से कुल छह टीम शामिल हुआ था। निक्की ने बताया कि 16 जून को फाइनल मुकाबला सीवान टुटन्स और सारण स्ट्राइकर्स के बीच खेला गया। कुशा की निक्की यादव सीवान टुटन्स टीम से खेल रही थीं। खेल अथॉरिटी द्वारा वीनर टीम को एक लाख इक्कावन हजार रुपये एवं शील्ड देकर सम्मानित किया है। बेटी की इस सफलता पर माता पिता काफी खुश हैं। निक्की की सफलता पर डॉ रामचन्द प्रसाद, निरंकारी मुखी विनोद गुप्ता, शिक्षक दीपक कुमार, निरंकारी सेवादल शिक्षक हरि राजवंशी, बाल्मीकि शर्मा आदि हार्दिक शुभकामना देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

दबंगों ने किसान की लूट ली फसल

भागलपुर। जिले में औद्योगिक थाना पुलिस की मदद से कुछ दबंग लोग किसान की जमीन पर अपना कब्जा जमा रहे हैं। इतना ही नहीं किसान की फसल पुलिस के सामने ही लूट रहे हैं। मामला बरारी निवासी किसान गणेश यादव से जुड़ा है। उन्होंने बताया की बिक्रमशिला सेतु के समीप उनकी 70 बीघा रैयती जमीन है। जिसके सारे दस्तावेज उनके पास हैं। गणेश यादव ने बताया की दबंगो की शिकायत लेकर जब वो आद्योगिक थानाध्यक्ष मुरलीधर शाह के पास गए तो थाना थानाध्यक्ष ने आरोपियों से सांठ गांठ कर उनकी ही पिटाई कर दी। जिसके बाद पीड़ित किसान ने घटना की शिकायत एसएसपी, डीआईजी और मुख्यमंत्री से की। लेकिन अबतक कोई करवाई नहीं की गयी। गणेश यादव ने बताया की पुलिस ने उन्हें अपने ही जमीन पर जाने से रोक दिया गया है। खेत में लगायी गयी फसलों को पुलिस की मदद से अपराधी लूट रहे हैं। गणेश यादव ने कहा कि अगर उन्हें न्याय नहीं मिला तो वह अपने परिवार के साथ डीएम कार्यालय के समक्ष धरना पर बैठ जायेंगे।

गंगा दशहरा पर भव्य गंगा आरती का किया गया आयोजन

गंगा आरती करते लोग।

मझिआंव। प्रखंड के चन्द्री स्थित गायत्री शक्तिपीठ द्वारा रविवार की शाम गायत्री जयंती व गंगा दशहरा के अवसर पर कोयल नदी के तट पर भव्य गंगा आरती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रखंड समन्वयक नागेंद सिंह के निर्देशन में पहले माता गंगा का पूजा अर्चना किया गया। इसके बाद श्रद्धालु महिला पुरुषों द्वारा सामूहिक रूप से माता गंगा की आरती उतारी गई। इस दौरान मुख्य यजमान के रूप में देवमुनि विश्वकर्मा एवं उनकी पत्नी फुलझरी देवी द्वारा पूजा की गई, जबकि नगेन्द्र सिंह द्वारा कर्मकांड सम्पन्न कराया गया। इसके पहले सुबह में गायत्री शक्तिपीठ में पूजा अर्चना करने के बाद हवन यज्ञ किया गया। मौके पर अशोक चैरसिया, राम बेलास प्रसाद, बंशी प्रसाद, बेचन राम, अशोक कमलापुरी, बबलू कमलापुरी, सरस्वती देवी, संतोषी देवी, अंजना देवी, सरिता मिश्रा सहित कई लोग उपस्थित थे।

मस्जिदों और ईदगाह में अकीदत के साथ अदा की गई नमाज

खबर मन्त्र संवाददाता

उपस्थित लोग।

भवनाथपुर। प्रखंड के विभिन्न मस्जिदों और ईदगाह में ईद-उल-अजहा अर्थात कुबार्नी का पर्व बकरीद की नमाज अकीदत के साथ अदा की गई। मौके पर काफी संख्या में ईदगाह मैदान में बकरीद की नमाज अदा करने के लिए नमाजियों को भीड़ उमड़ी। बकरीद को लेकर शहरी क्षेत्र के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में भी सुबह से ही लोगों में चहल पहल दिखा। सुबह से ही नए कपड़े पहन छोटे-छोटे बच्चों के साथ ईदगाह मैदान एवं मस्जिद की ओर बकरीद की नमाज के लिए जाते हुए लोग नजर आए। बकरीद के मौके पर अरसली, मकरी, बेलपहाड़ी, बघमनवा, टाउनशिप में काफी रौनक देखी गई। चपरी में मौलाना नसीम अहमद, बेलपहाड़ी में मौलाना हसमत अली, अरसली उत्तरी में मौलाना सज्जाद हुसैन, मकरी में करी अजमेर अली ने नमाज पढ़ाई। ईदगाह कर्बला मैदान में हिंदू भाइयों के अलावा शहर के जनप्रतिनिधि ने पहुंचकर ईद उल अजहा की मुबारकबाद दी। इस दौरान लोगो में गंगा जमुना तहजीब का नजारा देखने को मिला। बकरीद को लेकर प्रशासन की ओर से सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए। थाना प्रभारी कृष्ण कुमार सुरक्षा का कमान थामे हुए थे।

मोटरसाइकिल-जेसीबी मशीन में टक्कर, एक की मौत, दो घायल

खबर मन्त्र संवाददाता

दुर्घटनाग्रस्त मोटरसाइकिल।

मझिआंव। थाना अंतर्गत खरसोता उत्क्रमित मध्य विद्यालय के समीप मझिआंव-सुंडीपुर मुख्य पथ के पुलिया के समीप रविवार की देर रात जेसीबी मषीन एवं पल्सर मोटरसाइकिल में जबरदस्त टक्कर हो गई। प्रत्यक्ष दर्शियों ने बताया कि जेसीबी एवं मोटरसाइकिल दुर्घटना में मोरबे पंचायत के करकटा गांव रामजीत राम के पुत्र नन्दन कुमार उम्र 24 वर्ष, सुकुल राम के पुत्र रवि कुमार उम्र 25 वर्ष, बंषी राम के पुत्र गोपाल कुमार उम्र 22 वर्ष गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को निजी वाहन से मझिआंव रेफरल अस्पताल ले जाया गया। जहां पर उपस्थित चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार करते हुए बेहतर इलाज के लिए गढ़वा सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। घायल नंदन कुमार को गढ़वा सदर अस्पताल पहुंचते ही डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

जानकारी के अनुसार तीनों युवक एक ही मोटरसाइकिल पर सवार होकर कांडी थाना क्षेत्र के मोखापी गांव के अपने रिश्तेदार के यहां से गढ़वा के जाटा गांव में बारात जा रहे थे। इसी दौरान यह घटना घटी है। दुर्घटना इतनी जबरदस्त थी कि पल्सर मोटरसाइकिल पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। दुर्घटना के बाद जेसीबी चालक भागने में सफल रहा। जेसीबी मशीन करीवाडीह, भलुही निवासी छोटे लाल चैधरी का बताया जा रहा है। दुर्घटना के सूचना पाते ही तुरंत थाना प्रभारी आकाश कुमार अपने दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और दोनों वाहनों को अपने कब्जे में लेते हुए थाना ले गए। पुलिस ने नंदन के शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया।

भीषण गर्मी को लेकर भाजपाईयों ने की बैठक

बैठक करते भाजपाई।

खबर मन्त्र संवाददाता

केतार। भीषण गर्मी को लेकर भाजपा कार्यालय में भाजपा मंडल की बैठक आयोजित की गई। बैठक में मंडल अध्यक्ष कन्हाई प्रसाद ने कहा कि आज जिस तरह से प्रकृति के द्वारा आग का गोला बरस रहा है यह स्थिति ज्यादातर पलामू प्रमंडल में देखा जा रहा है। गढ़वा के मंत्री भईया जी के पास पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय है, फिर भी प्रत्येक पंचायत में पानी की समस्या है। हमेशा नदी में खुदाई कराकर जानवर को पीने का पानी व्यवस्था किया जाता था। जहां चापाकाल सुख जाता था वहां पानी की व्यवस्था किया जाता था, परंतु इस वर्ष रिकार्ड तोड़ गर्मी में किसी तरह का सुविधा उपलब्ध नहीं कराया गया। सभी ने मांग करते हुए कहा कि पंचायत स्तर पर जांच की जाय की कहां कहां चापाकल खराब है, कहां पानी की समस्या है और उस जगह तत्काल पानी की व्यवस्था किया जाय। बैठक में बीडीसी राजकुमार पासवान, धीरेंद्र शुक्ला, बीरबल मेहता, उमेश सिंह, उमेश दुबे, बिनोद विश्वकर्मा, दिलीप कुमार, सीताराम जायसवाल आदि लोग उपस्थित थे।

अकीदत व मसर्रत के साथ मना बकरीद

खबर मन्त्र संवाददाता

नमाज पढ़ते लोग।

गढ़वा। शहर में ईद-उल-अजहा का त्योहार अकीदत व मसर्रत के साथ मनाया गया। इस मौके पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने स्थानीय इदगाहों, मस्जिदों व मदरसों में दो रिकअत वाजिब नमाज-ए-ईद-उल-अजहा अदा की। नमाज अदायगी को लेकर इन स्थलों पर सुबह से ही नमाजियों की भीड़ जमा होने लगी थी। नमाज अदा करने के बाद लोग एक दूसरे से गले मिलकर ईद-उल-अजहा की बधाई दी। वहीं घर पहुंच कर अकीदतमंदों ने खुदा की राह बकरा की कुबार्नी पेश की। शहर व ग्रामीण क्षेत्रों के सभी नमाज अदायगी स्थलों पर इंताजामिया कमेटियो के द्वारा नमाजियों की सुविधा के लिए ध्वनि विस्तारक यंत्र सहित अन्य इंतजाम किया गया था। वहीं पर्व के अवसर शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए प्रशासन के द्वारा इबादतगाहों के पास दंडाधिकारी व पुलिस बल के जवान तैनात किए गए थे। नमाज अदायगी के पूर्व जामा मस्जिद के पेश इमाम हाफिज अब्दुस्समद ने कहा कि इस्लाम मजहब में ईद-उल-अजहा का संबंध कुबार्नी से है। इसे ईद पर कुबार्नी दी जाती है। इस कुबार्नी के जरिए से बंदा अल्लाह की रजा हासिल करता है। बेशक अल्लाह को कुबार्नी का गोश्त नहीं पहुंचता है। बल्कि वह तो केवल कुबार्नी के पीछे बंदों की नीयत को देखता है। उन्होंने कहा कि अल्लाह को पसंद है कि बंदा उसकी राह में अपना हलाल तरीके से कमाया हुआ धन खर्च करे। कुबार्नी का सिलसिला ईद के दिन को मिलाकर तीन दिनों तक चलता है। उन्होंने कहा कि इब्राहीम अलैह सलाम एक पैगंबर गुजरे हैं। जिन्हें ख्वाब में अल्लाह का हुक्म हुआ कि वे अपने प्यारे बेटे इस्माईल को अल्लाह की राह में कुर्बान कर दें। यह इब्राहीम अलैह सलाम के लिए एक इम्तिहान था। जिसमें एक तरफ थी अपने बेटे से मुहब्बत व एक तरफ था अल्लाह का हुक्म। इब्राहीम अलैह सलाम ने सिर्फ व सिर्फ अल्लाह के हुक्म को पूरा किया। अल्लाह को राजी करने की नीयत से अपने लख्ते जिगर इस्माईल अलैह सलाम की कुबार्नी देने को तैयार हो गए। जैसे ही इब्राहीम अलैह सलाम छुरी लेकर अपने बेटे को कुर्बान करने लगे, वैसे ही फरिश्तों के सरदार जिब्रील अमीन ने तेजी से इस्माईल अलैह सलाम को छुरी के नीचे से हटाकर उनकी जगह एक मेमने को रख दिया। इस तरह इब्राहीम अलैह सलाम के हाथों मेमने के जिब्हा होने के साथ पहली कुबार्नी हुई।

खबर एक नजर में

मधेपुरा में पेड़ से लटका महिला का शव बरामद

मधेपुरा। बिहार में मधेपुरा जिले के मुरलीगंज थाना क्षेत्र से पुलिस ने सोमवार को एक महिला का पेड़ से लटका शव बरामद किया। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि स्थानीय लोगों से मिली सूचना के आधार पर तमोट परसा वार्ड संख्या 02 में पेड़ से लटका एक महिला का शव बरामद किया गया है। महिला की उम्र करीब 34 वर्ष है और उसकी तत्काल पहचान नहीं की जा सकी है।

महादलित मुखिया की हत्या में रोजगार सेवक सहित दो गिरफ्तार

नवादा। नवादा जिले के पकरीबरावां प्रखंड क्षेत्र के बुधौली पंचायत की मुखिया पप्पू मांझी की हत्या मामले में रसुपर मुखिया अमरेंद्र यादव सहित दो लोगों को सोमवार को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार अमरेंद्र इसी जिले के रोह प्रखंड में पंचायत रोजगार सेवक के पद पर कार्यरत है। इसे बुधौली पंचायत का सुपर मुखिया कहा जाता था। वजह, पप्पू मांझी को उसी ने अपने समर्थन से मुखिया बनवाया था। अमरेंद्र के अलावा गिरफ्तार दूसरा शख्स मनीष सिंह इसी पंचायत के दिऔरा गांव का निवासी बताया गया है, जो मुखिया का चहेता बताया जा रहा है। दोनों को जेल भेज दिया गया है। हालांकि, पुलिस का आधिकारिक पक्ष अबतक नहीं आया है। अबतक की यही जानकारी है कि मुखिया के ग्रामीण अमरेंद्र और इसी पंचायत के दिऔरा ग्रामीण मनीष सिंह की गिरफ्तारी हुई है। घटना के बाद मुखिया की पत्नी द्वारा दर्ज कराई गई प्राथमिकी में पंचायत की उप मुखिया छोटू पांडेय और मनीष सिंह को आरोपित किया गया था। उप मुखिया का नाम राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी होने और मनीष का नाम मुखिया और उसके बीच बातचीत का अंतिम कॉल होना वजह बताया जा रहा है। ग्रामीण सूत्र बता रहे हैं कि यह सच है कि अमरेंद्र ने ही पप्पू को मुखिया बनवाया था लेकिन इन दिनों मुखिया पप्पू मांझी मनीष के संपर्क में ज्यादा था। पंचायत में ठेका-पट्टा का प्रायः काम इन दिनों मनीष ही कर रहा था जो अमरेंद्र को रास नहीं आ रहा था। यूं कहें मुखिया पाला बदल चुके थे। इसी वजह से अमरेंद्र ने उन्हें रास्ते से ही हटा दिया। वैसे, सच क्या है पुलिस ही औपचारिक रूप से जब बताएगी सामने आएगा। वैसे, सवाल यह भी उठ रहा है कि जब मनीष की कोई भूमिका नहीं थी, तो उसे क्यों जेल भेजा गया। इसके पीछे का तर्क एफआईआर में नामजद होना बताया जा रहा है। यह भी कहा जा सकता है कि पुलिस अभी मनीष को क्लीनचिट नहीं दी है।

नीट पेपर लीक मामले में ईओयू का बड़ा दावा, मूल प्रश्नपत्र उपलब्ध नहीं करा रहा एनटीए

पटना। बिहार सरकार की जांच एजेंसी आर्थिक अपराध इकाई (ईओयू) ने नीट पेपर लीक मामले में बड़ा दावा किया है। ईओयू ने सोमवार को कहा है कि उसे अभी तक एनटीए की ओर से परीक्षा की मूल प्रश्नपत्र की प्रति नहीं भेजी गई है। इस वजह से ईओयू इस मामले की जांच को आगे नहीं बढ़ा पा रहा है। ईओयू की ओर से एनटीए को अबतक तीन बार रिमाइंडर भेजा जा चुका है लेकिन प्रश्नपत्र की प्रति उन्हें उपलब्ध नहीं कराई गई है।

पेज एक का शेष

झारखंड का जिम्मा...

झारखंड को मिलेगा लाभ : मरांडी : झारखंड प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने इस फैसले का स्वागत किया और कहा कि श्री चौहान और हिमंता विश्व शरमा के अनुभव का झारखंड को काफी लाभ मिलेगा। दोनों अनुभवी, परिश्रमी और कुशल संगठनकर्ता हैं। श्री मरांडी ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में इनके अनुभवों, कार्य कुशलता और प्रत्यक्ष मार्गदर्शन का लाभ पार्टी को मिलेगा। दोनों के नेतृत्व में भाजपा प्रदेश की भ्रष्ट, निकम्मी ठगबंधन सरकार को उखाड़ फेंकेंगी। झारखंड में एकबार फिर मजबूत डबल इंजन सरकार बनायेगी। नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने स्वागत करते हुए कहा कि भाजपा विधानसभा चुनाव की तैयारी में जुट गयी है। पार्टी रिकॉर्ड मतों से प्रदेश में सरकार बनायेगी। क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र त्रिपाठी, प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह, सांसद दीपक प्रकाश, सांसद आदित्य साहू, डॉ प्रदीप वर्मा, मनोज सिंह तमाम नेताओं ने फैसले का स्वागत किया है।

10 व 5 लाख ...

वहीं बाकी नक्सली घने जंगल का फायदा उठाकर भागने में सफल रहे। हालांकि सुरक्षा बलों ने दो नक्सलियों को पकड़ने में सफलता हासिल की। मुठभेड़ के बाद से पूरे इलाके में सर्च ऑपरेशन तेज कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि मुठभेड़ में मारे गए नक्सलियों में एक जोनल कमांडर, एक सबजोनल कमांडर, एक एरिया कमांडर और एक महिला नक्सली शामिल है।

दो नक्सली गिरफ्तार : सुरक्षाबलों ने दो इनामी नक्सलियों को गिरप्तार भी किया है। उनकी पहचान टाइगर उर्फ पांडू हांसदा और बातरी देवगम के रूप में हुई है। पांडू हांसदा दो लाख रुपए का इनामी एरिया कमांडर है। वहीं बातरी देवी महिला नक्सली है।

सिंगराई और कांडे आईईडी लगाने में माहिर था : मारे गये नक्सली सिंगराई और कांडे होनहागा आइिडी लगाने में माहिर था। दोनों ने कोल्हान और सारंडा के जंगल में आइइडी लगाया था। 14 अगस्त 2023 को कोल्हान के जंगल में आइइडी धमाके में झारखंड जगुआर के दो जवान शहीद भी हुए थे। इसमें भी इन दोनों नक्सलियों के दस्ते का ही हाथ था।

स्पीकर पद खुद...

पहली बैठक 24 जून को : अठारहवीं लोकसभा की पहली बैठक 24 जून को होगी और सत्र तीन जुलाई को समाप्त होगा। जारी बुलेटिन में कहा गया है कि अध्यक्ष के चुनाव के लिए तय तिथि से एक दिन पहले दोपहर 12 बजे से पहले कोई भी सदस्य अध्यक्ष पद के लिए किसी अन्य सदस्य के समर्थन में प्रस्ताव के लिए महासचिव को लिखित रूप से नोटिस दे सकता है। इसमें बताया गया है, मौजूदा मामले में अध्यक्ष के चुनाव के लिए प्रस्ताव के वास्ते नोटिस मंगलवार, 25 जून दोपहर 12 बजे से पहले दिये जा सकते हैं।

झारखंड में बदला...

12 जिलों में हीट वेव का अलर्ट : मौसम विभाग के अनुसार गढ़वा, पलामू, लातेहार, चतरा, हजारीबाग, कोडरमा, रामगढ़, बोकारो, गिरिडीह, धनबाद, देवघर और जामताड़ा में हिटवेव जारी रहने की आशंका है। इसे ले कर येलो अलर्ट जारी किया गया है। पिछले 24 घंटे में राज्य में कहीं-कहीं पर आंधी के साथ हल्के दर्जे की वर्षा हुई। सबसे अधिक वर्षा 6.1 एमएम पलामू में दर्ज की गयी। सबसे अधिक उच्चतम तापमान 44.5 डिग्री डालटनगंज का रहा। वहीं सबसे कम न्यूनतम तापमान 26.1डिग्री से. बोकारो थर्मल में दर्ज किया गया।

झारखंड के 35 लाख...

वहीं कृषि सखी कन्वर्जेंस प्रोग्राम (केएससीपी) का उद्देश्य कृषि सखी के रूप में ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाकर, कृषि सखियों को पैरा-एक्सटेंशन वर्कर्स के रूप में प्रशिक्षण और प्रमाणन प्रदान करके ग्रामीण भारत में बदलाव लाना है।

पीएम के स्वागत की तैयारियां जोरों पर : पीएम मोदी का भाजपा कार्यकर्ता बाबतपुर स्थित लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और मेहंदीगंज ग्राम सभा स्थल पर भव्य स्वागत करेंगे। कार्यक्रम के दौरान उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मौजूद रहेंगे। चुनाव के बाद पीएम पहली बार पीएम मोदी वाराणसी जा रहे हैं। पुलिस लाइन से लेकर दशाश्वमेध घाट व विश्वनाथ मंदिर गेट नंबर चार तक पूरे यात्रा मार्ग में काशीवासियों संग भाजपा कार्यकर्ता ढोल, नगाड़ा, डमरू दल के साथ शंखनाद एवं गुलाब की पंखुड़ियों की वर्षा की जायेगी। काशी विश्वनाथ धाम को फूलों से सजाया जा रहा है। पीएम मोदी काशी के कोतवाल काल भैरव और काशी विश्वनाथ धाम जाकर पूजन-अर्चन करेंगे।

स्पीड न्यूज

रणदीप सुरजेवाला ने एचसीएस भर्ती पर सरकार को घेरा

कैथल। हरियाणा के कैथल पहुंचे कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं राज्यसभा सांसद रणदीप सिंह सुरजेवाला ने एचसीएस भर्ती पर भाजपा सरकार को घेरा है। सोमवार को उन्होंने एचसीएस भर्ती में एससी-बीसी वर्ग के युवाओं को वंचित रखने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि लगता है राज्य के बाहर के कैंडिडेट को भर्ती करने के लिए कुछ गड़बड़ी की गई है। सुरजेवाला ने सोमवार को कैथल में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि हरियाणा सरकार ने वर्ष 2023 में एचसीएस भर्ती में 121 पदों पर नियुक्ति का विज्ञापन दिया। इसमें 87 हजार अभ्यर्थियों ने अप्लाई किया। इसके बाद 1,706 अभ्यर्थियों ने एचसीएस मेन एग्जाम पास किया। इसके बाद 275 अभ्यर्थियों को इंटरव्यू के लिए बुलाया गया।

चार लोगों ने मिनी बस चालक की पीट-पीट कर की हत्या

गुरुग्राम (हि.स.)। एक मिनी बस (टैम्पो ट्रैवलर) की कार के साथ टक्कर हो गई। इससे गुस्साए कार में सवार लोगों ने बस चालक की पीट-पीटकर हत्या कर दी। इसके बाद वे मौके से फरार हो गए। सूचना पाकर सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच की। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या का केस दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। मृतक की पहचान दिल्ली के मंगोलपुरी निवासी दीनदयाल उर्फ दीनू के रूप में हुई है। वह टेम्पो ट्रैवलर मिनी बस चलाता था। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार यह घटना सोहना रोड पर जेएमडी यू-टर्न के पास की है।

एयर इंडिया के यात्री के खाने में 'ब्लेड' जैसी धातु का टुकड़ा मिला

नई दिल्ली। टाटा की अगुवाई वाली एयर इंडिया की अंतरराष्ट्रीय उड़ान में एक पैसेंजर के खाने में ब्लेड मिली। एयरलाइन ने सोमवार को एक यात्री को बेंगलुरु-सैन फ्रांसिस्को उड़ान के दौरान भोजन में कथित तौर पर ब्लेड जैसी धातु का टुकड़ा मिलने की पुष्टि घटना के एक हफ्ते के बाद की है। एयरलाइन ने यात्री के खाने में ब्लेड जैसी धातु होने की पुष्टि करते हुए कहा कि यह वस्तु उसके खानपान साझेदार की सुविधाओं में इस्तेमाल की जाने वाली सब्जी प्रसंस्करण मशीन से आई थी। पैसेंजर ने खुद एक्स पोस्ट पर इस घटना के फोटो शेयर कर इसकी जानकारी दी थी। इस पोस्ट के बाद एयर इंडिया ने इसकी जांच के बाद बयान जारी कर पैसेंजर के खाने में ब्लेड मिलने की बात को स्वीकार किया और माफी मांगी है।

पुणे में करंट की चपेट में आने से परिवार के तीन सदस्यों की मौत

मुंबई। पुणे जिले के दौंड तहसील के दापोडी गांव में सोमवार सुबह बिजली का करंट की चपेट में आने से एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत हो गई। मृतकों में पति-पत्नी और बेटा शामिल हैं। जानकारी के अनुसार सुनील देवीदास भालेकर सपरिवार दापोडी गांव में पतरे के घर में रहते थे। सोमवार सुबह सुनील ने स्नान कर अपना तौलिया तार पर सूखने के लिए डालने गए थे, लेकिन तार में बिजली का करंट आ रहा था। तार पर तौलिया के दौराव चिपक गए। इसे देख उनकी पत्नी अदिका भालेकर और उनके छोटे बेटे परशुराम भालेकर ने भी सुनील को बचाने का प्रयास किया और वे तीनों बिजली के तार से चिपक गए । घटना की जानकारी मिलते ही पड़ोसी तत्काल मौके पर पहुंचे और बिजली डिकनेक्ट किया।

कंचनजंगा एक्सप्रेस दुर्घटना : कहां रह गया 'कवच'

रेल मंत्री करते रहते हैं गुणगान

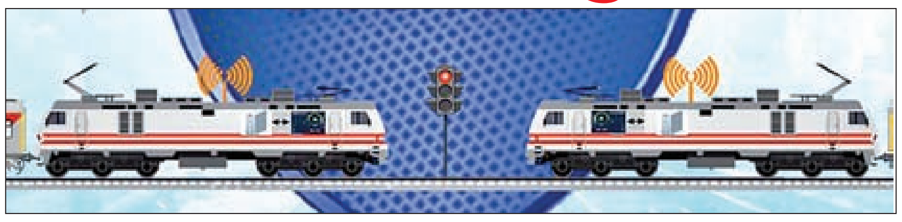

एजेंसी

नयी दिल्ली। पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी में भीषण रेल दुर्घटना ने एक बार फिर से लोगों के मन में सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े कर दिए है। यह दुर्घटना तब हुई जब सोमवार सुबह न्यू जलपाईगुड़ी के पास एक मालगाड़ी कथित तौर पर सियालदह जाने वाली कंचनजंगा एक्सप्रेस से टकरा गई। रेल मंत्री ने दावा किया था कि भारत ने कवच सिस्टम विकसित किया है, जिसकी बदौलत हम ट्रेन दुर्घटनाओं को रोक सकेंगे। उनके अनुसार इस सिस्टम की तैनाती शुरू हो चुकी है, लेकिन आज की दुर्घटना ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

सुरक्षा को ले कर सवाल : न्यू जलपाईगुड़ी में हुए ट्रेन हादसे ने एक बार फिर से लोगों के मन में सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े कर दिए है। ये पहली बार नहीं है जब भारतीय रेल में कोई दुर्घटना हुई हो। साल-दर-साल दुर्घटनाएं बढ़ती जा रही है। आज हुए इस दुर्घटना ने फिर से लोगों के मन में कवच सिस्टम को लेकर सवाल खड़े कर दिए है। जब भारतीय बजट में कवच सिस्टम को लेकर पैसे अलॉट किए गए तो अब तक इस कवच सिस्टम का असर क्यों नहीं दिख रहा है? आज के हुए हादसे ने एक बार फिर से कवच सिस्टम के महत्व की याद दिला दी है। फिलहाल अभी इस बात की जानकारी नहीं मिली है कि न्यू जलपाईगुड़ी रुट में कवच सिस्टम था कि नहीं। कंचनजंगा एक्सप्रेस दुर्घटना ने एक बार फिर से स्वदेशी रूप से विकसित सिस्टम ह्यकवचह्व की अनुपस्थिति की ओर ध्यान आकर्षित किया है, जिसे अगर स्थापित किया गया होता तो इस दुखद घटना को टाला जा सकता था।

अंतरिम बजट में आवंटन किए गए 557 करोड़ रुपये : बता दें कि इसकी स्थापना लागत 50 लाख रुपये प्रति किलोमीटर है। वर्तमान में इसकी कवरेज लगभग 1,500 किलोमीटर तक सीमित है, जिससे 68,000 किलोमीटर रेल नेटवर्क में व्यापक कार्यान्वयन एक चुनौती बन गया है। इससे पहले रेल मंत्री ने बताया था कि अंतरिम बजट 2024-25 में रेलवे के में कवच की स्थापना के लिए 557 करोड़ रुपये से अधिक का आवंटन किया गया है।

क्या है कवच सिस्टम?

कवच भारतीय उद्योग के सहयोग से रिसर्च डिजाइन और मानक संगठन द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा सिस्टम है। भारतीय रेलवे में ट्रेन संचालन में सुरक्षा हासिल करने के लिए दक्षिण मध्य रेलवे ने ट्रायल की सुविधा दी गई थी। यह सुरक्षा अखंडता स्तर-4 मानकों के साथ एक अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम है। इसका उद्देश्य ट्रेनों को लाल सिग्नल (जो खतरे का संकेत देता है) से गुजरने से रोकना और टकराव से बचना है। अगर चालक स्पीड रिस्ट्रिक्शन के अनुसार ट्रेन को नियंत्रित करने में विफल रहता है तो यह ट्रेन के ब्रेकिंग सिस्टम को स्वचालित रूप से सक्रिय करता है। इसके अलावा, यह फंक्शनल कवच सिस्टम से लैस दो इंजनों के बीच टकराव को रोकता है। यह सिस्टम आपातकालीन स्थितियों के दौरान रङ्गर मैसेज भी प्रसारित करती है। एक अतिरिक्त विशेषता नेटवर्क मॉनिटर सिस्टम के माध्यम से ट्रेन की गतिविधियों की केंद्रीकृत लाइव निगरानी है। कवच सबसे सस्ती, एसआईएल-4 प्रमाणित प्रौद्योगिकियों में से एक है, जहां त्रुटि की संभावना 10,000 सालों में 1 है।

क्या है कवच की विशेषता

सुरक्षा प्रणाली के तहत पटरी के पास लगे सिग्नल की रोशनी कैबिन में पहुंचती है और यह रोशनी धुंध के मौसम में बहुत उपयोगी होती है।आवाजाही की निगरानी करने वाले को ट्रेन के बारे में लगातार जानकारी मिलती रहती है। सिगनल पर अपने आप सीटी बजती है। लोको से लोको के बीच सीधे संचार के जरिए ट्रेनों के टक्कर की आशंका कम हो जाती है। यदि कोई दुर्घटना हो जाती है, तो एसओएस के माध्यम से आसपास चल रही ट्रेनों को कंट्रोल किया जाता है। कवच का परीक्षण दक्षिण मध्य रेलवे के लिंगमपल्ली-विकाराबाद-वाडी और विकाराबाद-बीदर सेक्शन पर किया गया था, जिसमें 250 किलोमीटर की दूरी तय की गई थी।

भोपाल। एशिया की सबसे बड़ी ताजुल मस्जिद में अमन चैन के साथ अदा की गई नमाज।

अमित शाह ने रियासी आंतकवादी हमले की जांच एनआइए को सौंपी

एजेंसी

जम्मू। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू कश्मीर में पिछले सप्ताह रियासी जिले में आतंकवादियों के हमले की जांच का दायित्व राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को दिया है। गत नौ जून को जम्मू क्षेत्र के रियासी जिले में आतंकवादियों ने तीर्थयात्रियों की एक बस पर हमला किया था जिससे बस गहरे खड्ड में पलट गयी थी। इस घटना में 10 लोग मारे गए तथा 30 से अधिक लोग घायल हो गए। आधिकारिक सूत्रों ने सोमवार को कहा कि रियासी में आतंकवादी हमले की जांच एनआईए को सौंप दी गई है।

सूत्रों ने कहा, इस घटना की जांच एनआईए को जांच सौंपने का निर्णय 15 जून को नयी दिल्ली में गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में हुई उच्च स्तरीय बैठक के बाद लिया गया। श्री शाह ने जम्मू-कश्मीर में आगामी अमरनाथ यात्रा के मद्देनजर की स्थिति की समीक्षा के लिए रविवार को दिल्ली में एक उच्चस्तरीय बैठक बुलायी थी जिसमें विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के शीर्ष अधिकारियों के साथ जम्मू-कश्मीर के उप-राज्यपाल मनोज सिन्हा ने भी भाग लिया था। सूत्रों ने कहा कि एनआईए ने हमले के पीछे की साजिश का पता लगाने के लिए गहन जांच शुरू कर दी है। उन्होंने कहा, ह्एनआईए ने जम्मू-कश्मीर पुलिस से जांच का काम अपने हाथ में ले लिया है। घटना की गंभीरता को देखते हुए गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशों के बाद मामले में एफआईआर दर्ज की गयी है। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने रियासी में हमले शामिल आतंकियों के बारे में सुराग देने वाले को 20 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की है और इस संबंध में चार संदिग्ध आतंकवादियों के स्केच भी जारी किये गए हैं। रियासी हमलें में हताहत लोग कटरा में शिव खोरी मंदिर से माता वैष्णो देवी मंदिर तक तीर्थयात्रियों को ले जा रही बस पर पौनी क्षेत्र के तरयाथ गांव के पास हमला किए गया था। इसकी जांच के सिलसिले में पुलिस ने 20 से ज्यादा लोगों को पूछताछ के लिए निरुद्ध किया है।

सीएम भजनलाल ने दिल्ली में पीएम मोदी से मुलाकात की

एजेंसी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को दो दिन के प्रवास पर सोमवार को दिल्ली पहुंचे। उन्होंने सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इसके बाद उन्होंने यहां वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, केन्द्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहरलाल खट्टर, केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी, केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव और केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा से शिष्टाचार भेंट की। लोकसभा चुनाव के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए थे। लेकिन, वहां दोनों के बीच कोई बातचीत नहीं हो पाई थी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का सोमवार को प्री बजट बैठक लेने का कार्यक्रम था, लेकिन वे अचानक दिल्ली के लिए रवाना हो गए। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर लिखा कि आज राजधानी दिल्ली में विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, 140 करोड़ भारतीयों के सुख, समृद्धि और कल्याण के लिए साधनारत, भारत के 'अमृतकाल के सारथी' प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से स्नेहपूर्ण भेंट कर उनका स्नेहिल आशीर्वाद व आत्मीय मार्गदर्शन प्राप्त किया। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार 'आत्मनिर्भर भारत-विकसित भारत' के निर्माण और जन जन की सतत सेवा के लिए पूर्णतः संकल्पित है। भारत माता की जय! उन्होंने लिखा कि आज नई दिल्ली प्रवास के दौरान माननीय केन्द्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहरलाल खट्टर से आत्मीय भेंट की। इस अवसर पर मंत्री के साथ राजस्थान प्रदेश से जुड़े विकास व विद्युत क्षेत्र में ऊर्जा के नए स्त्रोतों की बढ़ोतरी, आधुनिकीकरण और नवीन टेक्नोलॉजी के उपयोग सहित विभिन्न महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।

रूसी सुरक्षा बलों ने हिरासत केंद्र से दो बंधक कर्मियों को छुड़ाया

मॉस्को। रूसी सुरक्षा बलों ने रविवार को दक्षिणी रूस में एक हिरासत केंद्र पर धावा बोला कर दो कर्मचारियों को बंधक बनाने वाले इस्लामी आतंकवादी समूहों से जुड़े आरोपितों को मार गिराया। घटनास्थल पर मौजूद पत्रकारों ने गोलीबारी की आवाजें सुनीं जबकि सोशल मीडिया पर फुटेज में जेल में कई एम्बुलेंस आती दिखाई दीं। रूस की संघीय कारागार सेवा ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि रोस्तोव-ऑन-डॉन में सुनवाई से पहले हिरासत केंद्र में रखे गये लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। उसने कहा कि बंधक बनाने वाले कुछ लोग मारे गए हैं। हालांकि कोई और जानकारी नहीं दी गयी। आरटी सहित कई स्थानीय समाचार चैनलों ने खबर दी कि कम से कम कुछ कैदी मारे गये हैं। इससे पहले सरकारी समाचार एजेंसी ह्यतासह्व ने कानून प्रवर्तन से जुड़े सूत्रों के हवाले से बताया कि रोस्तोव क्षेत्र के हिरासत केंद्र नंबर एक में बंधक बनाने वाले छह लोग थे और उनके पास चाकू और अन्य हथियार थे। सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई तस्वीरों में कम से कम दो बंधकों को इस्लामिक स्टेट के झंडे जैसा दिखने वाला पट्टा सर पर बांधे दिखाया गया है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ और किसान उसकी आत्मा: शिवराज

एजेंसी

सीहोर(हि.स.)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान सोमवार को अपनी धर्मपत्नी साधना सिंह और पुत्र कार्तिकेय सिंह चौहान के साथ विजयासन देवी धाम सलकनपुर पहुंचे। उन्होंने यहां माता विजयासन की पूजा-अर्चना कर देश-प्रदेश की सुख समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत का निर्माण हो। भारत के विकास में कृषि का विशेष स्थान है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और उसकी आत्मा किसान है। केन्द्रीय मंत्री चौहान ने ने कहा कि कृषि के विकास और किसानों के कल्याण के लिए सतत काम करता रहूंगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में खेती के विकास और किसानों के कल्याण के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं।

उन योजनाओं को तेजी से आगे बढ़ने का काम किया जाएगा। केंद्रीय कृषि मंत्री चौहान ने कहा कि 18 जून को प्रधानमंत्री मोदी काशी में आयोजित कार्यक्रम में देश के किसानों के खाते में लगभग 20 हजार करोड़ रुपये किसान सम्मान निधि की राशि अंतरित करेंगे। उन्होंने कहा कि खेती का तेजी से विकास हो और किसान आगे बढ़े, इसके लिए 100 दिन की कार्य योजना बनाई है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास भी सरकार की प्राथमिकता है और पहली कैबिनेट बैठक में ही प्रधानमंत्री मोदी ने तीन करोड़ प्रधानमंत्री आवास ग्रामीण क्षेत्रों में बनाने का निर्णय लिया, ताकि गरीबों का खुद के पक्के मकान का सपना पूरा हो सके। इस अवसर पर प्रदेश के राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा, पूर्व सांसद रमाकांत भार्गव, जिला भाजपा अध्यक्ष रवि मालवीय तथा सलकनपुर ट्रस्ट के अध्यक्ष महेश उपाध्याय सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

बॉलीवुड में काम न मिलने पर बोलीं स्वरा भास्कर

कई लोगों को मुझसे शिकायत है...

एक्ट्रेस स्वरा भास्कर अपने बेबाक बयानों और इसी तरह व्यंग्यात्मक पोस्ट के लिए जानी जाती हैं। कई बार उन्हें इसके लिए ट्रोलिंग का भी सामना करना पड़ा है, लेकिन ट्रोलर्स की परवाह किए बिना स्वरा भास्कर ने हमेशा वही व्यक्त किया है, जो वह महसूस करती हैं। स्वरा भास्कर ने फहद अहमद से शादी की। दोनों की एक बेटी भी है। मुस्लिम लड़के से शादी करने पर उन्हें ट्रोल भी किया गया था। ऐसे में स्वरा ने हाल ही में एक खास भूमिका निभाई है। स्वरा ने एक इंटरव्यू में कहा, मान लीजिए कि युद्ध हो और मुझे गोली मार दी जाए, तो मैं इसे सहने के लिए तैयार हूं।

जब आपको वास्तव में गोली मार दी जाती है, तो आपको परिणाम भुगतना पड़ता है। मेरी बेटी राबिया के जन्म से पहले अभिनय मेरा पहला प्यार था। मुझे अभिनय करना, अलग-अलग भूमिका निभाना पसंद था। मुझे उतने मौके नहीं मिले। मुझे विवादास्पद अभिनेत्री का टैग मिला। मुझे लगता है कि यह मेरी अपनी बेबाकी और साहसिक बयानों के कारण था। जब ऐसी छवि बने तो क्या करें? मैं कभी भी वह होने का दिखावा नहीं कर सकता जो मैं नहीं हूं। अगर मुझे वह काम नहीं मिलता जो मुझे करना पसंद है तो यह बहुत दुखद है। स्वरा ने ये राय जाहिर की है। स्वरा ने कहा, कई लोगों को मुझसे शिकायत है। मैं कई लोगों को पसंद या नापसंद कर सकती हूं।

बहुत से लोग मुझसे नफरत करते हैं, लेकिन मैं सबके साथ समान व्यवहार करती हूं। अगर मैंने समय-समय पर खुद को व्यक्त नहीं किया होता तो शायद मेरा दम घुट जाता। मैं कभी भी ऐसा होने का दिखावा नहीं करूंगी जो मैं वास्तविक जीवन में नहीं हूं। इसके बाद स्वरा ने कहा, खुलकर बोलना, अपने विचार व्यक्त करना मेरा फैसला है। पद्मावत में जौहर के सीन के बाद मुझे खुला पत्र लिखने की जरूरत नहीं पड़ी। मैं शांत नहीं बैठी क्योंकि यह मेरे स्वभाव में नहीं है। स्वरा फिल्म जहां चार यार में नजर आईं। फहद अहमद ने इस बारे में क्या कहा? जब उनसे इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने मुझसे कहा कि इस फिल्म में आपका रोल आपके स्वभाव के विपरीत है। आपको और अधिक काम करना चाहिए। अब आप कई चीजों पर चुप रहते हैं, ताकि अच्छा काम कर सकें। मैं उसकी बात सुनकर संतुष्ट हो गया। मैंने कभी अपने माता-पिता से भी यह दुख जाहिर नहीं किया कि फिल्म को उतनी कमाई नहीं मिली, जितनी मिलनी चाहिए थी।

VERMA PRESS
वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
Verma's® Today®
श्रृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi – B	₹ 140	Hindi – B	₹ 80
Hindi Vyakaran–II	₹ 120	Hindi Vyakaran–II	₹ 120
English Grammar – II	₹ 120	English Grammar – II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !